जुलाई (प्रथम) 2021 कीमत : 10.00 रु.

सरस सलिल

मनभावन अंदाज खरी आवाज Ⓜ

न्यूड वीडियो कालिंग से लुटते लोग

- 6 कहानियां
- करीबी रिश्ते और अपराध
- गरीबी पर भारी माहवारी
- खेल के अजीब रंग
- फिल्म कलाकारों पर तंज

VISIT…

Piramal

TETMOSOL®

नया

टेटमोसोल डस्टिंग पाउडर रोज़ लगाना, मतलब त्वचा के संक्रमण^ को दूर भगाना.

only books magazine

त्वचा के संक्रमण | घमोरियां | खुजली

से राहत दे

नज़दीकी मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध।

1800 22 9898 consumercare@piramal.com

^टेटमोसोल डस्टिंग पाउडर का उपयोग फंगल इन्फेक्शन के लिए किया जाता है। यदि संक्रमण तथा खुजली जारी है तो डॉक्टर की सलाह ले। इन्फेक्शन की संभावना बनी रहने तक डस्टिंग पाउडर लगाएं। परिणाम व्यक्तियों के बीच भिन्न हो सकते हैं। आवेदन और अन्य निर्देशों के लिए पैक देखें।

CMAC - TP/20210301-03

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

सुनो जी, जरा पार्क जाओ, थोडा शरीर को हिलाओ, ऐसे लेटे-लेटे न मुस्कुराओ। सिर्फ स्टोमाफिट के भरोसे ही रहोगे? अपच की जिम्मेदारी तो स्टोमाफिट संभाल लेगा, पर शरीर को थोडा हिलाना भी पडेगा।

ठीक है भाग्यवान चलते हैं फिर से थोडा संभलते हैं। स्टोमाफिट के रहते पेट की समस्या तो भूल ही गये थे, इसीलिए मजे से पलंग पर ही पडे थे।

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

only books magazine

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

जिस प्रकार बच्चों के भावनात्मक विकास की पूर्ति माता-पिता करते हैं। उसी प्रकार बच्चों में आयरन और फोलेट की कमी को हेमोकॉल दूर करता है। बढती उम्र में बच्चों को आयरन और फोलेट की जरूरत होती है जो उन्हें हेमोकॉल में मिलता है। साथ ही माता-पिता अपने भाग-दौड भरी जिंदगी में शरीर का ध्यान नहीं रख पाते। उनकी रोजाना की आयरन और फोलेट की जरूरतों का ध्यान हेमोकॉल रखता है।

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध(450ml)

300ML, 450ML

भूख न लगना, साधारण कमजोरी, बवासीर से एनीमिया, बच्चों में कमजोरी व थकावट, गर्भावस्था में खून की कमी, मासिक धर्म तथा कोविड-19 से आई कमजोरी को दूर करने में सहायक

हेमोकॉल खरीदने के लिए स्कैन करें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com

सभी प्रमुख ऑनलाईन फार्मेसीयों पर उपलब्ध

स्टोमाफिट खरीदने के लिए स्कैन करें

सरस सलिल
मनभावन अंदाज खरी आवाज
संस्थापक : विश्वनाथ (1917–2002)
जुलाई (प्रथम) 2021
अंक: 683
संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ
मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय: दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. *अन्य कार्यालय:* 503, नारायण चैम्बर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. जी-3, एचवीएस कोर्ट, 21, कनिंघम रोड, बेंगलुरु-560052. ए-4, श्रीगम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई-400031 (संपादकीय कार्यालय). बी-3, वडाला उद्योग भवन, 8, नरगांव क्रास रोड, वडाला, मुंबई-400031 (विज्ञापन कार्यालय). 16-ए, अमृता बनर्जी रोड (फर्स्ट फ्लोर), कालीघाट, नजदीक चाइल्ड क्लिनिक, कोलकाता-700026. 14, पहली मंजिल, सोसेस कांप्लेक्स, 150/82, चटोअप रोड, चेन्नई-600008. 122, पहली मंजिल, चित्तर ट्रेड सेंटर लेन, 116, पाठ रोड, सिकंदराबाद-500003. फ्लैट नं. बी-जी/3, 4 सफदरी, लखनऊ-226001. बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फीट रोड, अशोका गार्डन थाने के पीछे, भोपाल-462011. 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियान टावर्स, एग्जिबीशन रोड, पटना-800001. गीतांजली टावर, शाप नं. 114, पहली मंजिल, अजमेर रोड, जयपुर-302006. जी-7, फायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, कोच्चि-682031.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरस सलिल में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा पीएस पीसी प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित एवं ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली से प्रकाशित.

लेखकों से: छपने के लिए भेजी जाने वाली कहानी वगैरह के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा जरूर लगाएं वरना टीक न होने पर उसे लौटाया नहीं जाएगा. जो भी लिखें कागज के एक ओर साफसाफ शब्दों में लिखें. टाइप की कहानी ज्यादा पसंद की जाएगी. ई मेल इस प्रकार हैं—

1. रचनाओं व शब्दों के लिए ई मेल: article.hindi@delhipress.in
2. निर्माताओं व प्रेस सूचनाओं के लिए ई मेल: invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ई मेल: editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ई मेल: subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE
• Delhi Press Patra Prakashan Private Limited, New Delhi-110055, India.
No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission. THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE IN COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

सरस सलिल पाक्षिक पत्रिका की एक प्रति की कीमत 10 रु. एक साल के लिए 535 रु., 2 साल के लिए 1069 रु. (पैकेट/डाक से)

मुख्य विक्रय: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055
मुंबई : बी-3, वडाला उद्योग भवन, सूरंगम क्रास रोड, वडाला, मुंबई-400031 फोन नं.: 91-22-24122661/43473050

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें:
फोन नंबर : 91-11-41398888.
एक्सटेंशन नंबर : 119, 221, 264.
(सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सएप नंबर : 09588843408
Email ID : subscription@delhipress.in

वाह्री पेज

जनवरीफरवरी 2020 के दिल्ली के उत्तरपूर्व इलाके में हुए दंगों में बहुत से मुसलमानों को आज भी बेबात में बिना कोई गुनाह साबित हुए जेलों में बंद कर रखा है. दिखावे के लिए कुछ हिंदू नेता और उन के पिछलग्गू भी बंद हैं. नागरिक संशोधन कानून का विरोध कर रहे लोगों के घर जलाने से ले कर जिंदा जलाने तक के कांड इस मामले में हुए पर गुनाहगार मान कर पुलिस और अदालतों ने वहशी बने हिंदुओं को तो छोड़ दिया पर भीड़ का हिस्सा बने मुसलमानों को आज तक जेलों में बंद कर रखा है.

बड़ी मुश्किलों से एकएक कर के कुछ छूट पा रहे हैं और इन सब को बाहर निकल कर अदालत की जय बोलना पड़ता है क्योंकि सरकार तो उन्हें जिंदगीभर उदाहरण के तौर पर बंद ही रखना चाहती है. अब अदालतें कहने लगी हैं कि विरोध करने का हक सब को है पर विरोधी जब तक कोई अपराध न करें उन्हें गिरफ्तार नहीं करा जा सकता. जो छूटे हैं वे बरी नहीं हुए हैं, सिर्फ जमानत मिली है उन्हें क्योंकि मोटेतौर पर उन के खिलाफ कुछ खास सुबूत नहीं थे.

इसी ढील का फायदा वे चंद हिंदू पिछलग्गू भी उठाना चाहते हैं जो साफसाफ हत्या, आगजनी, तोड़फोड़ और लूट में शामिल थे. एक मामले में 3 अभियुक्त जो हिंदुत्व ह्वाट्सएप ग्रुप के हिस्से थे, कह रहे थे कि उन के खिलाफ कोई सीसीटीवी फुटेज नहीं है, सिर्फ गवाह हैं इसलिए उन्हें छोड़ दिया जाए. अदालत ने अभी बात नहीं मानी पर जल्दी या देर से पुलिस दबाव डालना छोड़ देगी.

सरकार के खिलाफ आंदोलनों को दबाने के लिए 2014 से पहले भी कानूनों का भरपूर दुरुपयोग किया गया है. जो सत्ता में होता है वह अपने विरोधियों पर ऐसेवैसे आरोप लगा कर उन्हें बंद करा देता है और फिर वे जज जो अपना कैरियर शुरू कर रहे होते हैं सरकार की सुनते हुए जमानत की अर्जियों को कूड़े की बालटी में फेंक देते हैं.

ब्रिटिश सरकार का बनाया गया क्रिमिनल प्रोसीजर कोड अपनेआप में अद्भुत कानून था जिस में पहली बार इस देश में शासन की लाठी ने पुलिस पर ही सैकड़ों बंदिशें लगाई थीं. उन दिनों मजिस्ट्रेट अंगरेज अफसर होते थे और वे समकक्ष पुलिस सुपरिंटैंडैंट या हिंदुस्तानी पुलिस अफसर की नहीं सुनते थे. जेलों की हालत जो भी हो, जमानत पाना आसान था.

आज स्थिति बिगड़ गई है. आज एफआईआर दर्ज होने का मतलब है कि जेल होगी ही. बहुत ही कम मामले ऐसे हैं जिन में पुलिस पहले ही दिन जमानत दे देने को राजी होती होगी. अगर वकील बड़ा सक्षम हो तो ही एफआईआर करने जाने के बाद जेल से बचा जा सकता है क्योंकि मजिस्ट्रेट बने युवा सरकार की निगाहों में कांटा नहीं बनना चाहते.

इस का एक उपाय यह है कि जमानत देने या न देने का अधिकार सब से छोटे मजिस्ट्रेट के हाथों से ले लिया जाए. यह अधिकार केवल हाईकोर्ट जजों के पास हो या फिर जमानत के फैसले रिटायर्ड हाईकोर्ट जजों की एक नई संस्था करे जो जिला स्तर पर नियुक्त हो और पहली अपील कोर्ट का काम करे.

यह मामले का फैसला नहीं करेगी. सिर्फ जमानत दी जाए या न दी जाए इतना फैसला करेगी, इस के पास बहुत मामले नहीं आएंगे. अगर पुलिस को अहसास होगा कि वास्तव में डेढ़ सी साल पुराना कानून लागू होगा तो वे ट्रायल मजिस्ट्रेट से ही जमानत दिला देंगे. पुलिस करप्शन को रोकने का यह एक अच्छा तरीका हो सकता है.

only bookmagazine

***

महाभारत में क्या हुआ था. कौरवों और पांडवों को पहले आपस में लड़वा दिया और फिर सब को मरवा दिया, कुरु वंश को ही समाप्त करा दिया. यह बात दूसरी है कि आज जब तर्क और तथ्य सब को उपलब्ध हैं, अधिकतर हिंदू महाभारत को विशेष धर्मयुद्ध समझते हैं जिस में कृष्ण ने हिचकिचाते अर्जुन को गीता का पाठ पढ़ा कर परस्पर विरोधी बातें कहते हुए उसे रणक्षेत्र में लड़ने को अंततः राजी कर ही लिया.

2019 के संसदीय चुनावों में ऐसा सा महाभारत भारतीय जनता पार्टी ने अपनी ही सहयोगी पार्टी जनता दल (यूनाइटेड) के साथ रचा जब लोक जनशक्ति पार्टी के चिराग पासवान को नीतीश कुमार के उम्मीदवारों के सामने खड़ा करवा कर नीतीश कुमार को कमजोर कर दिया और नीतीश कुमार अब भारतीय जनता पार्टी के मोहताज हैं.

22 जून को चिराग पासवान ने यह माना कि 2019 में उन्होंने जो भी किया वह भाजपा की रजामंदी से किया था. चिराग पासवान को यह रहस्य खोलना पड़ा क्योंकि जैसे पांडवों को हिमालय पर जा कर आत्महत्या करनी पड़ी थी, वैसे ही चिराग पासवान को करनी पड़ रही है क्योंकि उन के सांसद और विधायक छोड़ कर जा रहे हैं पर विपक्ष में नहीं, भारतीय जनता पार्टी या जनता दल (यू) में. चिराग को अनाथ कर के बड़ी चालबाजी से भारतीय जनता पार्टी ने दलित आंदोलन को बिहार में भी कुचल दिया और काफी बड़ी संख्या में होते हुए, वंचित होते हुए भी दलितों को अब किसी ऊंची जाति की जीहुजूरी में फिर से लगना पड़ेगा.

बातें बनाने में तेज और लच्छेदार लुभावने वादों के बलबूतें पर भाजपाई जैसे लोग सदियों से इस देश में राज करते आए हैं. राजनीतिक शासन किसी के हाथ में हो सामाजिक शासन हमेशा इन्हीं के हाथों में रहा है और जन्म से ले कर मृत्यु तक दलितों की तो छोड़िए, शूद्रों, वैश्यों और क्षत्रियों तक की लगाम इन्हीं लोगों के पास रही. आज थोड़ाबहुत पढ़लिख कर इन्हें गरूर होने लगा था कि हम भी कुछ हैं पर पहले रामविलास पासवान को दलबदलू नंबर एक बना डाला गया और अब उन के पुत्र चिराग पासवान को दलबदल की आग में स्वाहा कर दिया गया है.

चिराग पासवान अब चाहे जो भी कहते रहें, उन का राजनीतिक कैरियर समाप्त ही है. कोई करिश्मा ही उन का उद्धार कर सकता है. ●

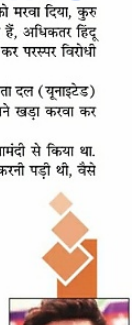

न्यूड वीडियो कालिंग से लुटते लोग

भारत भूषण श्रीवास्तव

मध्य प्रदेश में ग्वालियर की शिंदे की छावनी में रहने वाले 32 साला जयराज सिंह तोमर (बदला हुआ नाम) अपने ह्वाट्सएप पर मैसेज देख रहे थे कि तभी उन के पास एक अनजान फोन नंबर से वीडियो काल आया.

क्या पता किस का होगा, यह सोचते हुए उन्होंने काल रिसीव किया, तो स्क्रीन का नजारा देखते ही उन के एकदम से पसीने छूट गए.

मोबाइल फोन की स्क्रीन पर तकरीबन 20-22 साल की एक खूबसूरत लड़की मदमस्त अंदाज में अपनी दोनों छातियों को मसलते हुए जीभ लपलपा रही थी और उन की तरफ फ्लाइंग किस भी दे रही थी.

थोड़ी देर के लिए उस लड़की ने उभारों से अपने हाथ हटाए, तो जयराज सिंह तोमर पगला उठे. एक बार तो मन में आया कि हाथ बढ़ा कर स्क्रीन में ही उस सुंदरी को दबोच लें, लेकिन वह जिस अंदाज में आंधी की तरह आई थी, उस से भी बड़ा तूफान उन के दिलोदिमाग में मचा कर छू हो गई यानी उस ने फोन काट दिया.

यह सब कुल 20 सैकंड में हुआ. जयराज सिंह तोमर की कनपटियां तो इतने में ही गरम हो गई थीं और सांस धौंकनी की तरह चलने लगी थी.

लौकडाउन यानी फुरसत के दिन थे. उन की हार्डवेयर की दुकान बंद थी, लिहाजा दिन बड़ी मुश्किल से कट रहे थे. खाली समय में वे या तो यूट्यूब पर पोर्न साइटें खोज कर ब्लू फिल्में देख रहे थे या फिर नजदीकी दोस्तों की भेजी गई पोर्न फिल्मों के टुकड़े देख कर समय गुजार रहे थे.

कभीकभार तो अपने जोश में जयराज सिंह तोमर पत्नी के साथ हमबिस्तरी कर शांत हो लेते थे, लेकिन जाने क्यों ये फिल्में देख कर उन्हें सैक्स के नएनए तरीके आजमाने का मन करने लगा था, जिन में पत्नी को दिलचस्पी नहीं थी.

आज इस जवान और हसीन लड़की की मस्त अदाओं ने तो जयराज सिंह तोमर के दिल की धड़कनें बढ़ा दी थीं. बारबार वे अपने मोबाइल फोन की स्क्रीन और वह नंबर देख रहे थे मानो उस लड़की का वीडियो काल दोबारा आएगा और वह फिर से उन्हें जन्नत की मुफ्त सैर करवाएगी.

कौन हो सकती है वह लड़की और क्यों उस ने उन्हें काल किया? इन सवालों के जवाब खोजतेखोजते कुछ देर बाद उन्होंने कांपते हाथों से वह नंबर डायल किया और एक घंटी दे कर काट दिया.

कुछ सैकंड बाद ही उसी नंबर से मैसेज आया, जिस में लिखा था, 'और देखोगे बाबू?'

'हां...' जयराज सिंह तोमर ने बिना देरी किए जवाब भेज दिया.

'तो बाथरूम में जाओ और अपना अंग दिखाओ,' वहां से दोबारा मैसेज आया.

जयराज सिंह तोमर चाबी भरे खिलौने की तरह बाथरूम में तो चले गए, लेकिन अपने कपड़े उन्होंने नहीं उतारे. बाथरूम जाने की एक वजह यह भी थी कि वहां किसी के आ जाने का डर नहीं था.

फिर वीडियो काल आया और वही लड़की अपने उभारों को पहले की तरह ही मसलते, उछालते और दबाते दिखी, तो वे तो पगला उठे. लड़की कुछ बोल नहीं रही थी. एक बार वह अपना हाथ इस अंदाज में अंडरवियर तक ले गई मानो उसे भी उतार फेंकेगी.

दुनियाजहान भूलभाल कर जयराज सिंह तोमर नजरें गड़ाए उस के संगमरमरी बदन और अदाओं में खोए हुए थे कि फिर मैसेज आया, 'अपना दिखाओ...'

अब तक जयराज सिंह तोमर इतने जोश में आ चुके थे कि मैसेज न भी आता तो खुद कपड़े उतारने वाले थे, पर अब तो उन्हें यह ज्ञान भी हासिल हो गया था कि अगर लड़की से उस का अंडरवियर उतरवाना है, तो पहले खुद का उतारना पड़ेगा.

जब होश आया तो...

कोई 4 मिनट बाद काल बंद हो गया, तो जयराज सिंह तोमर भी कपड़े पहन कर बाहर आ गए. बिस्तर पर आ कर ऐसे गिरे जैसे मीलों दौड़ कर आए हों. कितना अच्छा हो अगर वह लड़की रोजरोज ऐसा ही करे, यह सोच ही रहे थे कि उसी नंबर से एक वीडियो आया.

उन्हें लगा कि उस लड़की ने एक और खास वीडियो उन के लिए भेजा है. लेकिन जैसे ही वीडियो चलाया तो उन के हाथों के तोते उड़ गए, क्योंकि वीडियो लड़की का नहीं, बल्कि उन्हीं का था जिस में वे बेकाबू होते अपने बाथरूम में हस्तमैथुन करते नजर आ रहे थे.

चंद सैकंड में ही दिमाग की बत्तियां जलीं, तो जयराज सिंह तोमर के हाथपैर कांपने लगे. लड़की की मंशा उन्हें समझ आ गई थी. आगे कुछ और सोचसमझ पाते, इस के पहले ही मैसेज आया, '2 घंटे के अंदर 5,000 रुपए हमारे खाते में डाल दो, नहीं तो यह वीडियो तुम्हारी पत्नी और तमाम रिश्तेदारों को भेज दिया जाएगा.'

मैसेज में ही बैंक एकाउंट के डिटेल्स दिए हुए थे. जयराज सिंह तोमर ने खूब सोचा और फिर भलाई इसी में समझी कि बदनामी और जगहंसाई से बचना है, तो बिना किसी चूंचपड़ के पैसे दे दिए जाएं यानी ब्लैकमेल हो जाया जाए.

पैसे ट्रांसफर करने से पहले हिम्मत जुटाते हुए उन्होंने लड़की के नंबर पर काल किया तो घंटी जाती रही. मैसेज किया तो वह डिलीवर ही नहीं हुआ. थकहार कर उन्होंने वौइस काल किया तो नंबर नौट रीचेबल आने लगा. ट्रूकौलर पर चैक किया, तो किसी पूनम रानी का नाम आया.

सोचनेसमझने के लिए अब कुछ

खास नहीं बचा था सिवा इस के कि 5,000 रुपए खाते में डाल दिए जाएं, नहीं तो इज्जत का पंचनामा बन जाएगा.

हालांकि मन में खटका यह भी आया कि अब तो वह लड़की कभी भी ब्लैकमेल करेगी, लेकिन हालफिलहाल 2 घंटे की मीआद से बचना जरूरी था, सो उन्होंने पैसे ट्रांसफर कर दिए और लुटेपिटे से बैठे अपनी बाथरूम वाली बेवकूफी को कोसते रहे, जो बहुत ज्यादा महंगी पड़ी थी.

एक ढूंढो मिलते हैं हजार

अच्छा तो यह रहा कि दोबारा उस कमबख्त पूनम रानी का मैसेज नहीं आया, जिस के बाबत जयराज सिंह तोमर सरीखे लोग हलकान हैं, क्योंकि उन से भी झांसे या सैक्सी नजारे देखने के लालच में वही गलती की थी, जो जयराज सिंह तोमर से हुई थी.

ऐसे लोगों की ठीकठाक तादाद तो शायद ही कोई बता पाए, लेकिन एक अंदाजे के मुताबिक यह हजारों में नहीं, बल्कि लाखों में हो सकती है. इस का अंदाजा अभी तक पकड़े गए ब्लैकमेलर्स के बयानों से भी लगता है, जो बाकायदा गिरोह बना कर काम करते हैं.

ऐसा ही एक गिरोह बीते दिनों भोपाल में पकड़ा गया था, जिस के सरगना थे पेशे से ठेकेदार यादराम और एमए में पढ़ रहा पुरुषोत्तम मीणा, जिन्हें यह काम वसीम नाम के एक दोस्त ने सिखाया था. इन दोनों ने सैकड़ों लोगों से लाखों रुपए की रकम उन के न्यूड वीडियो बना कर ऐंठी थी.

इन लोगों ने बताया था कि वे हर महीने साढ़े 5 लाख रुपए तक इस अनूठे धंधे से कमा रहे थे. ये लोग एक शिकार से 20,000 रुपए से ले कर 60,000 रुपए तक वसूलते थे. दिलचस्प बात यह कि एक बार जिस से पैसे ले लेते थे, उसे दोबारा तंग नहीं करते थे, जिस से कि वह शिकायत ले कर पुलिस में रिपोर्ट न लिखवाए.

वसीम को फिरोजपुर के झिरका से और पुरुषोत्तम और यादराम को राजस्थान के अलवर से गिरफ्तार किया था.

मई और जून के महीने में अकेले मुरैना में 72 लोगों को एक और गिरोह ने चूना लगाया था. आम तो आम खास लोग भी इन से या सैक्सी लड़कियों के नंगे बदन और अदाएं देखने की हसरत से खुद को बचा नहीं सके थे. इन के शिकारों में मुरैना का एक नामी नेता और कई बड़े बिजनैस में भी शामिल हैं.

मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले के कांग्रेसी विधायक नीरज दीक्षित को भी एक गिरोह ने ब्लैकमेल किया था.

ऐसे कितने गिरोह देशभर में ब्लैकमेलिंग की वारदात को अंजाम दे रहे हैं, इस की गिनती भी कोई नहीं कर सकता, क्योंकि बैठेबिठाए मुफ्त के इस धंधे से इन दिनों हर कोई चांदी काट रहा है.

ग्वालियर में ही एक कृषि अधिकारी और एक बड़े व्यापारी से ऐसे गिरोह ने लाखों रुपए झटके थे. पिछले साल सितंबर महीने में रायपुर में भी एक ऐसे गिरोह की शिकायत भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन यानी एनएसयूआई के छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष आकाश शर्मा ने की थी.

आकाश शर्मा ने इन के झांसे में न आ कर पुलिस में शिकायत कर दी थी. यह गिरोह उत्तर प्रदेश के नोएडा का था, जिस में किसी की गिरफ्तारी नहीं हो पाई थी. हां, ठगने की कोशिश जयराज सिंह तोमर की तर्ज पर की गई थी.

पुलिस की जांच में यह खुलासा हुआ था कि यह गिरोह सैकड़ों लोगों से लाखों रुपए वसूल चुका है, क्योंकि ज्यादातर लोग डर और बदनामी के चलते रिपोर्ट दर्ज नहीं कराते. पुलिस को शक है कि कुछ लोगों ने घबरा कर खुदकुशी भी कर ली.

उत्तर प्रदेश के ही झांसी से साइबर क्राइम पुलिस ने 14 जून को इंजीनियरिंग के 3 छात्रों अशफाक खान, जावेद खान और मोहम्मद शोएब को गिरफ्तार किया था.

इन की शिकायत अलीगढ़ मुसलिम यूनिवर्सिटी के एक सीनियर और इज्जतदार प्रोफैसर ने की थी, जिन से ये तीनों 3 लाख रुपए झटक चुके थे और फिर पैसों की मांग कर रहे थे. तंग आ कर प्रोफैसर साहब ने इन की शिकायत अलीगढ़ पुलिस को की थी.

पूछताछ में इन तीनों ने माना था कि वे उत्तर प्रदेश के अलावा राजस्थान और मध्य प्रदेश में कई लोगों को ब्लैकमेल कर चुके हैं.

ऐसे फंसते हैं लोग

जैसे ग्वालियर के जयराज सिंह तोमर और अलीगढ़ के प्रोफैसर साहब फंसे, वैसे ही लड़कियों की न्यूड वीडियो देखने के तमाम शौकीन फंसते हैं. जान कर हैरानी होती है कि इन गिरोहों में लड़कियां न के बराबर होती हैं.

दरअसल, गिरोह वाले मोबाइल फोन चालू होते ही पहले से रिकौर्ड वीडियो की क्लिप चला देते हैं. देखने वाले को लगता है कि वे लड़की को लाइव देख रहे हैं, इस से उन का जोश और बढ़ जाता है.

शिकार फांसने के लिए ये गिरोह सोशल मीडिया का सहारा लेते हैं, खासतौर से फेसबुक का जिस पर किसी खूबसूरत लड़की की फर्जी प्रोफाइल बना कर ये शिकार को फ्रैंड रिक्वैस्ट भेजते हैं

और धीरेधीरे सैक्सी बातें करना शुरू कर देते हैं.

सामने लड़का है या लड़की, यह शिकार को तब पता चलता है, जब वह पूरी तरह इन के जाल में फंस जाता है. फेसबुक पर ही ये शिकार का ह्वाट्सएप नंबर लेते हैं और फिर न्यूड वीडियो दिखा कर बाथरूम या अकेले में जाने के लिए उकसाते हैं. इस के बाद ये मैसेज के जरीए जैसा करने के लिए कहते हैं, शिकार वैसा ही करने लगता है, जिस की ये लोग रिकौर्डिंग कर लेते हैं.

नया हथकंडा है सैक्स्टौर्शन

जब लोग फंसने लगे, तो इन ब्लैकमेलर्स ने सैक्स्टौर्शन का हथकंडा भी अपनाना शुरू कर दिया. जैसा कि रायपुर के आकाश शर्मा के साथ करने की कोशिश की थी.

सैक्स्टौर्शन को आसान जबान में समझें, तो इस में वीडियो कालिंग के दौरान काल करने वाला काल उठाने वाले की रिकौर्डिंग कर लेता है. इस के बाद उस का चेहरा किसी मिलतीजुलती कदकाठी वाले शख्स के नंगे वीडियो में जोड़ दिया जाता है.

यह काम इतनी सफाई से किया जाता है कि शिकार खुद चकरा उठता है कि वीडियो में दिख रहा शख्स वही है. फिर यह वीडियो वायरल करने की धमकी दे कर उसे निचोड़ा जाता है. बदनामी के डर से शिकार इन्हें पैसे दे देता है.

सैक्स्टौर्शन का मकसद नंगे वीडियो दिखाना कम शिकार की रिकौर्डिंग करना ज्यादा होता है, जिस से बाद में इतमीनान से उस में हेरफेर और ऐडिटिंग कर पोर्न वीडियो की शक्ल में उसे तबदील कर लिया जाए.

इस टैक्निक को अमल में लाने वाले ज्यादातर गांवदेहात के तेज दिमाग वाले नौजवान होते हैं. इन्हीं लोगों ने हकीकत में कोरोना के लौकडाउन की आपदा को अवसर में बदलते खूब मौज की और धड़ल्ले से अभी भी कर रहे हैं.

ऐसे बचें इन चालबाजों से

यह तो बिना समझाए समझने वाली बात है कि न्यूड वीडियो कालिंग और सैक्स्टौर्शन से बचने का बड़ा कारगर तरीका अनजान नंबर से आए वीडियो काल को रिसीव नहीं करना चाहिए, जिस से न रहेगा बांस और न बजेगा आप का बैंड, लेकिन इस के अलावा भी ये एहतियात हमेशा बरतनी चाहिए, जिस से आप इन ब्लैकमेलर्स का शिकार न बनें :

- अपने फेसबुक एकाउंट पर किसी भी अनजान को न जोड़ें. उस की फ्रैंड रिक्वैस्ट रिजैक्ट कर दें.
- अपनी फेसबुक प्रोफाइल लौक कर के रखें. यह सहूलियत सैटिंग्स में जा कर आसानी से मिल जाती है.
- मोबाइल फोन पर कोई भी अनजान वीडियो काल अटैंड करते समय फ्रंट कैमरा बंद कर दें या अंधेरे में जा कर उठाएं.
- अपने जज्बातों और मुफ्त की नग्न होती लड़की को देखने की ख्वाहिश को काबू में रखते हुए बाद के नतीजों पर गौर कर लें.
- अपने घरपरिवार की जानकारी सोशल मीडिया पर साझा न करें.
- इस के बाद भी फंस ही जाएं, तो ब्लैकमेल होने के बजाय पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराएं, इस से ब्लैकमेलर्स के हौसले पस्त पड़ते हैं.

एक अंदाजे के मुताबिक, लौकडाउन के दौरान यह धंधा 500 फीसदी तक बढ़ा है और अभी भी लगातार बढ़ ही रहा है. इस की एक बड़ी वजह वे लोग भी हैं, जिन्होंने बजाय पुलिस में जाने के ब्लैकमेल होने का रास्ता चुना. ●

दहशत की देन कोरोना माता

शाहिद नकवी

जहां एक तरफ कोरोना ने पूरी दुनिया में तबाही मचा रखी है, वहीं उत्तर प्रदेश के प्रयागराज मंडल के प्रतापगढ़ जिले में कोरोना से कुछ लोगों की मौत के बाद गांव वाले इतना ज्यादा डर गए कि उन्होंने कोरोना माता का मंदिर ही बना लिया.

जानकारी के मुताबिक, शुकुलपुर जूही गांव में कोरोना वायरस से 3 लोगों की मौत हो गई थी. इस के बाद वहां के लोगों में दहशत फैल गई.

इस पर गांव के लोकेश श्रीवास्तव ने 7 जून, 2021 को कोरोना माता का मंदिर बनवाने का फैसला किया. इस के लिए उन्होंने औनर पर मूर्ति बनवाई और उसे गांव के एक चबूतरे के पास नीम के पेड़ के बगल में ही रखवा दिया.

इस के बाद कोरोना माता मंदिर में 2 समय होने वाली पूजा में भक्तों की भीड़ लगने लगी.

वहां लिखा था कि कृपया दर्शन से पहले मास्क लगाएं, हाथ धोएं, दूर से दर्शन करें. इतना ही नहीं, एक तरफ लिखा गया कि कृपया सैल्फी लेते समय मूर्ति को न छुएं, तो दूसरी तरफ लिखा था कि कृपया पीले रंग के ही फूल, फल, कपड़े, मिठाई, घंटा वगैरह चढ़ाएं. मंदिर पर दर्शन करने आ रहे लोग

'कोरोना माई की जय' बोल रहे थे.

जब इस मंदिर की जानकारी प्रशासन को हुई, तो उस के हाथपैर फूल गए. मामला अंधविश्वास से जुड़ा होने के चलते पुलिस ने इसे गिराने का फैसला किया. वह जेसीबी ले कर गांव पहुंची और कोरोना माता की मूर्ति व मंदिर समेत बोर्ड को भी जमींदोज कर दिया. प्रशासन ने सारा मलबा गांव से तकरीबन 5 किलोमीटर दूर फिंकवा दिया.

हैरानी की बात तो यह है कि अंधविश्वास के चलते तैयार किए गए इस मंदिर में दूरदराज के लोग भी पहुंच रहे थे. वे डाक्टरों से ज्यादा ऐसे मंदिर और कोरोना माता पर यकीन कर रहे थे, जो उन का कभी भला नहीं करेंगे.

इस तरह के अंधविश्वास नए नहीं हैं. भारत में जब भी कोई महामारी फैली है, लोगों ने उस महामारी के नाम पर देवीदेवता बना दिए, छोटी माता, बड़ी माता बीमारियों को देख कर ही बनाई गई थीं.

इस की सब से बड़ी वजह यह है कि ज्यादातर लोग पढ़ेलिखे नहीं हैं और सुनीसुनाई बातों पर बड़ी जल्दी यकीन कर लेते हैं. कहीं गणेश के दूध पीने की अफवाह फैल जाती है, तो लोग दूध खरीद कर उसे मूर्तियों पर बहा देते हैं, तो कहीं पीरफकीरों के मजार पर लोग बिना सोचेसमझे चढ़ावा चढ़ा देते हैं, ताकि वे बीमारियों से बच सकें. लोगों की यह सोच गलत है. ●

Dhanwantri
Divine-9

क्या आपके साथ ऐसा तो नही ?

★जल्दी-जल्दी जुकाम या गला खराब होता है ★शरीर में कमजोरी बनी रहती है या वजन घट रहा हो
★एलर्जी, बुखार और इन्फैक्शन शीघ्र होता हो ★जल्दी-जल्दी पेट खराब होता हो।

ये सभी रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी के कारण हो सकते हैं।

Divine-9™
ADAPTOGEN IMMUNOPOTENTIATOR

एक आयुर्वेदिक औषधि है और रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाने में सहायक है, सोचना आपको है कि रोगों से लड़ना है या रोगों से घिरे रहना है।

मिलिए मेरी बई फैमिली से जो रहे फिट हमेशा

2007 से ही अश्वगंधा, गिलोय व तुलसी औषधि Divine-9 में पहले से ही मौजूद है।

सन् 1921 से हमारे प्रसिद्ध अन्य उत्पाद सुन्दरी सुधा, स्वर्ण मधु, पाचन अमृत सुधा।

वितरक रहित क्षेत्रों में वितरक बनने हेतु सम्पर्क करें - 09258040152, 05921250052

निर्माता: धन्वंतरि फार्मास्युटिकल, काशीपुर (उत्तराखण्ड) मो० : 07618570252, 09412245652

बिहार–0612–2673987, झारखण्ड–9771390698, उ.प्र.–लखनऊ–9415768958, इलाहाबाद–9236011955, कानपुर–9839940626, आगरा–9412166680, अलीगढ़–9837843430, गोरखपुर–9336490742, बरेली–इमदाद हुसैन–9411079751, शाहजहांपुर–9450442978, मेरठ–9837270117, 0124135025, 9212711106, कोलकाता–09432485534, 07278940890, दिल्ली–9810366276, 9899161855, राजस्थान–9413381007, 9413381008, छत्तीसगढ़–9301315674, मध्य प्रदेश–उज्जैन–09826284858, इन्दौर–0731–2463274, 9098144825, भोपाल–09893257976, जबलपुर–09424686874, पंजाब–जालंधर–01679–231670, 501670, 9417331070, हरियाणा–फतेहाबाद–09812446363, रोहतक–09812341685, 09466278067, 08901387927, फरीदाबाद–01292417565

हेल्पलाइन नं. 9358256552

करीबी रिश्तों में बढ़ते अपराध

only bookstagram

शैलेंद्र सिंह

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के मोहनलालगंज इलाके में कुछ ही समय में आधा दर्जन ऐसी घटनाएं घटीं, जिन से करीबी रिश्तों में बढ़ रहे अपराध का पता चलता है.

वैसे, यह बात केवल एक जगह की नहीं है. समाज में हर जगह एक सा हाल है. अपराध की घटनाओं की पड़ताल करने पर यह सच उजागर हो जाता है.

प्रेमी संग मंगेतर की हत्या

शहाबुद्दीन की शादी हसमतुल निशा के साथ तय हुई थी. निशा लखनऊ पीजीआई अस्पताल के पास ही एकता नगर में रहती थी. वह अपने 2 भाइयों में सब से छोटी और लाड़ली भी थी.

शहाबुद्दीन भी अपने घर में सब से छोटा था. वह बंथरा में रहता था. दोनों के घर के बीच 35 किलोमीटर की दूरी थी. शहाबुद्दीन ट्रांसपोर्ट नगर में दुकान पर नौकरी करता था, जो दोनों के घरों के बीच थी.

हसमतुल निशा ने अपने घर वालों के कहने पर शहाबुद्दीन के साथ शादी के लिए हामी तो भर दी थी, पर वह अपने प्रेमी शाने अली को भूलने के लिए भी तैयार नहीं थी. ऐसे में जैसेजैसे शहाबुद्दीन के साथ शादी का दिन करीब आ रहा था, दोनों के बीच तनाव बढ़ रहा था.

हसमतुल निशा को लगता था कि वह शादी का दिखावा ही करेगी. बाकी वह मन से अपने प्रेमी शाने अली के साथ रहना चाहती थी.

शहाबुद्दीन के साथ हसमतुल निशा की सगाई होने के बाद उन दोनों के बीच बातचीत होने लगी. शहाबुद्दीन अकसर उसे फोन करने लगा और मिलने के लिए भी दबाव बनाने लगा.

यह बात हसमतुल निशा को अच्छी नहीं लग रही थी. शाने अली भी चाहता था कि हसमतुल निशा अपने होने वाले पति शहाबुद्दीन से मिलने न जाए, जब भी उसे यह पता चलता था कि दोनों की फोन पर बातचीत होती है और वह आपस में मिलते भी हैं, इस बात को ले कर हसमतुल निशा और शाने अली के बीच झगड़ा होता था.

उन दोनों के बीच लड़ाईझगड़े के बाद यह तय हुआ कि अब शहाबुद्दीन को रास्ते से हटाना ही होगा.

शहाबुद्दीन को अपनी होने वाली पत्नी और उस के प्रेमी के बारे में कुछ भी पता नहीं था. वह उन दोनों को आपस में रिश्तेदार समझता था और उन पर भरोसा भी करता था.

अपनी होने वाली पत्नी हसमतुल निशा को शादी के पहले वह अच्छी तरह से जाननेसमझने के लिए करीब आने की कोशिश कर रहा था. उसे वह नहीं पता था कि उस की यह कोशिश उसे मौत की तरफ ले जा सकती थी.

शहाबुद्दीन अपनी होने वाली पत्नी के साथ संबंधों को मधुर बनाने का काम कर रहा था, पर प्रेमी के मायाजाल में फंसी हसमतुल निशा खुद को उस से दूर करना चाहती थी. परिवार के दबाव में वह खुल कर बोल नहीं पा रही थी.

हसमतुल निशा ने अपने प्रेमी शाने अली के साथ मिल कर योजना बनाई. हसमतुल निशा चाहती थी कि शाने अली उस के मंगेतर शहाबुद्दीन को रास्ते से हटा दे. योजना को सही आकार देने के लिए शाने अली ने अपने जन्मदिन पर 11 मार्च, 2021 को शहाबुद्दीन को मिलने के लिए बुलाया.

गुरुवार की रात तकरीबन साढ़े 8 बजे शाने अली और उस के दोस्त बाराबंकी निवासी अरकान, मोहनलालगंज निवासी संजू गौतम, अमन कश्यप और पीजीआई निवासी समीर मोहम्मद बाबूखेड़ा में जमा हुए. जैसे ही शहाबुद्दीन वहां पहुंचा, शाने अली और उन के दोस्तों ने उस पर चाकू से तावड़तोड़ हमला कर दिया.

कई वार होने के बाद भी शहाबुद्दीन ने हार नहीं मानी और अपनी जान बचाने के लिए वह हमलावरों से भिड़ गया.

शहाबुद्दीन की हत्या के आरोपी

शाने अली और उस के हमलावर दोस्तों को जब लगा कि शहाबुद्दीन बच निकलेगा तो उन लोगों ने कुत्ते को बांधी जाने वाली जंजीर से शहाबुद्दीन का गला घोंट दिया, जिस से वह अपना बचाव नहीं कर पाया और मर गया.

बाद में हसमतुल निशा ने पुलिस को बताया कि उस ने अपने प्रेमी शाने अली के साथ मिल कर मंगेतर शहाबुद्दीन की हत्या कर दी.

चौथे पति का बेरहमी से कत्ल

लखनऊ के नगराम थाने के महगुआ गांव की रहने वाली ज्ञानवती ने अवधेश के साथ चौथी शादी की थी.

ज्ञानवती की पहली शादी 20 साल की उम्र में नगराम के रहने वाले दिलीप से हुई थी. शादी के कुछ दिन बाद ही उन दोनों के बीच अनबन शुरू हो गई.

दिलीप को केवल ज्ञानवती की याद तब ही आती थी, जब उसे उस का जिस्म चाहिए होता था. पतिपत्नी के रिश्ते में जिस्मानी संबंधों के साथ जिम्मेदारी भरा अहसास भी होता है. ज्ञानवती को कभी यह नहीं लगा कि दिलीप उस के साथ ऐसे संबंधों को निभा पाएगा.

अच्छी बात यह थी कि ज्ञानवती के समाज में तलाक लेने में कोई दिक्कत नहीं आती थी. पंचायत के फैसलों पर ही तलाक हो जाता था. शादी के कुछ साल बाद ज्ञानवती और दिलीप अलग हो गए.

ज्ञानवती की दूसरी शादी चौराहपुर के श्यामलाल के साथ हुई. श्यामलाल से उस के एक बच्चा भी हो गया, जिस का नाम सूरज रखा गया था.

सूरज के आने के बाद भी ज्ञानवती की जिंदगी में बहुत दिनों तक उजाला नहीं रह सका. जिस तरह से दिलीप के साथ ज्ञानवती का मनमुटाव शुरू हुआ था, उसी तरह से श्यामलाल के साथ भी होने लगा.

मनमुटाव झगड़े में बदला और ज्ञानवती ने अलग रहने का फैसला कर लिया. श्यामलाल ने भी कह दिया कि बेटा सूरज उस के साथ ही रहेगा.

इस के बाद भी ज्ञानवती ने अपना फैसला नहीं बदला. अब वह फिर से अपनी शादीशुदा जिंदगी बसाने के लिए कोशिश करने लगी.

इस बार ज्ञानवती ने सुखलाल खेड़ा नवी नगर निवासी सुनील रावत के साथ तीसरी शादी कर ली.

ज्ञानवती ने अब सोच लिया था कि सुनील ही उस की जिंदगी को सुखमय बनाएगा. पहले की दोनों शादियों के मुकाबले ज्ञानवती की तीसरी शादी उसे अच्छी लग रही थी.

यूनाईटेड®

प्रेशर कुकर

देश के कुकर में ही आता है देश के खाने का स्वाद...

United Metalik Private Limited

Visit Our Website: www.unitedgrouponline.com

सुनील का स्वभाव भी बहुत अच्छा था. ज्ञानवती के साथ उस का समय अच्छा गुजर रहा था. दोनों के 2 बच्चे राम और नरेश पैदा हुए. बच्चों के होने के बाद सुनील और ज्ञानवती के बीच संबंध पहले जैसे मधुर नहीं रहे थे. अब दोनों के बीच टकराव होने लगा था.

ज्ञानवती ने झुकना नहीं सीखा था और सुनील से अलग रास्ता उस ने बना लिया. अब उस ने मंहगुआ गांव के रहने वाले अवधेश से अपनी चौथी शादी कर ली. 14 साल में चौथी शादी करने के बाद भी ज्ञानवती को संतोष नहीं हो रहा था.

ज्ञानवती का स्वभाव विद्रोही होने लगता था. अवधेश जब भी नशा कर के आता था. इस वजह से ज्ञानवती की उस से लड़ाई होने लगती थी. ज्ञानवती और अवधेश के बीच संबंध एक साल के अंदर फिर से हाशिए पर पहुंच गए थे.

पहले 3 पतियों को छोड़ कर शादी करने वाली ज्ञानवती ने चौथे पति को रास्ते से हटाने के लिए उस की हत्या ही कर दी.

ज्ञानवती ने पुलिस को बताया, "अवधेश मेरे चौथे पति थे. मैं ने सोचा था कि चौथी शादी के बाद मैं सुकून और शांति के साथ रह सकूंगी. अवधेश ने भी मुझ से यही वादा किया था.

"पर शादी के कुछ ही दिनों के बाद हमारे बीच लड़ाईझगड़ा शुरू हो गया. तब मैं इस रिश्ते से भी छुटकारा पाने की सोचने लगी. 24 मई को इच्छाखेड़ा में मेरे रिश्तेदार के यहां शादी थी. वहीं मेरे दोनों लड़के गए थे. घर में मैं और अवधेश ही थे.

"अवधेश कहीं गए थे. वहां से नशा कर के जब वे वापस घर आए तो पीने के लिए पानी मांगा. मुझे लगा कि यही सही मौका है. मैं ने सिंघाड़ा बोने में काम आने वाली कीटनाशक दवा पानी में मिला दी. इस के बाद मुझे डर लगने लगा कि वे यहीं मर जाएंगे तो मैं फंस जाऊंगी.

"इस के बाद डंडे से सिर पर वार कर दिया और लकड़ी की 2 फट्टी गले के दोनों तरफ रख कर दबा दिया. जब वे बेहोश हो गए, तो खींच कर

चारपाई से नीचे गिरा दिया.

"ब्लेड से शरीर के कई हिस्सों हाथ और सीने पर पचासों निशान बना दिए. आंख की पलक भी काट दी और पूरे शरीर पर मिट्टी लगा दी, जिस से यह लगे कि कहीं और से मारपीट कर के यहां डाल दिया गया है."

प्रेमी से कराई अपने घर चोरी

रसूलपुर आशिक अली थाना गोसाईंगंज जिला लखनऊ के रहने वाले मनोज कुमार की 19 साल की बेटी खुशबू कुमारी का पुरवा मलौली थाना गोसाईंगंज के रहने वाले विनय यादव के साथ प्रेम हो गया. विनय खुशबू को बेहद प्यार करता था. दोनों के बीच जातपांत की गहरी खाई थी.

दोनों ही परिवारों को इन की दोस्ती पसंद नहीं थी. इस के बाद भी विनय और खुशबू अपनी दोस्ती को छोड़ना नहीं चाहते थे. लेकिन परेशानी यह थी कि उन को साथ रहने का रास्ता नहीं दिख रहा था.

अच्छी बात यह थी कि विनय और खुशबू के बीच एक तालमेल बना हुआ था. दोनों ही अपने विचारों का आदानप्रदान कर लेते थे. दोनों ने सोचा था कि विनय नौकरी करेगा, तो फिर वे दोनों शहर में अपना अलग घर ले कर रहेंगे.

कोरोना काल में लौकडाउन के चलते जिस तरह से कामधंधों पर रोक लगी, उस से विनय और खुशबू जैसे नौजवानों के सामने भी अपने भविष्य को ले कर सवालिया निशान लगा दिया. बेरोजगारी ने आगे के सभी रास्ते बंद कर दिए. यह उम्मीद थी कि 3 महीने के बाद जब लौकडाउन खुलेगा, तो सबकुछ वापस पटरी पर आ जाएगा. इस के बाद भी कोई कामधंधा नहीं बढ़ा.

मार्च, 2021 में जब कोरोना का संकट फिर से बढ़ा, तो विनय को जो कामधंधा मिल जाता था, वह भी बंद हो गया. ऐसे में खुशबू ने योजना बनाई कि विनय उस के घर में रखे रुपए चोरी कर ले.

खुशबू को उस के घर वाले भी मानसिक रूप से इतना परेशान करते थे कि वह किसी भी तरह से अपने घर में रहने को तैयार नहीं थी. अपने घर में चोरी की योजना बनाते समय उसे किसी भी तरह का डर नहीं हुआ.

इधर विनय ने अपने साथी अपने ही गांव के रहने वाले शुभम यादव को भी इस योजना में जोड़ लिया. खुशबू के साथ योजना बनाते समय विनय ने उसे नींद की 8 गोली दी और कहा कि 4-4 गोली काढ़े में डाल कर रात में अपने मम्मी और पापा को पिला देना, जिस से वे रातभर आराम से सोते रहेंगे.

खुशबू ने 28 मई की रात ऐसा ही किया. जब मांबाप दोनों गहरी नींद में सो गए, तो विनय और शुभम ने खुशबू के साथ मिल कर उस के घर से 13 लाख रुपए नकद और 3 लाख रुपए के जेवर चोरी कर लिए.

खुशबू के पिता मनोज कुमार ने थाना गोसाईंगंज में चोरी का मुकदमा लिखाया. पुलिस ने खुशबू, विनय और उस के दोस्तों को जेल भेज दिया.

अशिक्षा और गरीबी

निगोहां गांव के रहने वाले राधेश्याम के बेटे संदीप की दिमागी हालत खराब हो गई थी. तंग आ कर राधेश्याम ने उसे घर के पास के बिजली के खंभे से जंजीर से जकड़ कर बांध दिया.

जब यह बात समाजसेवियों को पता चली, तो उन्होंने विरोध किया और तब निगोहां इंस्पैक्टर नंदकिशोर ने जंजीर में जकड़े संदीप को खुलवा कर चचेरे भाई संजय को देखभाल के लिए सौंप दिया.

मोहनलालगंज थाना क्षेत्र में ही एक बेटे ने 3 बिस्वा जमीन के लिए अपनी मां की हत्या कर दी और लाश को मोहनलालगंज तहसील के पीछे फेंक दिया. ऐसी घटनाओं के पीछे मूल वजह अशिक्षा, गरीबी और बेरोजगारी है.

पुलिस अफसर पूर्णेंदु सिंह कहते हैं, "गरीबी, अशिक्षा और बेरोजगारी के साथसाथ लोगों में सहनशीलता और संस्कार खत्म हो गए हैं. इस की वजह से बेटा अपनी बूढ़ी मां की हत्या कर दे रहा है.

"हत्याओं के पीछे निजी संबंधों का हाथ सब से ज्यादा पाया जा रहा है. चाहे वह करीबी संबंधी हो या करीबी दोस्त हो. पैसों का लालच इस कदर है कि लोग अपराध में हिस्सा ले लेते हैं. उस समय वे उस के अंजाम की बात भी नहीं सोचते हैं."

नशे और संगत का असर

लंबे समय से पत्रकारिता और समाजसेवा में लगे अखिलेश द्विवेदी कहते हैं, "बड़ी घटनाएं तो प्रकाश में आ जाती हैं, पर छोटीछोटी घटनाओं पर चर्चा कम होती है. अगर सभी आपराधिक घटनाओं को मिला कर देखें, तो पता चलता है कि अपराध करने वाले नशे का शिकार होते हैं, जिस की वजह से वे सहीगलत का फैसला नहीं कर पाते हैं और आपराधिक घटनाओं में शामिल हो जाते हैं.

"वे एक बार छोटे अपराध करते हैं, फिर बड़ेबड़े अपराध करने से भी पीछे नहीं हटते. नौजवान तबका ऐसे लोगों के निशाने पर होता है, जो अपने गलत कामों के लिए उस का इस्तेमाल करने की कोशिश में रहते हैं."

इस सिलसिले में पत्रकार अनुपम मिश्र कहते हैं, "नौजवान तबके में संबंधों के प्रति सहनशीलता खत्म हो रही है. इस वजह से वे अपराध करने के पहले किसी भी तरह से सोचविचार नहीं कर रहे. सब से खतरनाक बात यह है कि महिलाएं भी अपराध करने से पीछे नहीं रह रही हैं. ये घटनाएं समाज के लिए बड़ी चुनौती बनती जा रही हैं.

"अब समाज को इस से बचने का उपाय देखना होगा. कानून की भूमिका भी अहम है. अपराधों में जल्दी सुनवाई और सजा का मिलना शुरू हो जाए, तो अपराध करने से लोग डरेंगे. साथ ही साथ समाज में इस के प्रति जागरूकता भी बढ़ानी होगी." ●

only bookstan magazine

राधेश्याम त्रिपाठी

शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश के जितिन प्रसाद का कांग्रेस छोड़ कर भारतीय जनता पार्टी में शामिल होना यकीनन कांग्रेस के लिए एक झटका है. इस बात में कोई दोराय नहीं है, लेकिन यह प्रचारित करना कि कांग्रेस में उन की अनदेखी हो रही थी, समझ से परे है.

जितिन प्रसाद कांग्रेस के दिग्गज नेता रहे शाहजहांपुर के जितेंद्र प्रसाद उर्फ 'बाबा साहब' के बेटे और ज्योति प्रसाद जैसी शख्सीयत के पोते हैं.

जितिन प्रसाद साल 2004 में शाहजहांपुर क्षेत्र से लोकसभा का चुनाव जीते थे और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार में उन्हें इस्पात मंत्री का कार्यभार भी सौंपा गया था.

साल 2009 में लखीमपुर की धौरहरा लोकसभा सीट से जितिन प्रसाद को उम्मीदवार बनाया गया था और उन्होंने फिर से जीत दर्ज की थी. तब उन्हें पैट्रोलियम व प्राकृतिक गैस, सड़क परिवहन और राजमार्ग व मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री बनाया गया था.

साल 2014 के लोकसभा चुनाव में जितिन प्रसाद धौरहरा क्षेत्र से हार गए थे. लिहाजा, साल 2017 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने लखीमपुर के मोहम्मदी विधानसभा क्षेत्र से उम्मीदवार बनना चाहा था, लेकिन बरबर नगर पंचायत के चेयरमैन संजय शर्मा को यहां से उम्मीदवार बनाया जा चुका था.

संजय शर्मा मोहम्मदी क्षेत्र के कांग्रेस विधायक और नगर पंचायत बरबर के चेयरमैन रहते आए राम भजन शर्मा के बेटे थे.

संजय शर्मा की उम्मीदवारी घोषित होने के बाद ही जितिन प्रसाद ने बगावत का झंडा उठाया था और भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने के लिए काफिले समेत लखनऊशाहजहांपुर मार्ग पर महोली तक पहुंच भी गए थे, पर कहा जाता है कि महोली पहुंचते ही प्रियंका गांधी वाड्रा ने उन से फोन पर बात की और वे वापस लौट आए थे.

वापसी पर जितिन प्रसाद को उन के गृह जनपद या यों कहें 'बाबा साहब' के गढ़ जनपद शाहजहांपुर के निकट तिलहर विधानसभा से कांग्रेस का उम्मीदवार घोषित किया गया था.

गृह जनपद और प्रभावशाली नेतृत्व के वजूद के साथ 2-2 बार केंद्र में मंत्रिमंडल में सम्मिलित रहने वाले जितिन प्रसाद विधानसभा चुनाव में बुरी तरह से हारे थे.

इस हार को वैसे तो भाजपा की लहर में डूबने की हालत मानी जाती है, लेकिन जितिन प्रसाद जैसे नेता के लिए अपने गढ़ में ही बुरी तरह हारना बहुत ही शर्मनाक बात कही जा सकती है.

साल 2019 में भी जितिन प्रसाद को लोकसभा धौरहरा से उम्मीदवार बनाया गया था, लेकिन उस में भी उन का स्थान सम्मानजनक तक नहीं रहा था.

कुछ भी हो, जितिन प्रसाद के पार्टी छोड़ने व भाजपा में सम्मिलित होने को कांग्रेस के लिए अच्छा नहीं माना जा सकता, लेकिन जिस तौरतरीके के लिए कांग्रेस की लानतमलामत की जा रही है, वह कांग्रेस पर लागू नहीं होता.

साल 2004 में शाहजहांपुर से व साल 2009 में धौरहरा लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस के उम्मीदवार के तौर पर जीतना जितिन प्रसाद का कोई करिश्मा भी नहीं माना जा सकता. करिश्मा तो तब माना जाता, जब वे साल 2017 में अपने गृह जनपद के तिलहर विधानसभा क्षेत्र से ही विधायक बन कर दिखाते.

साल 2014 और साल 2019 के लोकसभा चुनाव में भी जितिन प्रसाद को धौरहरा से उम्मीदवार बनाया गया था और उन का हार जाना कोई अप्रत्याशित नहीं माना जा सकता, लेकिन तिलहर विधानसभा चुनाव में हार जाना जितिन प्रसाद की कदकाठी के मुताबिक नहीं था. साल 2014 व 2019 के लोकसभा चुनाव या 2017 के विधानसभा चुनाव में तो कांग्रेस भी हारी थी, कांग्रेस की झोली में तब क्या था?

युवा जितिन प्रसाद जैसा 'महान' नेता, जो 2 बार केंद्रीय मंत्रिमंडल में रहा हो, अपने गढ़ तिलहर से हार कर निचली पायदान पर पहुंचा हो, उसे कांग्रेस दे ही क्या सकती थी?

भले ही कांग्रेस की गलतियां रही होंगी, लेकिन कांग्रेस कर भी क्या सकती थी, उस इनसान के लिए, जिस के सिर पर 2004 व 2009 में केंद्रीय मंत्रिमंडल में जगह दे कर मंत्री पद का ताज रखा गया और वह मोहम्मदी क्षेत्र से विधानसभा टिकट संजय शर्मा को मिल जाने के गम में कांग्रेस छोड़ कर साल 2017 में ही भाजपा में जाने के लिए धूमधाम से घोषणा कर के पलायन कर रहा था.

निश्चित ब्राह्मण होने के नाते जितिन प्रसाद को पार्टी में अहम जगह दी जा सकती थी, लेकिन प्रमोद तिवारी वगैरह जैसे कई ब्राह्मण नेताओं ने भले ही केंद्र में मंत्रिमंडल में जगह न पाई हो, लेकिन उन की हालत व जन महत्त्व तो इसी से साबित होता है कि वे लगातार 7 बार अपने क्षेत्र से विधायक चुने जाते रहे और खुद राज्यसभा सदस्य बन जाने के बाद जब साल 2017 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के 7 विधायक ही जीत सके थे, तब भी प्रमोद तिवारी की बेटी मोना उस चुनाव में विधायक बन कर विधानसभा में नेता कांग्रेस हैं.

भले ही अजय कुमार लल्लू को विधानसभा में कांग्रेस के नेता पद से प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नियुक्त कर दिया हो, यह पार्टीगत नीति और सोच रही हो, लेकिन 2 बार कांग्रेस सांसद रह कर केंद्रीय मंत्रिमंडल में जगह पाने के बाद भी विधानसभा चुनाव हार जाने वाले नेता जितिन प्रसाद को क्या अहमियत दी जा सकती थी, समझ से परे है. उन्हें ब्राह्मणों को प्रदेश में एकत्र करने, संगठित करने की जिम्मेदारी दी गई, लेकिन क्या हो सका है अभी तक वे क्या कर सके?

यह तय है कि 2 बार केंद्रीय मंत्रिमंडल में रहने वाला आदमी बड़ा नेता होना चाहिए, बड़ी जिम्मेदारी मिलनी चाहिए, लेकिन कौन सी सीट पर विधानसभा में कौन सी जिम्मेदारी दे दी जाती, विधानपरिषद या राज्यसभा में किस क्षेत्र से भेजा जा सकता था और कांग्रेस की औकात भी थी भेजने की? और यह औकात तो तब बनती, जब ऐसे लोग अपनेअपने गृह क्षेत्र तक से विधानसभा चुनाव जीतने की हैसियत में होते.

कांग्रेस की वर्तमान हालत न तो सोनिया गांधी की वजह से है और न ही इस के लिए राहुल गांधी जिम्मेदार हैं. आखिर एक आदमी कितने दिनों तक अकेले रेत में खड़ी नाव पर सवार 'जोर लगा कर हईशा' भी नहीं कह सकते, चिल्लाना नहीं चाहते, तो न तो नाव रेत से निकलेगी और न ही नदी के उस पार जा पाएगी. एक अकेला कब तक मुरदा लाशों को ढो कर उन के सिर पर ताज पहनाने का काम करता रह सकता है. यही वजह है कि राहुल गांधी अपने साथियों से हताशनिराश हो कर नाव की पतवार संभालने की इच्छा ही नहीं रख पा रहे हैं.

'राहुल सक्रिय नहीं हैं' का जुमला उछालने वाले कितने सक्रिय हैं, यह उन्हें खुद सोचना चाहिए और नाव की सवारी कर रहे 'जोर लगा कर हईशा' तक न कर पाने वाले स्वार्थ के लिए उस दल को छोड़ कर भागे, जिस ने उन को राजनीति में आने के साथ ही 2 बार सांसद ही नहीं, बल्कि केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल होने का सुख दिया, केवल मोहम्मदी विधानसभा क्षेत्र से किसी दूसरे को उम्मीदवार बना देने के चलते जिस ने अपना काफिला भाजपा की ओर बढ़ा दिया और तिलहर से टिकट दिए जाने के बावजूद चुरी तरह से हारा.

अच्छा है कि अब जितिन प्रसाद भाजपा में करिश्मा दिखाएं, लेकिन जलती आग तापने वाले अपनी भी गतिविधियों का आकलन करते तो अच्छा होता. ●

पापी पेट का सवाल है

नीरज कुमार मिश्रा

शहर में बहुमंजिला इमारत का काम जोरों पर था. ठेकेदार आज ही एक ट्रक में ढेर सारे मजदूर ले कर आया था. सभी मजदूर भेड़बकरियों की तरह ठूंस कर लाए गए थे और आते ही ठेकेदार ने मजदूरों को काम पर लगा दिया था.

इन मजदूरों में 60 फीसदी औरतें और लड़कियां थीं, जो ज्यादातर दलित परिवारों की थीं. सारे गरीब थे, उन की गांव में जमीन नहीं थी और ज्यादातर मजदूर आपस में एकदूसरे के रिश्तेदार भी थे.

मजदूर औरतें इतनी गरमी में भी खुद को साड़ी और एक लंबे कपड़े से लपेटे हुए थीं. साइट का ठेकेदार, मुंशी और इंजीनियर ललचाई आंखों से इन औरतों के मांसल अंगों का जायजा ले रहे थे. उन्हें किसी न किसी बहाने छूने की कोशिश कर रहे थे. कभी काम समझाने के बहाने से तो कभी कुहनी के वार से, तो कुछ कहने के बहाने और ज्यादातर मौकों पर वे कामयाब भी हो रहे थे.

हमारे देश में मजदूर औरतों को मर्दों के बजाय दोहरा शोषण झेलना पड़ता है. एक तो औरत होने के नाते इन्हें मर्द मजदूरों से कम तनख्वाह मिलती है, जबकि इन दोनों से ही बराबर का सा काम लिया जाता है और दूसरा इन मजदूर औरतों का यौन शोषण भी खूब होता है.

कानूनन इन मजदूर औरतों से सिर्फ 8 घंटे ही काम लिया जाना चाहिए, पर ठेकेदार इन से 12-12 घंटे काम लेते हैं.

इन मजदूर औरतों को सब से तुच्छ और सस्ती चीज के रूप में देखा जाता है और फिर भी इन की कमी नहीं होती, बल्कि इन की तादाद में बढ़ोतरी ही होती दिखती है, जिस की ये वजहें हैं :

- लगातार बढ़ती आबादी.
- ठेकेदार का फायदा.
- अनपढ़ होना.
- मजदूर मातापिता द्वारा अपने बच्चों की अनदेखी.

एक कारखाने की साइट पर काम कर रही एक मजदूर औरत फुजला (बदला हुआ नाम) बताती है कि उसे सुबह 8 बजे अपनी साइट पर पहुंच कर काम शुरू करना होता है और इस के लिए उसे हर हाल में सुबह 5 बजे जागना पड़ता है, ताकि वह अपने परिवार के लिए खाना बना कर रख सके. पर यहां पर मजदूर औरतों के लिए अलग से न ही शौचालय का इंतजाम है और न ही नहाने के लिए अलग से कोई बाथरूम वगैरह.

फुजला आगे बताती है, "जब मैं सुबहसुबह खुले आसमान के नीचे नहाती थी, तब एक दिन मुझे महसूस हुआ कि कोई छिप कर देख रहा है और एक दिन जब मैं ने नहाते समय अपने पति से बाहर की तरफ ध्यान देने को कहा, तो उन्होंने पाया कि कारखाने में काम करने वाले कुछ लोग न केवल मुझे घूर रहे थे, बल्कि अपने मोबाइल फोन में मेरा वीडियो भी बना रहे थे."

फुजला के पति के विरोध करने पर उन लोगों ने उसे बहुत मारा और वीडियो को इंटरनैट पर डाल देने की धमकी दे कर चले गए. बाद में साइट के मुंशी ने उस वीडियो के बदले में कुछ लोगों के साथ अपनी इज्जत का सौदा करने की शर्त पर ही उस वीडियो को डिलीट करने की बात कही.

कुछ इसी तरह की बात बताते समय सुनीता नाम की एक मजदूर औरत की आंखों में आंसू आ गए. उस ने बताया, "काम करने के दौरान ही ठेकेदर मेरे साथ छेड़खानी करता है और सैक्स संबंध बनाने की भी कोशिश करता है. विरोध करने पर मुझे और मेरे परिवार को नौकरी से निकाल देने की धमकी देता है."

बेचारी सुनीता को पापी पेट की खातिर यह सब सहना पड़ता है.

हद तो जब हो जाती है जब औरत मजदूरों को काम के दौरान अपने दुधमुंहे बच्चों को दूध तक पिलाने की छूट नहीं होती है और अगर कोई औरत अपने बच्चे को दूध पिलाती है तो उतना समय वह शाम को ज्यादा काम करेगी, तभी उस की छुट्टी हो सकेगी.

भूख, गरीबी, बेरोजगारी से तो लड़ लेती हैं ये मजदूर औरतें, पर इन छिछोरों की गिद्ध जैसी नजरों से बचना एक बहुत बड़ी चुनौती होती है. कारखानों में काम करने वाली औरत मजदूरों के लिए तो परेशानी और भी बढ़ जाती है, क्योंकि इन्हें ठेकेदार और मुंशी के अलावा कारखाने के ही लोगों से खतरा होता है.

मजदूर औरतें इस सब का विरोध क्यों नहीं करती हैं या इन लोगों को ऐसा करने से क्यों नहीं रोकती हैं? ऐसा पूछे जाने पर मीरा देवी बताती है, "उस से क्या होगा साहब... कायदाकानून तो सिर्फ ऊंची जगह पर बैठे लोगों के लिए है... हम लोग तो करम में ही मजदूरी करना लिखवा कर लाए हैं... मजदूर ही पैदा हुए हैं और मजदूरी में ही मर जाएंगे.

"मैं ने अपने साथ शोषण करने वाले लोगों के खिलाफ आवाज उठाई भी थी, पर बदले में उन लोगों ने मेरे पति को बहुत मारा और हमें काम से निकाल दिया. बकाया पैसा भी नहीं दिया... इसलिए अब हम चुप ही रहते हैं... नाईसाफी सहो और काम करो.

"कभी अगर बच्चा बीमार हो जाए तो भी ये लोग पैसा देने में आनाकानी करते हैं और हम लोगों का एक महीने का पैसा दबा कर रखते हैं, ताकि कहीं हम काम छोड़ कर जा न सकें."

मजदूर औरतों की समस्याएं सुन कर किसी का भी मन पसीज सकता है, पर इन मोटे पैसों में खेल रहे ठेकेदारों और मुंशियों का ही दिल नहीं पसीजता है और इन मजदूरों ने भी शायद हालात के साथ समझौता ही कर लिया है, क्योंकि कुछ कहावतें हमेशा ही अपने को सच साबित करती हैं जैसे 'मरता क्या न करता' और 'पापी पेट का सवाल है'.

भले ही आज चांद पर जमीन बिकने लगी हो, पर एक कड़वी सचाई यह भी है कि हमारे देश की मजदूर औरतें कल भी पीड़ित थीं, आज भी पीड़ित हैं और आगे भी उन की मुश्किलों का कोई खात्मा होता नहीं दिखता. ●

शिक्षा की कमी से होती है परदा प्रथा

- संयोगिता सिंह चौहान

ग्राम प्रधान, अटारी गांव, लखनऊ

उत्तर प्रदेश में लखनऊ जिले के माल ब्लॉक के अटारी गांव में 2,500 की आबादी है. अटारी गांव मलिहाबाद तहसील में आता है. पंचायत चुनाव में अटारी गांव सामान्य महिला सीट के रूप में आरक्षित था. गांव में महिला उम्मीदवार केवल नाम के लिए चुनाव लड़ रही थीं. परदा प्रथा के चलते वे वोट मांगने के लिए अपने घर से बाहर नहीं निकल रही थीं.

इसी गांव की रहने वाली संयोगिता सिंह चौहान ने शादी के 8 साल बाद अपने परिवार के कहने पर चुनाव लड़ने को तैयार हुईं. उन की यह शर्त थी कि वे घर में बैठ कर केवल नाम के लिए चुनाव नहीं लड़ेंगी, बल्कि सामान्य उम्मीदवार की तरह चुनाव प्रचार करेंगी. उन के घर वालों ने इस बात को स्वीकार कर लिया.

संयोगिता सिंह चौहान ने अपना चुनाव प्रचार खुद किया और वे चुनाव जीत गईं. चुनाव जीतने के बाद वे गांव की तरक्की की हर मुमकिन कोशिश में लग गईं. उन्होंने कोरोना से बचाव की कोशिश की और टीकाकरण व गांव की साफसफाई में जुट गईं.

पेश हैं, संयोगिता सिंह चौहान के साथ की गई एक लंबी बातचीत के खास अंश :

आप ने उच्च शिक्षा हासिल करने के बाद भी गांव की राजनीति में आना क्यों स्वीकार किया?

मैं सीतापुर जिले की रहने वाली हूं. मैं ने 12वीं क्लास तक की पढ़ाई यूपी बोर्ड से की है. मेरे परिवार में पढ़ाईलिखाई का माहौल था. मुझे बीबीए और एमबीए की पढ़ाई करने के लिए मुंबई भेजा गया. वहां मुझे इंडियायूरोप बिजनैस कालेज से एमबीए करने का मौका मिला. इस के बाद मैं ने एक मल्टीनैशनल कंपनी में नौकरी भी की.

इस बीच मेरी शादी की बात चलने लगी और मेरी शादी लखनऊ में हो भी गई. मेरी ससुराल वाले अटारी गांव के रहने वाले थे. मैं ने सोचा था कि शादी के बाद फिर से कैरियर बनाऊंगी. इस बीच साल 2021 में पंचायत चुनाव में हमारे गांव की सीट सामान्य महिला की हो गई, तो घर वालों ने कहा कि तुम पंचायत चुनाव लड़ लो.

मैं ने चुनाव को फिल्मों में ही देखा था. मेरे मन में समाजसेवा का भाव बचपन से ही था. मुझे लगा कि अब सही राह मिल गई है और मैं चुनाव लड़ने को तैयार हो गई.

क्या यह आप के लिए आसान काम था?

चुनाव के बारे में सुना था और किताबों में पढ़ा था. काफीकुछ देख भी था, पर मेरा कोई निजी अनुभव नहीं था.

जब मैं ने ग्राम प्रधान पद का परचा भरा और गांव में प्रचार करना शुरू किया तो देखा कि विरोधी लोगों के घरों से प्रधान का चुनाव लड़ रही महिलाएं घर से ही नहीं निकल रही थीं. मुझे वोट मांगते देख वे हैरान थीं. कई महिलाएं मुझ से भी कह रही थीं कि गांव की बहू हो, तुम्हें ऐसे वोट मांगने घरघर नहीं जाना चाहिए.

मैं ने किसी की कोई बात नहीं सुनी. मैं गलीगली, घरघर गई और लोगों से मिली. उन की बात सुनी, अपनी बात कही. नतीजा अच्छा रहा और मैं चुनाव जीत गई.

क्या वजह थी कि आप के गांव की महिला उम्मीदवार अपना ही चुनाव प्रचार नहीं कर रही थीं?

पंचायत चुनाव में महिलाओं को आरक्षण तो मिल गया है, पर उन के नाम पर परिवार के लोग ही राजनीति करते हैं खासकर बड़े घरों की महिलाओं में यह बात ज्यादा देखने को मिलती है. महिलाएं परदा प्रथा के चलते ही घरों से कम निकलती हैं. इस की सब से बड़ी वजह अशिक्षा है.

आज के दौर में बहुत सी जगहों पर बड़ेबड़े परिवारों की महिलाएं परदा प्रथा को छोड़ कर चुनाव प्रचार करती हैं. गांव की महिलाएं अभी भी पुरुषों के दबाव में घर से बाहर नहीं निकलती हैं. मैं चुनाव के समय भी और चुनाव जीतने के बाद भी गांव के हर परिवार के साथ हूं.

आप के सामने कामकाज की क्याक्या चुनौतियां रहती हैं?

कोरोना के समय ये चुनाव हुए थे. इस के बाद गांव को कोरोना से बचाने के लिए टीकाकरण और साफसफाई का ध्यान रखा गया. समयसमय पर सैनेटाइजेशन किया जाने लगा. साफ पानी के लिए टंकी लगवाने की पहल शुरू हुई.

एनजीओ के जरीए गांव की तरक्की का काम किया जा रहा है. जिन गलियों में इंटरलौकिंग नहीं है, वहां यह काम कराना है. लड़कियों को शिक्षा देने और परदा प्रथा के खिलाफ लोगों को जागरूक करना है. गांव में झगड़े कम हों और लोग नशा न करें, उन्हें इस के प्रति भी जागरूक करना है.

आप घरपरिवार की देखभाल कैसे कर रही हैं?

इस के लिए समय का संतुलन बनाना पड़ रहा है. इस सब में घर वालों की मदद मिल रही है. मेरा बेटा अभी 7 साल का है. वह भी सब समझ रहा है. सब के सहयोग से काम हो रहा है. मैं ने 5 साल के विकास का एक खाका खींचा है. उसी पर चलना है. मैं कितना कर पाती हूं, यह देखने वाली बात है.

– शैलेंद्र सिंह ●

प्यार बढ़ेगा, दूध बहेगा!
कपिला
पशु आहार
एवं
कश्यप
सुप्रीम पेलेट SUPREME PELLET
75%
अच्छा स्वास्थ्य | लंबी आयु | ज्यादा दूध
एक मात्र निर्माता : कामधेनु कैटिल फीड्स प्रा० लि० 84/54, जरीब चौकी, जी.टी. रोड, कानपुर • Ph.: 0512-2520177, 2520178, 9235425981, E-mail :info@kapilacattlefeed.com

रुदाली

नीरज कुमार मिश्रा

राजस्थान के इस हिस्से में लौटरी खेलने पर कोई बैन नहीं था. यहां के नौजवान तो नौजवान, बड़ेबूढ़े लोग भी लौटरी खेलने के जाल में उलझे हुए थे. इसी कसबे में सूरज नाम का 30 साल का नौजवान भी रहता था. उस को भी लौटरी खेलने की लत लग गई थी.

सूरज के पिता कभी गांव के प्रधान हुआ करते थे और किसी समय उन के पास काफी पैसा भी था. सूरज की लौटरी की लत ने काफी पैसा फुजूल ही उड़ा दिया था. सूरज लौटरी में ज्यादातर हारता, कभीकभी ही जीतता. पर, जीत हारे गए पैसों की तुलना में बहुत छोटी होती. फिर भी सूरज नए जोश से लौटरी का टिकट खरीदता और नतीजे का बेसब्री से इंतजार करता.

सूरज अपने मांबाप का एकलौता बेटा था. उस की शादी की उम्र हो गई थी, फिर भी उस की शादी नहीं हो रही थी. भला एक जुआरी से शादी करता भी कौन?

सूरज को गांव के लोग अच्छी नजरों से नहीं देखते थे, जिस की वजह उस का लौटरी खेलना तो था ही, साथ ही, सूरज के अंदर एक ऐब और भी था. दरअसल, लौटरी जीतने की खुशी मनाने और हारने का गम मिटाने के लिए वह गेरुई के पास जाता था.

गेरुई एक रुदाली थी. रुदाली यानी वह औरत, जो किसी आदमी की मौत हो जाने पर दहाड़ें मार कर रोती है. रुदाली के रोने में ऐसा दर्द उभर कर आना चाहिए कि वहां खड़े सभी लोगों की आंखें नम हो जाएं.

अमीर घरों की औरतें आदमी की लाश पर हाथ मारमार कर नहीं रो सकती थीं, क्योंकि वे तथाकथित सभ्य समाज का हिस्सा थीं और उन्हें घर की चारदीवारी के अंदर ही रहना होता था. ऐसे में रुदाली और कुलीन कहलाने वाले लोगों के बहुत काम आती थी.

और यह भी सच है कि आंसुओं की भी एक सीमा होती है. ऐसे में जब आंसू आंखों का साथ छोड़ देते तो रुदाली का सहारा लिया जाता.

रुदालियां काले रंग का लबादा सा ओढ़ कर आतीं. अच्छे कामों में रुदाली को देख लेने भर से काम बिगड़ जाते हैं, ऐसी सोच रखता था यह गांव.

गेरुई और उस के परिवार को गांव वालों ने गांव के कोने पर ही रहने की इजाजत दी हुई थी. वह गांव में तब ही आती, जब उसे किसी की मौत पर विलाप करने के लिए बुलाया जाता, वरना उसे गांव के अंदर जाने की सख्त मनाही थी.

आज के समाज में भी लोकरीति के चलते जीने को मजबूर गेरुई के पास जब सूरज प्यार की तलाश में पहुंचा, तो अपनेपन और इज्जत की भूखी गेरुई ने अपना तन और मन दोनों ही सूरज पर लुटा दिए थे.

सूरज जब भी लौटरी में हार कर आता, तो हताशा में गेरुई से कुछ अलग डिमांड करता. तब गेरुई उसे बिस्तर पर लिटाती और उस की आंखों के सामने अपने मांसल अंगों से खुद कपड़े अलग करती.

जब गेरुई पूरी तरह से बेपरदा हो जाती और सूरज की सांसें तेजी चल रही होतीं तो वह गेरुई को बिस्तर पर पटक देता और अपना मुंह गेरुई के विशाल उभारों के बीच में डाल देता. गेरुई के कोमल व गोल अंगों को जी भर कर वह प्यार करता.

गेरुई और सूरज जम कर कामसुख का मजा लेते और फिर सूरज देर तक गेरुई की आगोश में पड़ा रहता. जातेजाते सूरज कुछ पैसे भी गेरुई को दे जाता.

एक दिन सूरज सड़क के किनारे वाली चाय की दुकान पर बैठा हुआ लौटरी के टिकट का गणित बिठा रहा था, तभी वहां पर अपने स्कूटर पर बैठा हुआ राजू सिंह आया और सूरज से जानपहचान बढ़ाने लगा.

राजू सिंह ने उसे बताया कि वह आसपास के गांव और कसबों में घूमता है और उम्र निकल जाने के कारण जिन लड़केलड़कियों की शादी नहीं हो पाती है, वह उन की शादी करवाने में मदद करता है. राजू सिंह ने 4-5 फोटो सूरज के सामने फैला दिए थे.

सूरज ने उड़ती नजर उन पर डाली. वे सभी बहुत खूबसूरत लड़कियां थीं. देखने से ही बड़े घर की लड़कियां लग रही थीं. उन की खूबसूरती देख कर एकबारगी सूरज के मुंह में भी पानी आ गया.

"ये इतनी खूबसूरत लड़कियां मुझ से शादी करने के लिए क्यों राजी होंगी भला?" सूरज ने सवाल किया.

"अरे हुजूर, आप के रसूख के बारे में किसे पता नहीं है. बस, आप यह लौटरी और रुदाली गेरुई का चक्कर छोड़ दीजिए, फिर देखिए, आप के पास लड़कियां कैसे खिंची चली आती हैं," राजू सिंह ने चिकनीचुपड़ी बातें शुरू कर दीं और जातेजाते लड़कियों के फोटो सूरज के पास ही छोड़ गया और 2-3 दिनों बाद आने को कह गया.

जब सूरज घर पहुंचा, तो उस की मां ने खाना देते समय बेहद भावुक हो कर सूरज से कहा, "क्या बेटा उम्रभर मुझ से ही खाना बनवाएगा? शादी कर ले, तो मुझे भी बहू के हाथ की रोटी मिल जाएगी. एक दिन तो मरना ही है मुझे."

मां के मुंह से ऐसी बातें सुन कर सूरज को भी लगा कि भटकना बहुत हो गया, अब मांबाप के सुख के लिए उसे शादी कर लेनी चाहिए.

आज राजू सिंह आया, तो सूरज ने उसे अपनी परेशानी बताई, "शादी तो मैं कर लूं, पर मेरे पास पैसाकौड़ी तो कुछ है नहीं. फिर, सारा इंतजाम कैसे होगा?"

"पैसे की चिंता आप बिलकुल मत करो. पहले तो आप लड़की फाइनल करो. आगे का रास्ता मैं आप को बताता हूं."

राजू सिंह को सूरज ने अपने मांबाप से मिलवा दिया, ताकि शादी वगैरह की बात आगे बढ़ सके. एक लड़की की फोटो पर मांबाप और सूरज ने मोहर लगाई, तो राजू सिंह ने बताया, यह लड़की सिंगरी गांव के एक गरीब किसान की बेटी है. इस के पास रूप है, पर इस के बाप के पास पैसा नहीं है. ऐसे में आप लोगों को ही इन का खर्चा भी उठाना पड़ेगा.

"आप लोगों का रिश्ता इतनी सुंदर लड़की से हो रहा है, इसलिए गांव में अभी इस रिश्ते की चर्चा किसी से मत करना, वरना लोग शादी तुड़वा भी देते हैं.

"पर, हमारे पास भी तो ज्यादा पैसे नहीं हैं," सूरज के पिता ने कहा.

"अरे चाचा, कोई बात नहीं है. मैं सूरज को बैंक से लोन दिलवा दूंगा."

"लोन पर बैंक में बंधक यानी गारंटी के नाम पर हमारे पास तो सिर्फ जमीन के कागज ही हैं," सूरज ने कहा.

"बस, उतना ही बहुत है. आप चिंता मत करो, सब इंतजाम हो जाएगा," राजू सिंह ने शेखी बघारी.

राजू सिंह ने अगले दिन ही सूरज को अपने साथ ले जा कर बैंक में कागजी कार्यवाही भी शुरू कर दी और अपने स्कूटर को सिंगरी गांव के बाहर बने मंदिर की तरफ मोड़ दिया.

"यह हम सिंगरी गांव की तरफ क्यों जा रहे हैं?" सूरज ने पूछा, तो राजू सिंह ने बताया कि वह उसे अपनी होने वाली पत्नी से मिलाने ले जा रहा है.

सूरज आज मंदिर में उस फोटो वाली खूबसूरत लड़की से जा कर मिल भी लिया था. भले ही उस ने अपना चेहरा घूंघट में छिपाए रखा था, पर उस लड़की के हाथों की हलकी सी छुअन ने सूरज के जवान मन को रोमांचित कर दिया था.

सूरज ने अपने गले में पड़ी सोने की चेन को लड़की के गले में डाल कर यह रिश्ता पक्का कर दिया.

सूरज और उस का मन भी एक लड़की से मिल कर खुश हो रहा था. इस बीच गाहेबगाहे उस के मन में गेरुई की याद भी आ जाती थी. उसे लगता कि उस

ने गेरुई के साथ धोखा किया है, पर भला वह भी क्या करे, अब एक रुदाली से शादी थोड़े ही की जा सकती है, ऐसा सोच कर गेरुई की याद को अपने ऊपर हावी नहीं होने देता था.

तकरीबन 2 महीने बाद लोन के रुपए भी सूरज के हाथ में आ गए थे, पूरे 5 लाख थे. लड़की वाले गरीब थे, इसलिए उन की तरफ से लड़के वालों को दहेज देने के लिए सूरज ने अपने हाथों से 2 लाख रुपए लड़की के भाई को दे दिए और बाकी के पैसों से 3 तोला सोना और

चांदी के गहने ले आया, जिन्हें शादी के समय दुलहन को देना था.

सूरज और उस का परिवार पूरी कोशिश कर रहा था, ताकि शादी में कहीं से भी उन की बेइज्जती न हो जाए.

सूरज ने सोचा कि एक बार और लौटरी का टिकट ले लिया जाए, क्या पता बाद में पत्नी लौटरी खेलने पर बैन ही लगा दे. सूरज ने 50 लाख रुपए के बंपर प्राइज वाला टिकट ले लिया और शादी की तैयारियों में जुट गया.

शादी की तारीख नजदीक आ रही थी. एक दिन राजू सिंह का फोन आया कि लड़की वाले के घर में किसी की मौत हो गई है, इसलिए वे सब सिंगरी गांव न जा कर एक दूसरे गांव बेकल में बरात ले कर आएंगे. बड़ी विपदा आ गई थी लड़की वालों पर. सूरज के परिवार में रिश्तेदार आ गए थे, पर उन्हें भला दूसरे गांव में बरात ले जाने से क्या एतराज होता.

शादी की तारीख आई, तो जोरशोर से सूरज की बरात बेकल गांव के लिए रवाना हो गई. वहां पहुंच कर बेहद ही सादा समारोह में सूरज के ब्याह को निबटा दिया गया. उसे दहेज के नाम पर भी कोई सामान नहीं दिखा, जिस की वजह लड़की के खानदान में हुई मौत बताई जा रही थी.

सूरज और उस के मांबाप ने समझदारी व शांति का परिचय देते हुए लड़की वालों की मनोदशा को समझा और जैसेतैसे रिश्ते के बिचौलिए राजू सिंह ने बताया, उन लोगों ने वैसा ही किया और शादी कर के दुलहन विदा करा कर घर ले आए.

आज सूरज की सुहागरात थी. उस ने बड़ी खास तैयारियां कर रखी थीं. सुनहरे रंग का कुरता और सुनहरे रंग की धोती पहने सूरज अपने कमरे में दाखिल हुआ. बिस्तर पर बैठी दुलहन के पास जा कर वह हौले से बैठ गया.

सूरज ने जैसे ही दुलहन का घूंघट पलटना चाहा, तो लड़की ने धीमे से कहा कि अभी वह शारीरिक संबंध नहीं बना सकती, क्योंकि टीले वाले मंदिर पर उसे एक नारियल फोड़ना है. उस के बाद ही वह अपनी सुहागरात मनाएगी.

पत्नी बड़ी धार्मिक है, ऐसा सोच व जान कर सूरज को बड़ा अच्छा लगा और उस ने पत्नी की बात की पूरी इज्जत की, उसे हाथ तक नहीं लगाया. अपने साथ मुंहदिखाई के तौर पर लाया हुआ मोबाइल सूरज ने अपनी दुलहन को बिना उस का मुंह देखे ही दे दिया.

अगला दिन निकला, तो सूरज ने सोचा कि फटाफट दुलहन को टीले वाले मंदिर ले जा कर नारियल फोड़वा लाऊं, ताकि आज जम कर अपनी सुहागरात मना सकूं. मांबाप से इजाजत ले कर मोटरसाइकिल पर अपनी नईनवेली दुलहन को बिठा कर सूरज टीले वाले मंदिर की ओर चल दिया.

अपने हाथ में नारियल लिए दुलहन मंदिर की ओर बढ़ चली. बीचबीच में सूरज दुलहन के चेहरे को देखने की कोशिश करता भी, तो दुलहन बड़ी सफाई से अपना घूंघट और निकाल लेती. वह बेचारा मन मसोस कर रह जाता. अब तो उसे और भी बेसब्री से अपनी सुहागरात का इंतजार था.

मंदिर में नारियल फोड़ने के बाद सूरज को मंदिर की सीढ़ियों पर बिठा कर दुलहन मंदिर की परिक्रमा करने चली गई.

सूरज काफी देर तक वहीं उस के इंतजार में बैठा रहा. जब तकरीबन घंटेभर तक दुलहन नहीं लौटी, तब सूरज ने उसे ढूंढ़ना शुरू किया. पर दुलहन का कहीं अतापता न मिला.

सूरज यह देख बहुत परेशान हो गया. आसपास पूछताछ की, पर कोई फायदा न हुआ. वह बदहवास हो कर लोगों से पूछता और हंसी का पात्र बनता.

शाम तक भी दुलहन का कोई पता न चला, तो हार कर सूरज अपने घर चला आया और सारी बात अपने मांबाप को बताई.

अभी वह मांबाप से बातें कर ही रहा था कि उस के मोबाइल पर फोन आया. उधर से एक लड़की की आवाज थी, 'सुनो, मुझे ढूंढ़ने की कोशिश मत करो, क्योंकि जो तसवीर देख कर तुम ने शादी की थी, वैसी कोई लड़की तुम्हें कभी नहीं मिलेगी, क्योंकि वह लड़की की तसवीरभर है. यह सब राजू सिंह और उस के गैंग की करतूत है और मुझे भी इस काम के पैसे मिलते हैं, 1,000 रुपए रोज.

'हां, तुम ने मुझे जो मोबाइल गिफ्ट किया था, इसलिए उसी मोबाइल से फोन कर रही हूं. वैसे भी, तुम आदमी मुझे भले लगे, पर कोई रिपोर्ट मत करना, क्योंकि यह सब राजू सिंह का प्लान रहता है, जिस में बैंक से लोन पास कराने से ले कर लड़कियों के रिश्तेदार वगैरह सब के सब मिले होते हैं.'

सूरज और उस का परिवार सन्न रह गया था. मांबाप ने अंदर जा कर देखा, तो उन की नईनवेली बहू के कमरे से सारे गहने और नकदी गायब थी.

उन लोगों की समझ में नहीं आ रहा था कि वे अपना दर्द किस से जा कर कहें. वे लोग एक सोचेसमझे ढंग की साजिश का शिकार हुए थे. इस सदमे से उबरने के लिए उन्हें वक्त चाहिए था.

सूरज और उस के मांबाप ने खुद के ठगे जाने की बात किसी से नहीं बताई. पर भला जंगल की आग और प्रपंच के फैलने को कोई रोक सकता है क्या?

पूरे गांव वालों में यह बात फैल गई थी और लोग मजे लेले कर यह बात एकदूसरे से कहसुन रहे थे.

सूरज के पिता अपनी बदनामी सहन नहीं कर पा रहे थे, इसलिए वे सूरज की मां को ले कर शहर में अपने भाई के पास रहने चले गए. गांव में अब सूरज अकेला रह गया था.

अब तो सूरज से कोई बात भी नहीं करता था. उस के पास पैसा नहीं बचा था, ऊपर से बैंक के लोन को चुकाने का तनाव अलग से उस पर हावी हो रहा था. उसे लगने लगा कि अब उस का जीना बेमानी है. उसे लालची लोगों ने ठगा, मुश्किल वक्त में मांबाप ने भी साथ छोड़ दिया, इसलिए अब उस की जिंदगी में बचा ही क्या है... उसे मर जाना चाहिए.

सूरज तुरंत ही रस्सी ले आया और अपनी जिंदगी खत्म करने के लिए एक मजबूत फंदा बनाने लगा. अचानक उस का मोबाइल फोन बज गया.

'यह मेरी दुलहन का फोन तो नहीं? उस ने जो कहानी सुनाई थी, सूरज ने कहीं वह सब झूठ तो नहीं?' यह सोच कर तपाक से फोन रिसीव कर लिया था.

पर अफसोस, उधर से किसी मर्द की आवाज थी. यह मर्द कोई और नहीं, बल्कि सूरज का लौटरी बेचने वाला एजेंट था, जो तेज आवाज में बोल रहा था, "बधाई हो सूरज भैया, पूरे 50 लाख रुपए की लौटरी लगी है तुम्हारी. जल्दी से टिकट ले आओ. तुम्हारी तो मौज हो गई."

सूरज को अपने कानों सुने पर यकीन नहीं हो रहा था. उसे भरोसा नहीं हुआ, तो उस ने दोबारा लौटरी एजेंट को फोन लगा कर उस से इस बात की तसल्ली की.

कुछ देर बाद गांव वालों ने देखा कि हाथ में लौटरी का टिकट पकड़े सूरज तेजी से गांव के बाहर की ओर भागा जा रहा है, पर किधर? वह तो रुदालियों के घर की तरफ चला गया. हां, रुदाली के पास ही तो था सूरज.

सूरज ने गेरुई को अपनी बांहों में कस कर दबोच लिया था. वह उस के गालों को कस कर चूम रहा था.

गेरुई सारा माजरा समझ ही नहीं पा रही थी. उसे सूरज की शक्ल में नया ही सूरज दिखाई दे रहा था.

सूरज ने गेरुई का हाथ पकड़ा और शहर की ओर भाग पड़ा, जहां एक नई जिंदगी, एक नया सवेरा उन दोनों के इंतजार में था. जहां किसी की मौत पर रोने के लिए किसी रुदाली की जरूरत नहीं होती. गेरुई के पैरों में भी यह सोच कर पंख लग गए थे कि अब उसे किसी की मौत पर रोने जैसा अजीब काम नहीं करना पड़ेगा. ●

झुमकी

मधु शर्मा कटिहा

"बाजार से खाने के लिए कुछ ले आती हूं," झुमकी पलंग पर लेटे बिछुआ को देख कर बोली और बाहर निकल गई.

बटुए से पैसे निकाल कर गिनते हुए झुमकी के चेहरे पर चिंता की लकीरें खिंची हुई थीं. उत्तर प्रदेश के कमालपुर गांव से वह अपने बीमार पति बिछुआ का इलाज कराने दिल्ली आई थी. उसे यहां आए हुए 2 हफ्ते हो चुके थे. कोई जानपहचान वाला तो था नहीं, सो अस्पताल के पास ही एक कमरा किराए पर ले कर रह रही थी.

कई दिनों से चल रही जांच के बाद ही पता लग पाया कि बिछुआ के पेट की छोटी आंत में एक गांठ थी. आपरेशन जल्द कराने को कह रहे थे अस्पताल वाले, लेकिन झुमकी यह सोच कर परेशान थी कि पैसों का जुगाड़ कैसे होगा? सरकारी अस्पताल है तो क्या हुआ... कुछ खर्चा तो होगा ही आपरेशन का. फिर इस कमरे का किराया, खानापीना और बिछुआ की दवाएं... पैसे के बिना तो कुछ मुमकिन था ही नहीं. क्या बिछुआ का इलाज कराए बिना ही वापस लौट जाना पड़ेगा?

सड़क पर चलते हुए अचानक ही झुमकी को किसी के कराहने की आवाज सुनाई दी. पास जा कर देखा तो एक 35-40 साल की औरत जमीन पर गिरी हुई थी. उठने की भरपूर कोशिश करने के बावजूद वह उठ नहीं पा रही थी. झुमकी ने सहारा दे कर उसे उठाया और पास ही पड़े एक बड़े से पत्थर पर बैठा दिया.

झुमकी को उस औरत ने बताया कि वह आराम से चलती हुई जा रही थी कि अचानक एक लड़का तेजी से साइकिल चलाता हुआ पीछे से आया और धक्का मार दिया. उस के धक्के से वह इतनी जोर से गिरी कि एक पैर बुरी तरह मुड़ गया और कुहनियां भी छिल गईं.

कुछ देर वहीं बैठने के बाद उस औरत ने झुमकी से एक रिकशा रोक लेने को कहा. रिकशा रुकते ही वह औरत झुमकी की मदद से चढ़ तो गई, लेकिन हाथों में दर्द के चलते रिकशे को पकड़ नहीं पा रही थी.

झुमकी भी तब रिकशे में बैठ गई और अपने हाथ का घेरा उस घायल औरत की कमर पर बना कर सहारा दे दिया. रिकशा उस औरत के घर की ओर रवाना हो गया.

रास्ते में उन दोनों की बातचीत हुई. उस औरत ने झुमकी को बताया कि उस का नाम राधा है. नजदीक के ही एक महल्ले में वह अपने पति सुरेंद्र के साथ रहती है. सुरेंद्र की पास के बाजार में किराने की दुकान है.

शादी को 10 साल बीत चुके थे, लेकिन राधा के कोई बच्चा नहीं था, इसलिए घर पर अकेली ऊब जाती थी. अपना समय बिताने और पति की मदद करने के मकसद से वह कुछ देर के लिए दुकान पर चली जाती है. आज भी वह दुकान पर से वापस लौट रही थी, तब यह घटना घटी.

अपने बारे में बता कर राधा ने झुमकी से उस का परिचय पूछा, तो झुमकी ने अपने बारे में सब बता दिया.

झुमकी की बात पूरी होतेहोते ही राधा का घर आ गया. झुमकी ने चाबी राधा के हाथ से ले कर ताला खोल दिया और उसे सहारा देते हुए कमरे के भीतर ले आई. जब तक राधा ने सुरेंद्र को फोन किया, तब तक झुमकी वहां खड़ी रही.

राधा की सुरेंद्र से बात पूरी होते ही झुमकी बोली, "मैडमजी, मैं अब चलती हूं. बिछुआ मेरी बाट देखते होंगे."

राधा ने उसे रुकने को कहा. धीरेधीरे चलते हुए उस ने रसोई से ला कर कुछ नमकीन के पैकेट झुमकी को थमा दिए.

रात को झुमकी और बिछुआ राधा की दी हुई

नमकीन खा कर सो गए. अगले दिन सुबहसुबह झुमकी के कमरे का दरवाजा खड़का तो दरवाजा खोलने पर वह सामने सुरेंद्र को देख चौंक उठी.

सुरेंद्र ने उसे बताया कि राधा के पैर में पलस्तर चढ़ गया है. वह एक जरूरी बात करने के लिए झुमकी को घर बुला रही है.

झुमकी बिछुआ को बता कर सुरेंद्र के साथ राधा से मिलने आ गई.

राधा झुमकी को देख कर बहुत खुश हुई और तुरंत अपनी बात सामने रखते हुए बोली, "झुमकी, मैं कल से तुम्हारे बारे में ही सोच रही थी. तुम्हारी परेशानी को ले कर मैं ने सुरेंद्र से भी बात की है. मेरा एक सुझाव है, तुम्हें जंचे तो ही हां करना."

"जी, कहिए..." झुमकी बोली.

"मैं ने अपने घर का कुछ हिस्सा पिछले महीने ही बनवाया है. पहले आगे वाले 2 कमरे ही थे. कई दिनों बाद रंगरोगन हुआ तो पीछे की ओर एक कमरा भी बनवा लिया. उसे हम दुकान के गोदाम के रूप में इस्तेमाल करना चाहते हैं.

"अभी वह कमरा खाली है. बस, मकान बनवाने के बाद का कुछ बचाखुचा सामान जैसे रंगरोगन के खाली डब्बे रखे हैं. तुम चाहो तो बिछुआ के इलाज तक उस कमरे में रह सकती हो.

"तुम मेरे घर का काम कर दिया करना, क्योंकि चोट की वजह से मुझ से काम हो नहीं पाएगा. तुम हम दोनों का खाना बनाओगी तो साथसाथ अपना खाना भी बना लिया करना. काम के बदले पैसे तो दूंगी ही मैं तुम्हें."

झुमकी को मानो मुंहमांगी मुराद मिल गई हो. खुशीखुशी यह प्रस्ताव स्वीकार कर उसी दिन बिछुआ को ले कर वह राधा के घर चली आई.

राधा ने अपने घर पर रखे सामान में से बिस्तर और कुछ पुराने कपड़े झुमकी के कमरे में रखवा दिए. अस्पताल के खर्च के लिए उस को कुछ रुपए भी दे दिए.

बिछुआ के पेट में खून रिसने के चलते जल्द ही आपरेशन कर दिया गया. आपरेशन कामयाब रहा और 4 दिन बाद उसे अस्पताल से छुट्टी भी मिल गई. तकरीबन एक महीने के लिए उसे आराम करने की सलाह दी गई. साथ ही, यह भी कहा कि दर्द ज्यादा हो तो तुरंत अस्पताल आना है, वरना एक महीने बाद जांच कराने ही आना होगा.

झुमकी ने पहले दिन से ही खाना बनाने के साथसाथ घर के बाकी काम पूरी जिम्मेदारी से करने शुरू कर दिए. वह सोच रही थी कि राधा के घर पर अगर आसरा न मिला होता तो जाने क्या होता? इधर राधा को भी झुमकी के रूप में बड़ा सहारा मिल गया था.

एक दिन सफाई करते समय कमरे में मकान बनने के बाद का बचा हुआ सामान और एक अलमारी में रखे रद्दी अखबार देख झुमकी कुछ सोच कर मुसकरा उठी. शादी से पहले अपने पिता से उस ने कुट्टी नाम की कला सीखी थी.

कुट्टी का मतलब होता है कागज को कूट कर उस से सुंदरसुंदर चीजें बनाना. पहले बेकार पड़े कागजों को कुछ दिन पानी में भिगो कर कूटा जाता है. इस लुगदी में मुलतानी मिट्टी और गोंद डाल कर गूंद लिया जाता है और किसी भी आकृति में ढाल कर सुखा लिया जाता है. बाद में उस आकृति पर रंग कर देते हैं.

'इस काम के लिए मुझे जो भी सामान चाहिए, उस में से मुलतानी मिट्टी को छोड़ कर यहां सबकुछ है, लेकिन उस की जगह एक थैली में जो सफेद सीमेंट रखा है, उस से काम चल जाएगा.

'मैडमजी तो यह सारा सामान फेंकने को कह रही थीं. इस का मतलब उन को इस में से कुछ चाहिए भी नहीं, तो मैं ही इस्तेमाल कर लेती हूं इसे,' झुमकी ने सोचा.

डिस्टैंपर के खाली डब्बे में पानी भर कर झुमकी ने वहां रखे रद्दी अखबार उस में भिगो दिए. 2-3 दिन बीतने पर भीगे कागजों को कूट कर लुगदी बना ली और बाकी सामान मिला कर एक सुंदर बड़ा सा फूलदान बना दिया. सूखने पर वहां रखे पेंट और ब्रश ले कर उसे सुंदर रंगों से रंग दिया.

जब झुमकी फूलदान ले कर राधा के पास पहुंची, तो पीले, संतरी और सुनहरी रंगों से चमकते फूलदान को देख कर राधा हैरान रह गई. जब उसे पता लगा कि वह झुमकी ने बचे सामान से बनाया है, तो हैरानी के साथसाथ उस की खुशी का ठिकाना न रहा.

"झुमकी तुम मुझे सिखाओगी यह कला?" राधा ने चहकते हुए पूछा.

"क्यों नहीं मैडमजी, मुझे तो बहुत अच्छा लगेगा," झुमकी को बहुत दिनों बाद एक अजीब सी खुशी महसूस हो रही थी.

अगले दिन से ही झुमकी ने राधा को कुट्टी कला की बारीकियां बतानी शुरू कर दीं. झुमकी ने बताया कि उस के पिता ज्यादा सामान बनाते थे, तो तकरीबन 15 दिन भिगोते थे कागजों को. ऐसे में 2-3 दिनों के बाद पानी बदल लेते थे. पुराना पानी वे पेड़पौधों में दे देते थे.

क्या शराब ? लीवर खराब

वैद्य सत्य नारायण धौली प्याऊ मथुरा ने एक साक्षात्कार में बताया कि लिवर (यकृत) शरीर का बहुत प्रमुख अंग है। भोजन को पचाना तथा शुद्ध रक्त का निर्माण करना यकृत (लिवर) का मुख्य कार्य है।जो लोग शराब पीते हैं उनके यकृत प्लीहा में प्रायः शोथ (सूजन) उत्पन्न हो जाती है जिसके कारण पेट में दर्द की शिकायत शुरू हो जाती है। खाना हजम नहीं होता, कभी दस्त तो कभी कब्ज होने लगता है। बहुत ज्यादा समय होने पर पीलिया जैसी जानलेवा तथा कमजोरी देने वाली बीमारियाँ शुरू हो जाती हैं। हमारा कथन है कि लोग शराब पीना छोड़ दें, यदि नहीं तो कम से कम अपने लिवर (यकृत) का विशेष ध्यान रखें। "यकृत शोधन" भाप से बनी वो औषधि है जो खाना खाने के बाद सुबह–शाम 4–4 चम्मच आधा गिलास पानी में पी जाती है। जिसका असर 12 घंटे में शुरू हो जाता है, सुबह को काला–काला मल निकलना शुरू हो जाता है और यकृत की शुद्धि प्रारम्भ हो जाती है। **"यकृत शोधन"** यकृत–प्लीहा के शोथ (एन्लार्जमेन्ट) में बहुत लाभकारी है। **"पाचन अमृत सुधा"** 8 चम्मच में 3 से 5 **' यकृत शोधन"** मिलाकर खाना खाने के तुरन्त बाद पीने से दो गुना लाभ होता है।

नोट : बच्चों को भी " यकृत शोधन" लिवर (यकृत) रोगों में दिया जा सकता है।

उपलब्ध न होने पर 9258040152 पर प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक आर्डर बुक करायें।

सभी प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियों के कुछ विक्रेताओं के नम्बर

बिहार–0612–2673987, झारखण्ड–9771390698, उ.प्र.–लखनऊ–9415768958, इलाहाबाद–9236011955, कानपुर–9839940626, आगरा–9412166680, अलीगढ–9837843430, गोरखपुर–9336400742, बरेली–इमदाद हुसैन–9411070751, शाहजहांपुर–9450442978, मेरठ–9837270117, 0124135025, 9212771106, कोलकाता–09432485534, 07278040890, दिल्ली–9810386276, 9899161855, राजस्थान–9413381007, 9413381008, छत्तीसगढ़–9301315674, मध्य प्रदेश–उज्जैन–09826284858, इन्दौर–0731–2463274, 9098144825, भोपाल–09893257976, जबलपुर–09424686874, पंजाब–जालंधर–01679–231670, 501670, 9417331070, हरियाणा–फतेहाबाद–09812446363, रोहतक–09812341685, 09466278067, 08901387927, फरीदाबाद–01292417565

पानी में कागजों को कुछ दिन भिगो कर जब कलाकृतियां बनाने का समय आया, तो झुमकी राधा को सहारा देते हुए आंगन में ले आई और एक कुरसी पर बिठा दिया.

झुमकी को छोटेछोटे खिलौने बनाते देख राधा का मन भी खिलौने बनाने को करने लगा. झुमकी एक टीचर की तरह राधा को सब सिखा रही थी और कुरसी पर बैठेबैठे ही राधा भी झुमकी को देख कर खिलौने बना रही थी.

झुमकी ने उसे मूर्तियां, कटोरे और प्लेट जैसी और चीजें बनानी भी सिखाईं. सूखने पर रंग करने का आसान तरीका भी झुमकी ने राधा को सिखा दिया. कुछ रंगों को मिला कर नए सुंदर रंग बनाना और उन का सही ढंग से इस्तेमाल करना भी राधा ने झुमकी से सीख लिया.

इधर बिछुआ ठीक हुआ, उधर राधा के पैर का पलस्तर भी कट गया. झुमकी और बिछुआ के गांव वापस जाने का समय आ गया था. जाने से पहले एक बार अस्पताल में जांच कराने के बाद झुमकी और बिछुआ राधा और सुरेंद्र का अहसान मानते हुए भरे मन से विदा ले कर गांव चले गए.

कुछ दिनों तक राधा को घर सूनासूना लगता रहा, फिर धीरेधीरे सब सामान्य हो गया. वह पहले की तरह ही घर संभालने लगी और सुरेंद्र की मदद को दुकान भी पर जाने लगी थी.

अचानक उन की जिंदगी में एक मुसीबत आ गई. सुरेंद्र को दुकान के मालिक ने एक दिन आ कर बताया कि उस की और आसपास की कई दुकानों को गैरकानूनी होने के चलते जल्दी ही गिरा दिया जाएगा.

सभी दुकानदार आपस में सलाह कर इस नोटिस के खिलाफ कोई कदम उठाते, इस से पहले ही अचानक दुकानों को तोड़ने का काम शुरू हो गया.

सुरेंद्र ने बाकी सब की तरह ही अफरातफरी के बीच जल्दीजल्दी अपना सामान बाहर निकाला. उस का काफी सामान इधरउधर बिखर कर खराब हो गया. बाकी बचे सामान को किसी तरह वह घर ले कर आया.

अड़ोसपड़ोस में जा कर उन दोनों ने गुजारिश की कि पड़ोसी रोजमर्रा का कुछ सामान उन से खरीद लें, लेकिन बहुत कम लोगों ने ही सामान खरीदने के लिए उन के घर तक आने की जहमत उठाई. बचे सामान में से कुछ खराब हो गया और बाकी राधा ने घर पर इस्तेमाल कर लिया.

उन की असली चिंता तो अभी भी सामने थी, रोजीरोटी की. वे जान गए थे कि घर पर दुकान खोलने की बात सोचना बेकार है, क्योंकि ग्राहक तो आएंगे नहीं वहां चल कर. कुछ सालों से बचत कर के जो पैसे जोड़े थे, वे अब खत्म होने को आए थे.

एक दिन सुरेंद्र का दोस्त अनवर उस से मिलने घर आया हुआ था. चाय पीते हुए उस का ध्यान झुमकी के बनाए फूलदान पर चला गया. उस ने बताया कि उस के दफ्तर के पास इस तरह का सामान बेचने वाला बैठता है, जिस की खूब बिक्री होती है. वहां विदेश से घूमने आए सैलानी भी आते हैं. वे लोग इसे 'पेपर मैशे' से बना सामान कहते हैं.

अनवर की बात सुन कर राधा की आंखें चमक उठीं. वह सुरेंद्र से बोली, "क्यों न हम सजावट का सामान बना कर उसे ही बेचने की कोशिश करें? झुमकी ने कितने आसान तरीके से इतनी सुंदर चीजें बनानी सिखाई थीं हमें. शायद यही हो हमारी समस्या का हल."

सुरेंद्र की परेशानी अनवर समझता था, लेकिन दूर करने का उपाय नहीं मिल पा रहा था. उसे भी यह बात जंच गई. वह बोला, "आप लोग ऐसा कर सकते हैं, तो मैं आप की बात दफ्तर के पास दुकान लगाने वाले से करवा दूंगा. महेश नाम है उस का."

सुरेंद्र ने तुरंत हामी भर दी.

अनवर ने जल्दी ही महेश से सुरेंद्र को मिलवा दिया. महेश झुमकी के हाथों से बना फूलदान देख कर बहुत प्रभावित हुआ. उस ने कहा कि अगर सुरेंद्र ऐसा ही सामान बना लेगा, तो वह सारा सामान उस से खरीद लेगा. वैसे भी उसे खरीदारी के लिए बहुत दूर जाना पड़ता है. इस से किराए पर बहुत खर्च होता है और सामान टूटने पर नुकसान भी हो जाता है.

महेश की शर्त यही थी कि नया बनने वाला सामान भी फूलदान की टक्कर का हो. बेचने की जिम्मेदारी उस पर होगी. इस में दोनों का फायदा ही होगा.

अगले दिन से ही राधा ने झुमकी द्वारा सिखाई गई एकएक बात को याद करते हुए काम करना शुरू कर दिया. सुरेंद्र भी उस की मदद कर रहा था. उन्होंने कागज भिगो कर रख दिए. राधा को याद आया कि झुमकी ने उसे कुट्टी कला के एक और रूप के बारे में भी बताया था, जिस में गुब्बारा फुला कर उस पर कागज की कतरनें गोंद से चिपकाते हुए तकरीबन 7 परतें बना दी जाती हैं. सूखने पर गुब्बारे को फोड़ कर उस ढांचे को बराबर 2 भागों में काट कर दीवार पर सजाने वाले मुखौटे बनाए जाते हैं.

राधा ने सुरेंद्र से कई बड़ेबड़े गुब्बारे बाजार से मंगवा लिए और उन को फुला कर एकएक कर कागज की परतें चिपका दीं.

कागज की मोटी परतें सूख गईं, तो मुलतानी मिट्टी गूंद कर ढांचे पर आंख, नाक व होंठ बना दिए और उन्हें फिर सुखाने के लिए रख दिया. सूखने पर पेंट के डब्बों से रंग ले कर उन को रंग दिया गया.

सुरेंद्र ने अपना दिमाग लगाते हुए बोरी के रेशों से मुखौटों की भौंहें व बाल बनाए और बेकार पड़े बिजली के तारों से कानों में कुंडल पहना दिए. अपने बनाए मुखौटे देख कर उन की खुशी का ठिकाना न रहा.

कुछ दिनों बाद पानी में भीगे कागज जब गल गए तो झुमकी के बताए तरीके से उन दोनों ने मिल कर छोटेछोटे पशु, जानवर, फोटो फ्रेम, फूलदान, गिफ्ट बौक्स और सजावट की अनेक चीजें बना कर तैयार कर लीं.

उन चीजों के सूख जाने पर राधा ने पुराना और बेकार सामान जैसे आईना, चूड़ियां, बिंदी व बटन वगैरह ले कर उन को सजा दिया

महेश ने जब उन सब चीजों को देखा, तो बहुत खुश हुआ. उस ने सामान ले जा कर जब अपनी दुकान में रखा तो पाया कि बाकी सामान के मुकाबले सुरेंद्र से खरीदे गए सामान की ओर लोग ज्यादा खिंच रहे हैं. जल्द ही उस ने यह बात सुरेंद्र को बता कर और चीजें बनाने का और्डर दे दिया.

राधा और सुरेंद्र मन ही मन झुमकी का धन्यवाद करना नहीं भूले. राधा जानती थी कि झुमकी के पिता कुट्टी कला में माहिर थे. उन के साथ बचपन से काम करती आ रही झुमकी का हाथ इतना सधा हुआ था कि उस से सीखने के बाद ही आज राधा बेजोड़ सामान तैयार कर पाई है.

इस बार राधा ने मूर्तियां, खिलौने, कटोरे, प्लेट और सजावट की अनेक चीजें बनाईं. इस बार रंगने का काम सुरेंद्र ने किया. उस ने पेंट करने के लिए ब्रश के अलावा पेड़ के पत्तों, भिंडी के कटे भाग व फूलों की पंखुड़ियों का इस्तेमाल भी किया.

महेश के सामान को देख कर दूसरे कारोबारियों ने भी सुरेंद्र से सामान खरीदना शुरू कर दिया. धीरेधीरे धंधा खूब चमकने लगा. घर का नया कमरा, जो उन्होंने दुकान का सामान रखने के लिए बनाया था, उस में अब कुट्टी कला की मदद से सामान बनने लगा था.

झुमकी का अहसान वे न तो भूले थे और न ही भूलना चाहते थे, इसलिए उन्होंने अपने इस नए कारोबार को 'झुमकी कला निकेतन' नाम दिया. ●

सीने से लगाया न करो

जुल्म का जादू
हम पर चलाया न करो.
हम को सीने से
लगाया न करो.
जुल्फों की छांव में
सुलाया न करो.

हम को इस तरह
फंसाया न करो.
खुला जिस्म
दिखाया न करो.
कह मेरी
खूब प्यासी है.
तन की प्यास को
बढ़ाया न करो.

– विजय के. सिंह

अच्छन मियां की अकड़

मौहम्मद आसिफ

अच्छन मियां कठोर दिल के मालिक थे. लंबाचौड़ा कद, आवाज में कड़कपन, रोबदार चेहरा, बड़ीबड़ी मूंछें और सांवला रंग. अपने फायदे के लिए दुनिया के नियमों को ताक पर रखना और दूसरों को रोब दिखा कर अपने बनाए नियमों पर चलाना उन की फितरत थी.

आज अच्छन मियां सवेरे साढ़े 4 बजे नहाधो कर, 5 बजे वाली एकलौती ट्रेन पकड़ने के लिए निकले थे. सफेदी की चमकार लिए पैंटशर्ट, चमड़े के चमचमाते काले जूते पहन कर, लाल और हरी धारियों वाला सफेद अंगोछा अकड़ के साथ कंधे पर डाल कर, मूंछों को ताव देते हुए रिकशा की तलाश करने लगे.

रेलवे स्टेशन 2 किलोमीटर दूर था. स्टेशन के रास्ते की सड़क के गड्ढे सरकार की बदहाली की पोल खोल रहे थे. अच्छन मियां को ट्रेन से ढाई घंटे का सफर तय कर के दूसरे शहर भतीजे की शादी में जाना था.

अच्छन मियां ने छांट कर सब से अच्छे कपड़े सूटकेस में रखे हुए थे. कसबे की बिजली गुल थी. अंधेरे के चलते थोड़ी दूर का रास्ता भी दिखाई नही दे रहा था.

खैर, अच्छन मियां को रेलवे स्टेशन तक जाने के लिए एक रिकशा दिखाई दिया. उन्होंने आवाज लगाई, "ओ रिकशा वाले, स्टेशन चलोगे क्या?"

रिकशा वाला बोला, "जी बाबूजी..."

"कितने पैसे लोगे?" अच्छन मियां ने पूछा.

"बाबूजी, 20 रुपए..." रिकशा वाले ने जवाब दिया.

"अबे, 20 रुपए का काम नहीं है, मगर हम तुझे 20 रुपए देंगे. सही से चलाना. जल्दी से गाड़ी पकड़वा दे. 15 मिनट बचे हैं बस. अगर गाड़ी छूट गई तो और कोई गाड़ी नहीं है और बस वालों की भी हड़ताल है आज."

"जी बाबूजी," रिकशा वाले का जवाब आया.

"जी बाबूजी के बच्चे... जल्दी दौड़ा रिकशा..." अच्छन मियां रिकशा में बैठते हुए गुर्राए.

रिकशा स्टेशन की तरफ चल दिया. अंधेरे के चलते स्पीड ब्रेकर और गड्ढे साफ नजर नहीं आ रहे थे. अच्छन मियां ने अपनी जेब में रखी टौर्च निकाली और सोचा कि जला लें... गड्ढे, स्पीड ब्रेकर दिख जाएंगे.

मगर नाम के उलट अच्छन मियां का कठोर स्वभाव आड़े आ गया. अचानक वे सोचने लगे, 'हम क्यों जलाएं अपनी टौर्च, यह तो रिकशा वाले का काम है, उस को टौर्च रखनी चाहिए, हमें कौन से गड्ढे देखने हैं, जिसे देखने चाहिए वह खुद देखेगा और गड्ढे नहीं दिखाई दे रहे तो न दें.

'जैसे भी करेगा, अपनेआप चलाएगा रिकशा, सही से. उस का काम है सहीसलामत हमें स्टेशन तक पहुंचाना. आखिर 20 रुपए किस बात के लेगा...' यह सोच कर अच्छन मियां ने टौर्च वापस जेब में रख ली.

अभी अच्छन मियां के अशांत मन में विचारों की उधेड़बुन चल ही रही थी कि एक बड़े से गड्ढे में रिकशा का पहिया गया और वह पलट गया.

अच्छन मियां अपनी अकड़ के साथ मुंह के बल जमीन पर आ गिरे. सूटकेस गिर कर खुल गया और कपड़े बिखर गए. वहां पानी भी जमा था. अच्छन मियां समेत सबकुछ नीचे जमीन पर गीली मिट्टी में पड़ा था. अगर कुछ ऊपर था तो वह था अच्छन मियां का एक चमकदार जूता, जो रिकशा के पायदान में अटका रह गया था और रिकशा पलटने के चलते सब से ऊपर जा टंगा था. अब बस यह जूता ही शादी में जाने लायक रह गया था. ●

मैं 18 साल का एक गरीब घर का लड़का हूं. मैं 12वीं जमात पास कर चुका हूं और अब भौतिक विज्ञान से बीएससी कर रहा हूं.

मैं अपनी पढ़ाई का खर्चा खुद उठाऊं, इसलिए बच्चों को ट्यूशन देना चाहता हूं, पर मेरे पास जगह की कमी है. मुझे सही राह दिखाएं?

आप बच्चों को उन के घर जा कर ट्यूशन दें. अच्छा पढ़ाएंगे तो नाम होगा और फीस भी बढ़ेगी. जगह की कमी दूर करने के लिए किसी दोस्त का घर ले सकते हैं या फिर किराए का कमरा लेना भी एक अच्छा तरीका है, लेकिन इस के लिए आप को कम से कम 5-6 बच्चे यानी छात्र मिलने चाहिए, तभी बात बनेगी.

●

मैं 22 साल की एक कुंआरी लड़की हूं. मेरे घर वाले मेरी शादी करना चाहते हैं, पर मैं अपनी एक संस्था बना कर गरीब और अपाहिज लोगों की मदद करना चाहती हूं. इस की शुरुआत कैसे की जाए, इस बारे में सही सलाह दें?

आप का जज्बा अच्छा है, लेकिन अभी आप खुद मदद की मुहताज हैं. इस के लिए पहले आप को अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ेगा. गरीबों और अपाहिजों की मदद के लिए बहुत पैसों की जरूरत पड़ेगी, जो आसमान से नहीं टपकेंगे. इस का इंतजाम तो आप को ही करना पड़ेगा.

बेहतर होगा कि आप अपनी कोई संस्था बना कर काम शुरू करें और बाद में एनजीओ बनाएं. इस के लिए आप किसी भी एनजीओ वाले से मिल कर जानकारी ले सकती हैं कि शुरुआत कैसे की जाए और क्याक्या दिक्कतें पेश आती हैं.

शादी कर लेना भी हर्ज की बात नहीं, लेकिन पति पर पहले ही अपनी इच्छा जाहिर कर दें. मुमकिन है कि वह भी आप का साथ देने के लिए तैयार हो जाए.

●

मैं 18 साल की एक लड़की हूं और पड़ाई में बहुत अच्छी हूं. पिछले एक साल से एक लड़का मेरे पीछे पड़ा है और बोलता है कि मुझ से शादी करेगा. मुझे उस लड़के में कोई बुराई नहीं दिखती, पर मुझे अभी प्यार के चक्कर में नहीं पड़ना है, जबकि वह लड़का बहुत उतावला दिखता है और रोज मेरा सड़क पर पीछा करता है. इस से मुझे बहुत गुस्सा आता है. मैं क्या करूं?

तो आप चाहती हैं कि लड़का पीछा भी न करे और प्यार भी घर बैठे जताता रहे. यह उस के लिए मुश्किल काम है. इस उम्र के प्यार में सब्र नहीं होता, बल्कि उतावलापन ही होता है. अगर वह लड़का आप को अच्छा लगता है, तो उस से अपनी फीलिंग्स शेयर करें और उस का मन टटोलें कि कहीं उस की और उस के प्यार की मंजिल सैक्स ही तो नहीं है. अगर वह आप को चाहता होगा, तो आप की भावनाओं को समझेगा.

शादी का फैसला 2-3 साल बाद इतमीनान से लें. इस पर भी लड़का पीछा करना न छोड़े और ज्यादा परेशान करने लगे, तो घर के बड़ों को बताएं. वे आप की परेशानी हल कर सकते हैं.

●

मैं 20 साल का हिंदू लड़का हूं और एक मुसलिम लड़की से प्यार करता हूं. हम दोनों शादी करना चाहते हैं, मगर मेरे घर वाले राजी नहीं हैं. मुझे क्या करना चाहिए?

अभी आप की शादी करने की उम्र नहीं है और दूसरे धर्म में शादी करने में तमाम तरह की दिक्कतें आती हैं. बेहतर होगा कि आप उस लड़की का खयाल दिमाग से निकाल कर अपने कैरियर पर ध्यान दें.

●

मैं 22 साल का हूं और 19 साल की ममेरी बहन से प्यार करता हूं. हम दोनों कई बार हमबिस्तरी कर चुके हैं. उस के घर वाले उस की शादी कहीं और करना चाहते हैं. हम दोनों क्या करें?

वासना में बह कर आप दोनों ने खूब गुस्ताखी कर ली. क्या आप उम्मीद कर रहे हैं कि आप के मामाजी अपने भांजे यानी आप से दामाद बनने की पेशकश करेंगे? अच्छा यही होगा कि आप ममेरी बहन से हमबिस्तरी करना छोड़ दें व उस की शादी निबटने दें. ●

HEMODEX®

आपके सेहत का सच्चा साथी

Hemodex, Growmed उत्पादित आयरन टॉनिक लाल रक्तकण बढ़ाने एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। इसमें है भरपूर आयरन, फोलिक एसीड, B_{12} तथा सीवीटॉल **70%**, जो कि चेहरा, जीभ या आँख के पीलापन, चलने पर चक्कर आना या दमफूलना, उम्र से ज्यादा दिखना जैसे गंभीर रोगों में अत्यधिक लाभदायी है।

GROWMED®

STOMAQUAR®

अब छुटकारा पाईये

पेट में गैस, जलन, अपच, खट्टे डकार, पुराना कब्ज, पेप्टिक अल्सर, आँव, सिरदर्द, बेचैनी एवं मुँह में छाले

जैसी सभी तकलीफों से!

Stomaquar पेप्टिक अल्सर, जलन, अपच, सड़पर एसीडीटी, पेट में ज्यादा गैस का होना, हिचकी आना, कब्ज एवं पेट के अन्य तकलीफों से निजात दिलाने में काफी उपयोगी. साथ ही रक्तचाप को सही रखने में, पुराना आँव (क्रोनिक डीसेंट्री), पुराना कब्ज (कॉन्स्टीपेशन), सिरदर्द एवं बेचैनी तथा मुँह के छाले में इसका नियमित सेवन काफी लाभदायक है।

Manufacturer : Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT GROWMED PVT. LTD.

• CALL : 9431237784, 8987383154

कहानी

कुशलेंद्र श्रीवास्तव

इच्छाधारी बाबा

मंदिर के ऊपरी भाग में जाने वाली सीढ़ियों के नीचे का सहारा बनाए हुए एक साधु दिखाई देता था। वह इस कमरे में आराम करते हुए मंदिर में आने वाले भक्तों को देखते रहते थे। वैसे तो उन्हें नई भक्तों से इतना मतलब नहीं रहता था, पर उन में से वे केवल ऐसे भक्तों पर ही निगाह गड़ाए रहते थे, जो उन्हें पैसे वाला दिखाई देता था। इस से उलट वे मंदिर में आने वाली उन लड़कियों और औरतों को खास निगाह से देखते थे, जो गरीब घरों की होती थीं।

वे अपने कमरे से होते हुए नीचे के चेहरे को पढ़ लेते थे, उन में से जिन में उन्हें कोई उम्मीद नजर आती, उन्हें अपने दूसरे कमरे में बुला लिया जाता। इस दूसरे कमरे से ही इस कमरे तक आने का सफर तय होता था, जो 'इच्छाधारी बाबा' करते जाते थे।

अब थोड़ा 'इच्छाधारी बाबा' का इतिहास जान लेते हैं, उस का असली नाम मूलचंद था, जब शुरू से ही रुझानों से जीने के सपने देखा करता था, पर जब ज्यादा पढ़लिख नहीं पाया था, तो उसे जो सरकारी नौकरी मिली, वह क्लर्क की थी।

यह नौकरी भी मूलचंद को इस कदर से मिल गई थी कि उस के पिताजी भी सरकारी नौकर थे और रिटायर होने से पहले एक हादसे में उन की मौत हो गई थी।

मूलचंद को आसानी से नौकरी मिली तो उस के सपने जोर मारने लगे. अपने सपनों को पूरा करने के लिए उस के पास सफलता करने के अलावा और कोई दूसरा रास्ता नहीं था.

क्लर्क की तनख्वाह तो इतनी होती नहीं कि वह उस में ऐशोआराम की जिंदगी जिता सके. सफलता किया और पकड़ा गया.

मूलचंद ने जिसके रुपयों का सफलता किया था, उन को अपने एक दोस्त के पास रख दिया था, ताकि अगर वह पकड़ा भी जाए तो उस के पैसे मारफून रहें.

मूलचंद को भरोसा था कि वह पकड़े जाने के बाद इन्हीं पैसों को रिश्वत खिला कर अपनेआप को बेदाग साबित कर लेगा, पर ऐसा हुआ नहीं. न केवल उसे नौकरी से निकाल दिया गया, बल्कि उस के खिलाफ पुलिस थाने में रिपोर्ट भी दर्ज करा दी गई. रिपोर्ट दर्ज होते ही उस के पैरों तले की जमीन खिसक गई. डर के मारे वह फरार हो गया.

पुलिस मूलचंद को ढूंढ़ती फिर रही थी और वह चोरीछिपे हुए दिन काट रहा था. पुलिस के साथ आंखमिचौली के दौरान ही वह एक मंदिर के पुजारी के

पास पहुंचा. उस फुजारो ने उसे छिपने में बहुत मदद की.

बाद में मूलचंद को पता चला कि जर फुजारो खुद भी सालों से ऐसे ही पुलिस से छिपता फिर रहा है. उस ने जो अपनी पत्नी का दो खून कर दिया था.

मूलचंद ने भी सोचा, 'कितने लोग ऐसे ही अपने-आप को छिपाए हुए हैं, तू भी यही चोला पहन ले...'

मूलचंद तब तक जरी छिपा रहा, जब तक उस के बाल और दाढ़ी-मूंछ नहीं आ गई. फिर एक दिन जर भगवा चोला पहन कर जरी से निकल पड़ा. उस ने अपना नया नाम 'इच्छाधारी बाबा' रख लिया था. अब उसे पुलिस का कोई डर नहीं था.

'इच्छाधारी बाबा' ने अपना जो नया ठिकाना बनाया, जर एक हंस रूप्पू का पुश्तों का मंदिर था. इस मंदिर में बहुत सारी जमीन लगी हुई थी. इस जमीन को रूप्पू ही जोतता था और सारा पैसा अपने इस्तेमाल में ही खर्च करता था.

रूप्पू को अपने पुरखों से इस कदर से चिढ़ होती थी कि इनकी सारी जमीन मंदिर में लगा दो और इनकी कीमती जमीन पर मंदिर बना दिया. जर मंदिर जिस जगह पर बना था, उस की कीमत आज लाखों रुपए में हो गई थी.

थोड़ेथोड़े जब रूप्पू ने मंदिर में खर्चा करना बंद कर दिया, तो मल्ले के लोगों ने चंदा इकट्ठा कर के मंदिर को चलाने की जिम्मेदारी अपने कंधे पर ले ली.

करो मंदिर पूरे तरह से हाथ से न निकल जाए, इस आशंका के चलते रूप्पू मंदिर में अपना दखल बनाए रखता था. उसे एक ऐसे आदमी की तलाश थी, जो मंदिर से आमदनी करा सके.

मूलचंद यानी 'इच्छाधारी बाबा' से रूप्पू को एक डोल हूई थी. 'इच्छाधारी बाबा' ने उसे हर साल एकमुश्त मोटी रकम देने का लिखित करार कर दिया था. इस के बदले रूप्पू ने पूरा मंदिर उसे सौंप दिया.

रूप्पू का भार हलका हो गया. अब उसे अपने पुरखों से इतनी नाराजगी भी नहीं रही. इसी जोर 'इच्छाधारी बाबा' मंदिर से पैसा कमाने की कला सीख चुका था.

जर मल्ला अच्छे लोगों का था, इसलिए 'इच्छाधारी बाबा' को अपनी कमाई को ले कर कोई शक या भी नहीं.

अब संपर्क में इन्हें भी मिलने लगे थे. जर तू से आप हो गया था.

रूप्पू ने 'इच्छाधारी बाबा' को योजना के मुताबिक उन्हें बड़ों थूमधाम और उन से जुड़ी अनेक कहानियों का प्रचार कर मंदिर में जैठा दिया. मंदिर में एक पंडित था रामलाल, जो कुछ मंत्र जगैरह पढ़ लेता था. जर मंदिर में भगवान को पूजा करता और अपना पंडिताई धर्म निभा लेता. सपने तो जर भी बहुत सारे पाले हुए था, पर उस के पास 'इच्छाधारी बाबा' को तरह खुद पर पक्कीन और चालाकियां नहीं थीं.

'इच्छाधारी बाबा' को एक ऐसा ही आदमीजो चाहिए ही था, इसलिए उन्होंने उस फैंडस रामलाल के सिर पर अपना हाथ रख कर यह भी समझा दिया कि आगर उस ने उन के कामों में रोड़े अटकाए तो उस को खैर नहीं.

रामलाल जैसे भी 'इच्छाधारी बाबा' को देख कर प्रभावित हुआ था, उन की थम्पकी को सुन कर और भी प्रभावित गया. जर 'इच्छाधारी बाबा' के पैरों में गिर गया और कसमखा ली कि बाबा के न केवल सारे कामों में जर दिलचस्पी लेगा, बाल्कि हर हुक्म को अक्षरशः मानेगा.

'इच्छाधारी बाबा' को अपना जलवा जमाने में ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी. वे जल्दी ही समझ गए थे कि जो अपने चेहरे पर जिसनी मुसकान लिए रहता है, उस के दिल में उतने ही दर्द छिपे होते हैं. उन्हें केवल उन दर्दों को कुरेदना हो था.

एक औरत सविता पर उन की निगाह पहले ही दिन पड़ गई थी. जर मंदिर गतिविधियां आ जाती थी और जेवरों से लदी कारों और रईसों रहती. 'इच्छाधारी बाबा' ने सविता को ही अपना पहला शिकार बनाया.

सविता के कोई औलाद नहीं थी और उम्र भी ढलती जा रही थी. पति दूसरे शहर में काम करता था. जर 15 दिनों में एक जार ही आता, जर भी एक दिन के लिए.

सविता ने पर सब 'इच्छाधारी बाबा' को बता दिया. उस को बातें सुन कर बाबाजी को खास लगाव गई. फिर एक दिन सविता को अपने कमरे में बुलाजर बाबाजी ने उस को कोख में अपना ओज रोप दिया.

सविता को खुशी का ठिकाना नहीं रहा. जर पेट से हो गई और बाबाजी के लिए खिलौना बन गई. वे जब चाहते, उसे बुलाले और अपने कमरे में मौज करते.

सविता का पेट अब जार को और निकलाड़िखाई देने लगा था. बाबाजी का मन खट्टम हो गया था. सविता ने एक दूसरी औरत को उन के कमरे में पहुंचा दिया था. थोड़ेथोड़े 'इच्छाधारी बाबा' के पास औरतों की लाइन लगने लगी.

बच्चों के सम्पूर्ण शारीरिक विकास एवं विशेष इम्युनिटी बढ़ाने में सहयोग करता है।

GROWMED®

AD VITAMIN बेबी ऑयल

ग्रोमेड AD Vitamin Baby Oil से आपके बच्चों की हड्डियों एवं मांसपेशियों को ज्यादा मजबूती एवं सम्पूर्ण शारीरिक विकास के लिए याकर्ष है।

GROWMED AD VITAMIN BABY OIL

GROWMED PAIN RELIEF Gel & Tablet

आपको दर्द से दिलाए... मिनटों में आराम

ग्रोमेड पेन रिलीफ जेल के इस्तेमाल से कमर दर्द, घुटनों का दर्द, कंधे का दर्द, एड़ी दर्द तथा रिलप डिस्क दर्द से तुरंत आराम मिलता है।

Manufacturer : Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT

• CALL : 9431237784, 8987383154

टिट फौर टैट

नीरज कुमार मिश्रा

साल की बैस्ट कहानी का अवार्ड लेते ही पूरा हाल तालियों से गूंज उठा था. विजयी लेखिका अरुंधती ने मंच पर आ कर शुक्रिया अदा किया और अपनी कहानी के बारे में बताना शुरू किया.

"इस कहानी में एक ऐसी खूबसूरत व हसीन लड़की है, जो अपने पति को एक महिला के साथ जिस्मानी संबंध बनाते देख लेती है और पति से इस बात की शिकायत करने पर उस के पति के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती, बल्कि वह और भी बेशर्म व बेखौफ हो जाता है. और अब तो वह खुलेआम दूसरी औरत को घर में भी लाने लगता है.

"'मेरी नायिका दूसरी भारतीय नारियों की तरह इस घटना से रोती नहीं, टूटती नहीं, बल्कि अपने पति को सबक सिखाती है. अगर उस का शादीशुदा पति किसी औरत से शारीरिक संबंध बनाता है, तो उसे भी पूरा हक है कि वह अपने पति से तलाक ले और अपनी शर्तों पर जिंदगी जीए..."

अरुंधती ने कहना जारी रखा, "मेरी कहानी की नायिका अपने पति की बेवफाई से दुखी है. बदला लेने के लिए वह एक के बाद एक 4 नौजवानों से दोस्ती कर लेती है. उन में से 2 नौजवान शादीशुदा हैं, जो अपनी शादीशुदा जिंदगी से परेशान हैं, जबकि 2 लड़के कुंआरे हैं. और देखिए कि मेरी नायिका मर्दों की कामुक सोच को पहचान कर उन सब को एकसाथ कैसे हैंडल करती है."

"'हंसिका, मैं कब से तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं, तुम अभी तक पहुंची क्यों नहीं?' शेखर ने फोन पर परेशान आवाज में हंसिका से कहा.

"'ओह, आई एम सो सौरी. मैं तुम्हें बता नहीं पाई, आज कंपनी के काम से औफिस में ही देर हो जाएगी मुझे.'

"'पर, मैं ने तो आज शाम का पूरा मूड बना लिया था,' शेखर परेशान हो उठा था.

"'कोई बात नहीं, तुम अपना मूड बनाए रखो, मैं तुम्हारी कल की शाम हसीन बना दूंगी,' हंसिका ने फोन पर शेखर को दिलासा देते हुए कहा.

"'किस से बात कर रही हो?' होटल के कमरे में घुसते हुए आर्यन ने पूछा.

"'कोई नहीं, बस, एक सहेली थी.'

"'साफसाफ क्यों नहीं कहती कि वह बेचारा भी मेरी तरह ही तुम्हारे हुस्न की गरमी का सताया हुआ आशिक है. न जाने तुम में ऐसी कौन सी कशिश है, जो हम आशिकों को तुम्हारे पास बारबार आने को मजबूर करती है.

"'हम परवानों की बस इतनी सी इबादत है, बस, तेरे हुस्न में झुलसने की आदत है.'

"यह कह कर आर्यन ने अपनी हंसिका को बांहों में भरा. हंसिका उस के आगोश में सिमटती चली गई. कुछ देर बाद कमरे में सिसकारियां गूंजने लगी थीं.

"हंसिका और आर्यन एकदूसरे के जिस्म में समा गए थे. जब दोनों का जोश ठंडा हुआ, तब हंसिका ने आर्यन के सीने पर सिर रखा और उस से पूछने लगी, "'तुम्हारी बीवी तो मुझ से भी ज्यादा खूबसूरत है, फिर भी तुम मेरे आगेपीछे क्यों डोलते रहते हो?'

"आर्यन ने अपनी बीवी का जिक्र आते ही बुरा सा मुंह बनाया और कहने लगा, 'कहावत है कि मर्द के दिल का रास्ता उस के पेट से हो कर जाता है. पर, मेरे लिए मेरे दिल तक आने का रास्ता इस बैड से हो कर जाता है. मुझे सैक्स में थोड़ा पावर और हीट गेम चाहिए, पर वह बैड पर किसी जिंदा लाश की तरह पड़ी रहती है.'

"'तो क्या, तुम्हें बिस्तर पर एक एथलीट की जरूरत है?' हंसिका ने उस को बीच में रोकते हुए कहा.

"'नहीं, पर मर्द और औरत के रिश्तों के लिए एक अच्छी सैक्स लाइफ बहुत जरूरी होती है, यह बात तो तुम भी मानोगी

'इच्छाधारी बाबा' की नजर अब नवीन पर गई. नवीन के पास धनदौलत की कोई कमी नहीं थी. वह सुबह फैक्टरी जाने के पहले मंदिर में आ कर भगवान के दर्शन करता था.

'इच्छाधारी बाबा' की निगाह उस पर गड़ चुकी थी. वैसे तो वे बहुत ही कम सुबह जल्दी सो कर उठते थे और कभीकभार ही सुबह की पूजा में शामिल होते थे, पर अब वे रोज आने लगे थे.

नवीन को अपने जाल में फंसाने के लिए 'इच्छाधारी बाबा' को ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी. सविता ने नवीन के लिए एक खूबसूरत लड़की का इंतजाम कर दिया था.

'इच्छाधारी बाबा' के कमरे में नवीन की मुलाकात उस लड़की से कराई गई और उन के बिस्तर पर जाते ही वीडियो बना लिया गया. नवीन अब बाबाजी के लिए सोने का अंडा देने वाली मुरगी बन चुका था.

इस मंदिर को और बड़ा नवीन ने ही कराया था. इसी दौरान बाबाजी ने ऊपरी भाग में अपने लिए एक ऐसा कमरा बनवा लिया था, जिस की कांच की दीवारों से वे तो बाहर झांक सकते थे, पर कोई और बाहर से कमरे में नहीं झांक पाता था. कमरे की मोटी कांच की दीवारों के अंदर से बहुत जोर की आवाज भी बाहर नहीं निकल पाती थी.

'इच्छाधारी बाबा' की दुकानदारी चल निकली थी. मंदिर में भक्तों का जमावड़ा बढ़ने लगा था और पैसा बरसने लगा था. बाबाजी ने पैसा कमाने का एक और खेल चालू कर लिया था. उन के पास अब औरत भक्तों की तादाद खूब हो गई थी. इन में वे तो शामिल थीं ही, जिन की गोद भर चुकी थी और वे भी थीं, जिन्हें केवल बाबाजी के साथ से मजा मिलता था.

'इच्छाधारी बाबा' ने अपने अमीर भक्तों तक इन औरतों को पहुंचना शुरू कर दिया. बाबाजी के पास उन सब औरतों के वीडियो तो थे ही, इसलिए चाह कर भी वे उन के आदेश को मानने से इनकार नहीं कर पाती थीं. बाबाजी को इस नए कारोबार से ज्यादा आमदनी हो रही थी.

रम्मू ने जब अपना पुरखों का मंदिर 'इच्छाधारी बाबा' को किराए पर दिया था, तब उसे भी उम्मीद नहीं थी कि बाबाजी इस मंदिर को इतना चमत्कारिक बना देंगे कि पैसा बरसने लगेगा. उसे तो लग रहा था कि कुछ ही दिनों में बाबाजी मंदिर छोड़ कर भाग खड़े होंगे, पर अब जब मंदिर की चर्चा दूरदूर तक होने लगी थी, तो उसे बाबाजी से जलन होने लगी थी. उसे लगने लगा था कि वह ठगा गया है. वह अब उन्हें मंदिर से भगाने की जुगत में लग गया था.

एक दिन 'इच्छाधारी बाबाजी' अपने भक्तों के साथ नाच रहे थे. उन्होंने जिस औरत का हाथ पकड़ा हुआ था, उसे वे पहली निगाह में ही पसंद कर चुके थे. उन्होंने अपने कांच वाले कमरे से ही उस औरत को एक बच्चे और मर्द के साथ आते देख लिया था.

उस औरत की उम्र ज्यादा नहीं थी. उस के लंबे बाल कमर के नीचे तक लहरा रहे थे. बाबाजी ने उस औरत को दर्शन देने का मन बना लिया था, इसलिए वे अपने कमरे से नीचे आ गए थे.

उस औरत ने अपने सिर पर आंचल रख कर पूरी श्रद्धा के साथ बाबाजी के चरणों पर अपना सिर रख दिया और बाबाजी ने आशीर्वाद देने के बहाने उस की पीठ को सहला दिया.

इस के बाद बाबाजी उस औरत का हाथ पकड़ कर नाचने लगे. मंदिर के अहाते में जमा सभी भक्त भी बाबाजी के साथ नाच रहे थे. वे उसे यहांवहां छू रहे थे. वह औरत भी उन्हें छूने का भरपूर मौका दे रही थी.

थोड़ी देर के बाद वह औरत बाबाजी के कमरे में उन के सामने बैठी थी. बाबाजी उसे एकटक निगाहों से देख रहे थे. जैसे ही उन्होंने उस औरत के चेहरे पर आने वाली लट को हटाते हुए अपनी बांहों में लेने की कोशिश की, तभी उस औरत ने अपनी कमर में छिपी पिस्तौल को निकाल कर बाबाजी के माथे पर अड़ा दिया.

'इच्छाधारी बाबा' अभी भी मदहोश ही थे. उन्होंने पिस्तौल की परवाह किए बिना एक बार फिर उस औरत को बांहों में लेने की कोशिश की, पर अब की बार पिस्तौल से गोली निकल चुकी थी, जो तेज आवाज के साथ कांच की दीवार से जा टकराई.

गोली की आवाज बाहर नहीं गई थी, पर अंदर ही उस ने इतना धमाका किया था कि बाबाजी का सारा नशा गायब हो चुका था.

'इच्छाधारी बाबा' को गिरफ्तार कर लिया गया था. दरअसल, पुलिस ने ही यह सारा प्लान बनाया था. वह खूबसूरत औरत एसपी थी, जिस ने बाबाजी को अपने मोह जाल में फंसाया था.

पुलिस ने एक दिन पहले ही कुछ औरतों को एक होटल से गिरफ्तार किया था. उन्होंने ही मंदिर में चल रहे इस गोरखधंधे का खुलासा किया था. बाबाजी के कमरे से गंदी किताबों के अलावा नशीली दवाएं भी बरामद हुई थीं. 'इच्छाधारी बाबा' का पुराना कच्चाचिट्ठा भी खुल चुका था. ●

न,' यह कह कर आर्यन ने हंसिका को चूम लिया.

"वैसे, हंसिका इन मर्दों का वीडियो बनाना नहीं भूलती थी, क्या पता किस मोड़ पर काम आ जाए.

"हंसिका पूरी रात आर्यन के साथ गुजारने के बाद सुबह अपने औफिस गई और फिर पूरा दिन काम करने के बाद अपने फ्लैट पर जाने से पहले उस ने ब्यूटीपार्लर जाना जरूरी समझा. औफिस की साथी माया भी उस के साथ थी.

"'अरे हंसिका, अभी तू ने 2 दिन पहले ही तो अपने बालों को स्ट्रेट कराया था. और आज फिर से इन्हें कर्ली क्यों करा रही है?' माया ने पूछा.

"'क्योंकि, आज मेरी आकाश

के साथ डेट है,' मुसकराते हुए हंसिका ने कहा.

"'आकाश के साथ...? लेकिन, तेरे बौयफ्रैंड का नाम तो युवराज है,' चौंक पड़ी थी माया.

"'तुम नहीं समझोगी, माया. अच्छा बताओ, इंद्रधनुष में कितने रंग होते हैं?' हंसिका ने पूछा.

"'7.'

"'और एक हफ्ते में कितने दिन?'

"'7.'

"'तो फिर, बौयफ्रैंड एक क्यों, 7 क्यों नहीं?' अपने होंठों पर हलकी सी मुसकराहट लाते हुए हंसिका ने कहा.

"'अरे, तू क्या सच में 7 मान बैठी. 7 नहीं, बल्कि सिर्फ 4 बौयफ्रैंड हैं मेरे.'

"'ओफ्फो, तुझे समझना तो बहुत ही मुश्किल है.'

"यह कह कर माया बाहर की ओर जाने लगी, तो हंसिका ने उसे अपने पास बुलाया और बोली, 'सुन तो, देख, अजीब जरूर लग रहा होगा, पर आजादी से जीने का यही तो मजा है. चाहे जैसे रहो, कोई टोकने वाला नहीं. और जिंदगी में ऐश करो. पति के सहारे रहने व उस की बेवफाई सहने में भला रखा ही क्या है.'

"हंसिका का दर्द छलक आया था. उस ने सिगरेट सुलगाई. माया ने सहमति में सिर हिला दिया.

"तकरीबन 5 फुट, 9 इंच की शख्सीयत के ऊंचे कद वाली हंसिका देखते ही बनती थी. गोरा रंग, पतला चेहरा और सुतवां नाक. इस के साथ उस के बाल कमर तक लहराते हुए. हंसिका हफ्ते में कम से कम 3 दिन जिम भी जाती थी.

"हंसिका एक मौडलिंग एजेंसी में काम करती थी, जो बेंगलुरु जैसे शहर में अच्छी आय का स्रोत था और इसी पैसे के चलते हंसिका मनचाहे अंदाज से अपनी जिंदगी जी रही थी.

"'जो दिखता है वही बिकता है के सिद्धांत को मानने वाली हंसिका अपनी जवानी का भरपूर दिखावा करना अच्छी तरह जानती थी. अपने अलगअलग बौयफ्रैंड्स के साथ वह सैक्स करने में पीछे कभी नहीं हटती. अलगअलग दिनों में हंसिका के शारीरिक संबंध अलगअलग बौयफ्रैंड से बनते.

"हंसिका के बौयफ्रैंड यह बात अच्छी तरह जानते थे कि हंसिका के संबंध उन लोगों के अलावा और लोगों से भी हैं, पर उन्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था, क्योंकि हंसिका जैसी खूबसूरत लड़की पर एकाधिकार दिखा कर वे उसे खोना नहीं चाहते थे. उन के लिए तो हंसिका जैसी दिलकश हसीना के शरीर को भोग लेना ही बहुत बड़ी बात थी.

"आज हंसिका की डेट आकाश के साथ थी. आकाश एक समय में हंसिका का फेसबुक फ्रैंड था. आकाश शादीशुदा था. वह अपनी पत्नी की बेवफाई से दुखी था. उस की पत्नी का स्कूल के एक टीचर के साथ अफेयर था, जिस के बारे में उस के भनक लग गई थी और दुखी हो कर खुदकुशी के बारे तक में सोचने लगा था. अपनी निराशा से जुड़ी बातें आकाश ने फेसबुक मैसेंजर पर हंसिका से शेयर कीं, तो हंसिका को मामले की गंभीरता के बारे में पता चला.

"उस ने अपनी बातों से टूटे हुए आकाश को दिलासा दी और उसे मिलने के लिए बुलाया. दोनों में मुलाकातें होने लगीं. वहीं से आकाश पूरी तरह से हंसिका के रूप का दीवाना हो गया. और हंसिका ने उसे भी अपनी देह का स्वाद चखाने में देर नहीं की.

"हंसिका अपने इन बौयफ्रैंड्स को अच्छी तरह यूज करना जानती थी. कब किस से कितने पैसे की डिमांड करनी है, इस का अच्छी तरह ज्ञान था उस को.

"हंसिका अनचाहे पेट से बचने के लिए कंडोम का इस्तेमाल एक अनिवार्य शर्त बना देती थी. पर इस बार पता नहीं किस से और कैसे चूक हुई कि हंसिका पेट से हो गई थी. अपने पेट से हो जाने की बात हंसिका ने किसी भी बौयफ्रैंड को नहीं बताई.

"दिन बीतते रहे. अपनी बिजी लाइफ स्टाइल के चलते जब हंसिका अपना पेट गिराने के लिए डाक्टर के पास पहुंची, तो डाक्टर ने यह कह कर बच्चा गिराने से मना कर दिया कि समय ज्यादा हो गया है, अब यह मुमकिन नहीं है, इसलिए आप को बच्चे को जन्म देना ही होगा.

"हंसिका ने सब से पहले यह बात अपने एक पुराने बौयफ्रैंड आर्यन से बताई, 'सुनो आर्यन यार, एक बड़ी प्रौब्लम हो गई है.'

"'ऐसा भी क्या हो गया मेरी जान, जो तुम इतना ज्यादा घबरा कर बोल रही हो?' आर्यन ने कहा.

"'यू नो, आई एम प्रैग्नैंट,' हंसिका ने फुसफुसा कर कहा.

"'बधाई हो, मिठाई खिलाओ,' आर्यन ने चुटकी ली.

"'मजाक मत करो, मैं बहुत परेशान हूं,' हंसिका चिढ़चिढ़ा रही थी.

"'अब तुम कोई दूध पीती बच्ची तो हो नहीं, जो तुम्हें बताना पड़ेगा कि अगर तुम शादी से पहले प्रैग्नैंट हो गई हो, तो बच्चे को गिरवा दो.'

"'तुम्हें क्या लगता है कि मैं डाक्टर के पास नहीं गई थी? गई थी, पर डाक्टर ने बच्चा गिराने से मना कर दिया. अब मुझे बच्चे को जन्म देना ही होगा.'

"'ओह, तो यह बात है,' आर्यन ने गहरी सांस छोड़ते हुए कहा और चुप हो गया. कुछ देर बाद आर्यन ने ही कहना शुरू किया, 'कोई बात नहीं, तुम फिक्र मत करो. अस्पताल का सारा खर्चा मैं देने को तैयार हूं. पर क्या यह बच्चा हकीकत में मेरा ही है?'

"'ये कैसी बातें कर रहे हो, आर्यन? क्या मतलब है तुम्हारा?'

"'मेरा मतलब है कि मेरे अलावा तुम्हारे पति का भी तो हो सकता है?' आर्यन ने कहा. जबकि, उसे अच्छी तरह पता था कि हंसिका अपने पति से अलग रह रही है और उस ने पति से तलाक लेने का मुकदमा दायर कर रखा है.

"'अगर भरोसा नहीं है, तो बच्चे का डीएनए टैस्ट करवा लो.'

"'डीएनए टैस्ट करवाने की बात तो आर्यन के मन में भी आई थी, पर अगर डीएनए टैस्ट में बच्चा किसी और का निकलता तो बहुत मुमकिन था कि आर्यन को हंसिका से विरक्ति हो जाती और वह उसे खो देता.

"'अरे, ऐसी कोई बात नहीं है. तुम तो जरा सी बात में नाराज हो गईं. मैं तो मजाक कर रहा था,' आर्यन ने बात बनाते हुए कहा.

"हंसिका के संबंध कई मर्दों से थे. सभी मर्द इस बात को अच्छी तरह से जानते भी थे. हंसिका जैसी चिड़िया किसी एक पिंजरे में बंद हो कर नहीं रह सकती, पर वे सब हंसिका जैसी सैक्सी व दिलकश लड़की को छोड़ना नहीं चाहते थे. इसलिए, वे सब उस की तकरीबन हर बात मानते थे.

"हंसिका ने इसी तरह बारीबारी से अपने सभी बौयफ्रैंड्स को अपने पेट से होने की बात बताई और उन सब ने भी कमोबेश यही कहा कि हंसिका, बच्चे को अस्पताल में जन्म दे और वे लोग उसे हर तरह का खर्चा देने के लिए तैयार हैं.

"जब अपने चारों बौयफ्रैंड्स से हंसिका ने बात कर के उन से पैसे मिलने की बात कंफर्म कर ली, तब जा कर उस को सुकून मिला और वह अपने होने वाले बच्चे के भविष्य को ले कर आश्वस्त हो गई...

"मेरी नायिका हंसिका ने अपने औफिस से मैटरनिटी लीव ली और समय आने पर बच्चे को जन्म दिया.

"हंसिका अपने हर बौयफ्रैंड को अलगअलग यही एहसास कराती रहती कि जैसे यह बच्चा उस का ही है और उन लोगों से अलगअलग बच्चे के पालनपोषण के लिए पैसे भी लेती रही.

"बाद में हंसिका के कुंआरे बौयफ्रैंड्स को शादी भी हो गई और कुछ समय बाद बच्चे भी. पर उन प्रेमियों ने हंसिका व उस के बच्चे का ध्यान रखना नहीं छोड़ा.

"हंसिका के कई मर्दों से संबंध को दुश्चरित्रता इसलिए भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि मर्दों के इस समाज में हंसिका ने 'टिट फौर टैट' यानी 'जैसे को तैसा' वाला आचरण दिखा कर एक नई मिसाल पेश की है.

"और फिर, अगर एक औरत अपने पति की किसी भी तरह की बेवफाई के खिलाफ किसी भी तरह का सार्थक कदम उठाती है, तो उस का स्वागत किया जाना चाहिए. और मुझे पता है कि इस समाज में हंसिका जैसी बहुत सी औरतें हैं, जो पति की बेवफाई सह रही हैं.

"भले ही वे सब अपने मर्द के खिलाफ कुछ न कर पा रही हों, पर मेरी इस कहानी को पसंद कर उन्होंने इस साल की बैस्ट कहानी बना कर हंसिका का साथ देने की मूक स्वीकृति तो दे ही दी है."

हाल में लगातार तालियां बज रही थीं, हंसिका जैसी नायिका के लिए. पर यह बात केवल अरुंधती ही जानती थी कि हंसिका की यह कहानी किसी और की नहीं, बल्कि उस की अपनी ही है. ●

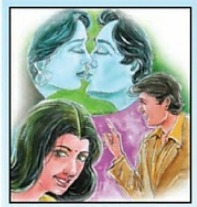

तीसरा भाग

मशाल

रमेश चंद्र सिंह

पिछले अंकों में आप ने पढ़ा था : रजनी की बड़ी बहन संध्या को ब्रेन हैमरेज हो गया था. एक अनजान लड़के हितेश की मदद से रजनी अस्पताल पहुंची थी. वहां नीलेश उस की बहन की देखभाल कर रहा था, जो हितेश का बौस भी था. नीतेश का संध्या के साथ नाजायज संबंध था. रजनी नीतेश की पत्नी से मिलना चाहती थी, पर नीलेश ने टाल दिया था. अब पढ़िए आगे...

अब यह पक्का हो गया था कि नीलेश जानबूझ कर रजनी को अपने घर पर नहीं ले जाना चाहता था.

अब किसी से कुछ पूछने का कोई मतलब नहीं था. रजनी इतनी भी बेवकूफ नहीं थी, जो यह न समझती कि उस की दीदी का नीलेश से नाजायज रिश्ता था. वह तो बस इस बात की तसदीक करना चाहती थी, जिस की अब जरूरत नहीं थी.

लेकिन रजनी के मन में एक विचार जरूर आ रहा था कि नीलेश जैसे लंपट के साथ दीदी का आगे रिश्ता बना कर रखना उन की जिंदगी को बरबाद कर सकता था और ज्यों ही इस की भनक नीलेश की पत्नी को लगेगी, उस की पारिवारिक जिंदगी में भी संग्राम छिड़ जाएगा.

रजनी अपनी दीदी से सीधे तो कुछ नहीं कह सकती थी, क्योंकि वे उस से उम्र में काफी बड़ी थीं और उस ने दीदी में बहन ही नहीं, मां का भी रूप देखा था. फिर वे खुद लैक्चरर थीं, इसलिए समाज को उन से बहुत उम्मीदें थीं.

अस्पताल लौट कर रजनी ने दीदी को उन की चैकबुक और एटीएम कार्ड सौंप दिया, लेकिन संध्या ने उसे इन्हें अपने पास ही रखने के लिए कहा.

रजनी ने दीदी के बैडरूम में पाए गए सामान के बारे में कुछ नहीं बताया. सोचा कि दीदी जब अपने फ्लैट में लौटेंगी, तब उन का रवैया देख कर ही वे आगे कुछ बोलेंगी.

डाक्टर ने संध्या को अस्पताल में एक हफ्ते और रहने के लिए कहा, तो रजनी ने अब वहीं दीदी के साथ रहने का फैसला किया. फिर सबकुछ सामान्य चलने लगा.

एक दिन शाम को रजनी एटीएम से कुछ पैसे निकालने अस्पताल से बाहर जा रही थी कि तभी अचानक उस की निगाहें हितेश से टकराईं. वह उसे देख कर मुसकराया.

"तुम अब तक यहीं हो? मैं ने सोचा कि तुम्हारी बहन अब अस्पताल से रिलीज हो गई होंगी," हितेश ने कहा.

"तुम इधर कैसे? क्या तुम्हारा आसपास ही घर है?" रजनी ने पूछा.

"हां, यहां से बस एक किलोमीटर की दूरी पर है. मेरे पिताजी यहीं विदेश विभाग में पोस्टेड थे. अब रिटायर हो गए हैं. हमारा एक छोटा सा घर है. क्या तुम मेरे यहां चाय पीने चलोगी? मेरी बहन भी एक कालेज से एमए कर रही है," हितेश के चेहरे पर अब भी मुसकराहट बिखरी हुई थी.

"घर में कौनकौन हैं?"

"पिताजी, मां, बहन और मैं."

"अभी मुझे इस हफ्ते अस्पताल में रहना है, फिर कभी चलूंगी. अभी तुम किसी एटीएम के बारे में बता दो. पैसे निकलवाने के बाद दीदी के लिए दवाएं लेनी हैं."

"मेरे घर के पास भी एटीएम है. वहीं चलते हैं. पैसा भी निकल जाएगा और चाय भी पी लेंगे," हितेश ने कहते हुए रजनी को अपनी मोटरसाइकिल पर बैठने के लिए इशारा किया.

रजनी बिना कुछ बोले ही उस की मोटरसाइकिल की पिछली सीट पर बैठ गई. अब हितेश में ऐसा क्या आकर्षण था कि वह उसे मना नहीं कर पाई? शायद इस अनजान शहर में वह लगातार अस्पताल में रहने के चलते बोर हो गई थी, इसलिए उस ने सोचा कि हितेश के परिवार से मिल कर उस का मन हलका हो जाएगा.

हितेश ने जब रजनी को एटीएम के पास उतारा, तो रजनी को याद आया कि उस ने तो दीदी को शाम वाली दवा ही नहीं दी है. वह बोली, "अभी मैं तुम्हारे घर नहीं जा सकूंगी, लेकिन वादा करती हूं कि कल दीदी को खाना खिला कर और दवा दे कर जरूर चलूंगी."

"लेकिन उस समय तो मैं औफिस में रहूंगा," हितेश निराश हो कर बोला.

"अच्छा, दीदी से बात कर के चलती हूं," कह कर रजनी दीदी को फोन मिलाने लगी.

संध्या बोली, "अभी के लिए दवा है. रात में जरूरत पड़ेगी. तुम किस के यहां जा रही हो? देखो, यह दिल्ली है. अनजान जगह पर मत जाना."

"आप चिंता मत करो दीदी. मेरी एक पुरानी दोस्त मिल गई है, उस से मिल कर तुरंत लौटूंगी. उस का अस्पताल के पास ही घर है. वह अपने मातापिता के साथ रहती है."

रजनी को झूठ बोलते देख कर हितेश ने उसे टोका, "रजनी, अपनी दीदी से झूठ मत बोलो. इस से तुम कभी भी धोखा खा सकती हो. सच तो यह है कि तुम मेरे बारे में भी ठीक से नहीं जानती हो."

"तुम ठीक कहते हो हितेश. किसी के बारे में इतनी जल्दी अंदाजा लगाना बहुत मुश्किल है. मैं दीदी को तुम्हारे बारे में सबकुछ बता कर ही अब तुम्हारे घर चलूंगी."

हितेश ने फिर रजनी से अपने घर चलने के लिए नहीं कहा, पर उसे छोड़ने अस्पताल तक जरूर आया.

हितेश ने कहा, "आज मैं तुम्हारी दीदी से मिले बिना नहीं जाऊंगा."

रजनी ने कहा, "चलो, तुम्हारा परिचय मैं उन से खुद करवाऊंगी."

जब संध्या ने हितेश को रजनी के साथ देखा, तो उस ने पूछा, "यह कौन है रजनी?"

रजनी बोली, "दीदी, यह हितेश है. उस दिन मैं अस्पताल आ रही थी, तब आटोरिकशा वाले ने मुझे अकेली और अनजान समझ कर किराए से दोगुना भाड़ा मांगा था. जब मैं ने इस बात का विरोध किया, तो उस ने जानबूझ कर मुझे एक सुनसान रास्ते पर छोड़ दिया.

"तब मैं ने इस से ही लिफ्ट ली थी. यह भी नीलेश के ही औफिस में काम करता है. आज अचानक रास्ते में मिल गया. उस दिन भी आप से मिलने आया था, लेकिन नीलेश ने बाहर से ही लौटा दिया था.

"हितेश बहुत जिद कर रहा है. कल मैं इस के मातापिता से मिलने जा सकती हूं? इस की एक बहन भी है. उस के साथ मेरा मन भी लग जाएगा."

"लेकिन, तुम तो अपनी किसी पुरानी सहेली की बात कर रही थी?" संध्या ने कहा, तो रजनी हंसी, "मैं हितेश को ही अपनी पुरानी सहेली बता रही थी दीदी."

आज रजनी को इतनी खुश देख कर संध्या भी बहुत खुश थी. बहुत दिनों के बाद ऐसा माहौल बना था.

आज किसी काम में बिजी हो जाने के चलते नीलेश अस्पताल नहीं आया था, इसलिए भी हितेश रिलैक्स था. बौस के आगे वह इतना फ्री महसूस नहीं करता.

"अच्छा, हितेश के कल औफिस से लौटने के बाद चली जाना," कह कर संध्या ने माहौल को और खुशनुमा बना दिया.

दूसरे दिन हितेश औफिस से सीधे

अस्पताल आया. अभी तक नीलेश नहीं आया था. जब से संध्या को होश आया था और रजनी यहां आई थी, वह अपने घर से फ्रैश हो कर आता था.

रजनी हितेश के घर गई और उस की मां से मिली. उस के पिताजी किसी काम से बाजार गए थे. हितेश की बहन रेखा कोई पत्रिका पढ़ रही थी.

हितेश के साथ रजनी को देख कर रेखा ने मुसकराते हुए उस का स्वागत किया और उसे ड्राइंगरूम में ले जाते हुए बोली, "आओ, तुम्हीं रजनी हो न... तुम्हारे बारे में भैया पहले ही बता चुका है. तुम्हारी दीदी अब कैसी हैं?"

"जी, ठीक हैं. अभी डाक्टर उन्हें घर ले जाने की इजाजत नहीं दे रहे हैं. मैं तुम्हारे भैया की शुक्रगुजार हूं. उस ने मुझे उस सुनसान रास्ते से अस्पताल न पहुंचाया होता, तो मैं काफी परेशान हो जाती."

"पता नहीं उस दिन की एक छोटी सी मुलाकात में ही तुम ने भैया पर कौन सा जादू कर दिया कि उस दिन के बाद से वह हर वक्त तुम्हारा ही नाम लेता है."

"कुछ चायनाश्ते का भी इंतजाम करोगी या बातों की ही मिठाई खिलाती रहोगी," हितेश ने कहा, तो रेखा उस के लिए चायनाश्ते का इंतजाम करने रसोईघर में चली गई.

हितेश रजनी के पास मां को बैठा कर कपड़े बदलने चला गया.

हितेश की मां ने सोफे पर बैठते हुए पूछा, "तुम लोग कहां के रहने वाले हो बेटी?"

"कानपुर के मांजी."

"तुम्हारे पिताजी क्या करते हैं?"

"अब वे नहीं हैं."

"और मां?"

"अब वे भी नहीं रहीं," रजनी ने उदास हो कर कहा.

"सौरी बेटी, मैं ने तुम्हारे दिल को दुखाया," मांजी ने अफसोस जताते हुए पूछा, "अब तुम क्या करती हो?"

"कानपुर के एक कालेज से एमए कर रही हूं."

"और तुम्हारी दीदी... ?"

"अब रहने दो मां, तुम तो ऐसे इंटरव्यू ले रही हो जैसे भैया के लिए लड़की देखने आई हो," रेखा रसोईघर से पनीर के पकौड़े ले कर आई और उसे सैंटर टेबल पर रखते हुए बोली.

मां झेंप सी गईं.

"मां, रजनी की दीदी दिल्ली में ही एक कालेज में लैक्चरर हैं. उन्हीं को ब्रेन हैमरेज हुआ है," रेखा बोली.

"अच्छा, तो हितेश इसी लड़की के बारे में बराबर चर्चा करता रहता है."

"हां मां, इतनी सुंदर लड़की कभीकभार ही नजर आती है," हितेश पास आते हुए बोला.

"देखना भैया, नजर न लगाना भाभी पर," रेखा पकौड़े की प्लेट रजनी की ओर बढ़ाते हुए कह कर मुसकराई.

"बेटी, इन दोनों की बातों का बुरा न मानना. दोनों भाईबहन ऐसे ही मजाक में कुछ का कुछ बोल देते हैं," मांजी ने कहा.

रजनी यह नहीं जानती थी कि हितेश उस के प्रति इतना लगाव रखता है. सच तो यह था कि वह उसे बिलकुल भूल गई थी. अगर पिछली शाम उस की अचानक हितेश से मुलाकात न होती तो वह उस के जेहन में भी नहीं आता. लेकिन इतना हंसमुख परिवार और घर का खुला माहौल उसे आकर्षित करने लगा था. उसे लगा जैसे वह अपने ही घर में है.

रेखा का मां से कहना कि वे उस से ऐसे पूछ रही हैं जैसे लड़की देखने आई हों और उस का भाई से यह कहना कि देखना, नजर न लग जाए भाभी को...

आखिर क्या कहना चाहती है रेखा? क्या ये लोग बातोंबातों में यह बताना चाहते हैं कि हितेश उस से शादी करना चाहता है? पर वह अभी हितेश को ठीक से जान भी नहीं पाई है. न हितेश ही उस के बारे ठीक से जानता है.

जो भी हो, रजनी इस पचड़े में पड़ना नहीं चाहती थी, इसलिए कुछ समय तक हितेश के परिवार से इधरउधर की बातें कर के वह वहां से जाने की इजाजत मांगने लगी.

"थोड़ी देर और रुक जाओ बेटी, हितेश के पापा आते ही होंगे. उन से भी मिल लेना," हितेश की मां बोलीं, तो वह रुक गई. वैसे भी वह दीदी को सारी दवाएं दे आई थी. उन के नाश्ते का भी इंतजाम कर दिया था, पर दीदी ने जाते वक्त उसे हिदायत दी थी कि जल्दी आना, पता नहीं कब क्या जरूरत पड़ जाए.

जब हितेश के पिताजी घर आए तो रजनी ने उन्हें नमस्ते किया और थोड़ी ही देर में जाने के लिए उठने लगी.

हितेश के पिताजी ने कहा, "बैठो, तुम्हीं रजनी हो न? हितेश बोल रहा था, तुम्हारी दीदी को ब्रेन हैमरेज हो गया है.

"अभी मैं कुछ देर बाद घर लौटता, लेकिन हितेश की मां का फोन आया कि तुम आई हो तो कहीं नहीं रुका और सीधा घर चला आया."

रजनी समझ नहीं पा रही थी कि इस घर के सभी लोग उस में इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहे हैं?

रजनी बोली, "जी, मैं ही रजनी हूं और मेरी ही दीदी को ब्रेन हैमरेज हुआ है."

"कुछ देर और बैठो बेटी, मैं हितेश से बोल देता हूं, वह तुम्हें अस्पताल छोड़ आएगा."

"ठीक है बाबूजी," रजनी फिर सोफे पर बैठते हुए बोली.

"अच्छा बेटी, तुम्हारे मातापिता कैसे हैं?"

"वे दोनों ही यह दुनिया छोड़ चुके हैं," कह कर रजनी सोचने लगी, 'कितनी बार मैं इन लोगों को अपने घर का हालचाल बताती रहूंगी.'

"अब जाऊं बाबूजी, काफी देर से बैठी हूं. दीदी चिंता कर रही होंगी," रजनी ने कहा.

"अच्छा बेटी, जाओ. तुम्हारी दीदी से मैं भी मिलूंगा. अब तो वे ही घर की कर्ताधर्ता हैं."

"जी, बाबूजी."

हितेश ने जब रजनी को अस्पताल छोड़ा, तब उस ने राहत की सांस ली.

हितेश के जाने के बाद रजनी ने संध्या से कहा, "जानती हो दीदी, हितेश के परिवार के सभी लोग अच्छे हैं. मुझे तो लगा, वे तुरंत मुझे अपने घर की बहू ही बना लेंगे."

संध्या मुसकराई, "तो क्या बुरा है, हितेश देखने में स्मार्ट लड़का है."

"क्या दीदी, तुम भी चाहती हो कि मुझ से जल्दी से पिंड छूट जाए."

"नहीं रे पगली, मेरा बस चले तो मैं तुम्हें हमेशा अपनी पलकों पर बैठा कर रखूं. उन्हींने ऐसा क्या कर दिया कि तुम खुशी के मारे इतनी फूली हुई हो?"

"सब मेरे घर का हालचाल लेने लगे... हितेश की बहन ने तो मुझे भाभी तक कह दिया."

"हो सकता है, वह मजाक कर रही हो. इस बात को इतना सीरियस लेने की जरूरत नहीं है."

लेकिन एक दिन जब हितेश के पिताजी संध्या से मिलने आए, तो उन्होंने अपने मन की बात कह ही दी. उस समय रजनी भी वहीं थी.

रजनी बोली, "बाबूजी, अभी तो दीदी की ही शादी नहीं हुई है. मैं तो अभी इस के बारे में सोच भी नहीं सकती."

"लेकिन बेटी, अगर तुम्हें हितेश पसंद है, तो हमें कभी भी तुम्हें बहू बनाने में खुशी होगी. जिस दिन तुम हितेश से पहली बार मिली थीं, तभी से घर में तुम्हारी बराबर चर्चा हो रही है."

"अब यह हितेश और रजनी का आपसी मामला है बाबूजी. अगर वे इस रिश्ते के लिए राजी हैं, तो मुझे भी कोई एतराज नहीं है," संध्या ने कहा, तो हितेश के पिताजी बोले, "हितेश की जिद पर मैं तुम से गुजारिश कर रहा हूं बेटी."

उस समय हितेश वहां नहीं था. वह अपने पिताजी को अस्पताल छोड़ कर औफिस चला गया था.

रजनी ने अपनी दीदी की शादी और अपने कैरियर का हवाला देते हुए इस रिश्ते से इनकार कर दिया.

अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद संध्या को रजनी के साथ अपने क्वार्टर जाना था. उस ने अस्पताल के सारे बिल भर दिए और नीलेश द्वारा खर्च किए गए पैसे भी उसे लौटा दिए.

नीलेश ने इस का बुरा नहीं माना. सच तो यह था कि अब उसे संध्या की जरूरत ही नहीं थी. उस का अपने ही औफिस की एक लेडी कलीग से अफेयर चल रहा था, लेकिन वह संध्या को एकदम से छोड़ना भी नहीं चाहता था.

नीलेश जानता था कि अपने फ्लैट में पहुंचते ही उस का ध्यान अपने बैडरूम और उस में पड़े कंडोम के डब्बे और शराब की बोतलों पर आएगा और उस की पोल खुल जाएगी, इसलिए उस ने

संध्या को अपने क्वार्टर तक जाने के लिए एक कैब बुला दी और किसी जरूरी मीटिंग का बहाना कर के अपनी गाड़ी से ऑफिस लौट गया.

संध्या जब रजनी के साथ फ्लैट पर पहुंची, तो सब से पहले बैडरूम में ही गई. जाते ही उसे लगा, जैसे कोई उस के बैड पर उस की गैरहाजिरी में सोया था, क्योंकि जिस दिन वह बीमार हुई थी, उस दिन वह रात में बैड पर सोई ही नहीं थी. तकरीबन 10 बजे उस के सिर में दर्द शुरू हुआ, तो वह टैलीविजन चला कर बैठ गई थी.

पर जब दर्द बढ़ने लगा, तब संध्या सोफे पर ही लेट गई. आखिर में जब उसे दर्द बरदाश्त नहीं हुआ, तब नीलेश को फोन लगाया था. मतलब, इस तरह बैड पर सिलवटें पड़ने का सवाल ही नहीं उठता था.

इस के बाद संध्या की नजर कंडोम और शराब की बोतलों पर पड़ी, तो वह भड़क उठी. उस ने रजनी से पूछा, "यह सब क्या है रजनी? मेरे बीमार होने के बाद तुम्हारे और नीलेश के अलावा तो कोई यहां आया ही नहीं था."

"हां दीदी, मैं भी तो यही जानना चाहती हूं कि जब हम दोनों के अलावा यहां कोई आया ही नहीं था, तो फिर यह सब कैसे हुआ?"

फिर थोड़ी देर रुक कर रजनी बोली, "क्या तुम यह कहना चाहती हो कि यह सब हम दोनों ने ही मिल कर किया है?"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं सोच रही हूं, लेकिन नीलेश ठीक आदमी नहीं है."

"तो फिर दीदी नीलेश से तुम्हारा क्या रिश्ता है? जब वह ठीक आदमी नहीं है, तो तुम क्यों उस से संबंध बनाए हुए हो? कुछ लोग तुम दोनों के बारे में कानाफूसी क्यों कर रहे हैं?"

"अब तू चुप रह. मुझे यह बता कि यह सामान यहां कहां से आया?" उस की बात बीच में ही काटते हुए संध्या झुंझला कर बोली.

सचाई तो यह थी कि संध्या रजनी के इन अचानक हुए सवालों को सुन कर बौखला गई थी, क्योंकि यह उस की ऐसे नब्ज को छू गया था, जो पहले से ही उसे टीस दे रहा था.

"यही तो मैं ने नीलेश से भी पूछा था, पर उस ने कहा कि इस बारे में तो तुम्हीं कुछ बता सकती हो."

"झूठ बोल रहा था वह. उसी ने यहां अपने उस लेडी कलीग को बुलाया होगा, जिस के बारे में उस के ऑफिस का हर इनसान जानता है. उसी को ले कर उस की पत्नी सुधा से उस की कई बार बकझक हुई है."

"तुम नहीं जानती दीदी कि तुम ने आदमी के रूप में एक भेड़िए से संबंध बना रखा है. यह नीलेश की ही कारिस्तानी है. उस दिन जब वह तुम्हारे बैडरूम को साफ करने लगा, तब मैं ने मना कर दिया, ताकि तुम समझ सको कि नीलेश की असलियत क्या है."

संध्या चुप हो गई. अब उस के पास इस बात का कोई जवाब नहीं था. हकीकत तो यही थी कि उस का नीलेश से नाजायज रिश्ता था और वह खुद को ही नहीं, बल्कि नीलेश की पत्नी को भी धोखा दे रही थी, पर अगर नीलेश उस रात उसे तुरंत अस्पताल नहीं पहुंचाता, तो उस का बचना मुश्किल हो जाता इसलिए उस का एहसान मानने के लिए वह मजबूर थी.

संध्या जब कुछ नहीं बोली, तो उस से कुछ और पूछने का कोई मतलब ही नहीं था, लेकिन रजनी अपनी दीदी को अब अकेला नहीं छोड़ना चाहती थी.

अगर दीदी अकेली नहीं होतीं, तो नीलेश के फरेब में कभी नहीं फंसतीं, इसलिए रजनी ने कहा, "दीदी, आप यहां अकेली रहती हो, मैं वहां अकेली. अगर हम दोनों एकसाथ रहतीं तो उस दिन तुम्हें नीलेश को फोन करने की जरूरत नहीं पड़ती, इसलिए अब मैं भी यहीं रहना चाहती हूं."

संध्या ने कहा, "अभी तुम्हारा एमए फाइनल है. अब तुम्हारे इम्तिहान भी होने वाले हैं. इम्तिहान दे कर तुम यहीं आ जाना और फिर या तो किसी नौकरी के लिए तैयारी करना या किसी प्रोफैसर के अंडर पीएचडी कर लेना, उस के बाद किसी कालेज में लैक्चरर की नौकरी मिल सकती है."

"ठीक है. लेकिन दीदी, आगे से नीलेश से संबंध मत रखना. उस की नजर मेरे प्रति भी ठीक नहीं है."

(क्रमशः)

छम्मक-छल्लो
Rajesh na
एक दिन पार्क में...
छम्मक डार्लिंग, मुझे लगता है कि किसी पेड़ पर अपने आशिक का नाम लिखने से अच्छा है, उस के नाम का एक पेड़ लगा दो.
बिलकुल सही कहा. मैं ने तो बहुत पहले ऐसा किया है.
बहुत बढ़िया. किस के नाम का पेड़ लगाया?
बताओ न छम्मक?
छोड़ो न...
जब मैं अपने बौयफ्रैंड्स की लिस्ट बनाने लगी, तो आखिर में एक खेत में धान बो दिए.
आयं...

क्या हितेश के परिवार वाले वाकई रजनी को अपने घर की बहू बनाना चाहते थे? क्या संध्या ने नीलेश से दूरी बना ली थी? पढ़िए अगले अंक में...

गरीबी और तंगहाली पर भारी

माहवारी

मदन कोथुनियां

ग़लिश की एक मशहूर कहावत है, 'हैल्थ इज वैल्थ'. मतलब, सेहत ही कामयाबी की कुंजी है. पर अगर हम गरीब, तंगहाल लोगों की जांचपड़ताल कर के देखेंगे तो पाएंगे कि शायद वे अपनी जरूरी चीजों का इस्तेमाल नहीं कर पा रहे हैं.

सब से पहले गरीब समुदाय के लोग अपने पेट की पूजा करते हैं, फिर रहने का जुगाड़ देखते हैं और इस सब में सेहत का तो दूरदूर तक कोई नाम ही नहीं होता है.

गरीबों को जितने पैसे मिलते हैं, वे खाने और रहने में ही खर्च हो जाते हैं. सब से ज्यादा औरतें इन हालात की शिकार बनती हैं, जबकि औरतों को मर्दों से ज्यादा डाक्टरी मदद की जरूरत पड़ती है, चाहे वह जंचगी हो या बच्चे को दूध पिलाना या फिर माहवारी का मुश्किल समय.

माहवारी के दौरान कम आमदनी वाले या गरीब परिवार की औरतें ज्यादा संघर्ष करती हैं. औरतें ऐसे समय में होने वाले दर्द के लिए दवाएं, यहां तक कि अंदरूनी छोटे कपड़ों की कमी के चलते एक जोखिमभरी जिंदगी जीती हैं.

गरीबी इनसान को अंदर तक तोड़ देती है. न जाने कितनी ही औरतें घातक बीमारियों की शिकार बनती हैं और उन की जिंदगी तक खत्म हो जाती है, जो बहुत तकलीफदेह है. कई बार ज्यादा खून बहने से औरतों को कई समस्याएं पैदा हो जाती हैं. पैसों की कमी के चलते उन्हें पूरी तरह से डाक्टरी इलाज तक नहीं मिल पाता है.

गरीबी में माहवारी एक बड़ी समस्या है. इस बारे में मैं ने 20 औरतों से सवाल पूछने की तैयारी की, लेकिन महज 2 औरतों ने सवाल पूछने की इजाजत दी. मैं ने उन से कहा कि मैं अपनी महिला साथी को भी लाया हूं, आप अगर उन के साथ बात करने में सहमत हैं तो वे आप से बात कर सकती हैं, मगर उन्होंने साफ मना कर दिया.

जयपुर की घाटगेट कच्ची बस्ती में रहने वाली बबीता बताती हैं, "मैं महीने के दिनों में काफी ज्यादा दर्द महसूस करती हूं और साथ ही साथ पति और सासससुर की झाड़ भी झेलती हूं. इस से अच्छा तो मैं पेट से होने में महसूस करती हूं, जब मेरा महीना नहीं आता है.

"मैं महीने के आने से इतना डर गई हूं कि मुझे अगर पूरे साल महीना न आए और मैं पेट से रहूं तो मुझे कोई परेशानी नहीं."

जब रबीना नाम की एक औरत से पूछा गया कि वे माहवारी के दौरान किस तरह अपनी देखभाल करती हैं? तो उन्होंने बताया, "मेरे पास अंदर पहनने के लिए बस एक ही लंगोटी है. मेरे घर में पैसों की कमी की वजह से खाना तो पेटभर मिल नहीं पाता है, ऐसे में हम अंदर पहनने वाले कपड़े कहां से लेंगे.

"पैड तो दूर की बात है, उसे बिलकुल छोड़िए सर. खाने को 2 रोटी मिल जाएं, वही बहुत हैं. मैं डरती हूं कि मेरी लड़की की उम्र अभी 9 साल है. जब उस की माहवारी शुरू होगी, तो मैं उसे कैसे संभालूंगी?

"मेरे पेशाब की जगह पर बड़ेबड़े फोड़े हो जाते हैं, जिन में से गंदी बदबू आती है. मेरा शौहर तो मेरे पास आना दूर मेरे हाथ का बना खाना नहीं खाता. मैं एक ही कपड़ों में 5-7 दिन गुजारती हूं. माहवारी के दिनों में मैं दंग से खाना भी नहीं खा सकती. मुझे चक्कर आते हैं."

"हमें तो ओढ़नेबिछाने को कपड़े मिल जाएं वही बहुत है. 'उन दिनों' के लिए कपड़ा कहां से जुटाएं..." यह कहते हुए जयपुर के गलता गेट के पास सड़क पर बैठी सीमा की आंखों में लाचारी साफ देखी जा सकती है.

सीमा आगे कहती हैं, "हम माहवारी को बंद नहीं करा सकते, कुदरत पर हमारा कोई बस नहीं है. जैसेतैसे कर के इसे संभालना ही होता है. इस समय हम फटेपुराने कपड़ों, अखबार या कागज से काम चलाते हैं."

सीमा के साथ 3 और औरतें बैठी थीं, जो मिट्टी के छोटे से चूल्हे पर आग जला कर चाय बनाने की कोशिश कर रही थीं. जब उन के बच्चे आसपास से सूखी टहनियां और पौलीथिन ला कर चूल्हे में डालते थे, तो आग की लौ थोड़ी तेज हो जाती थी.

बैसे, थोड़ी बातचीत के बाद ये औरतें सहज हो कर बात करने लगी थीं. वहीं बैठी रीना ने मुड़ कर अगलबगल देखा कि कहीं कोई हमारी बात सुन तो नहीं रहा, फिर धीमी आवाज में बोलीं, "मेरी बेटी तो जिद करती है कि वो पैड ही इस्तेमाल करेगी, कपड़ा नहीं. पर जहां दो टाइम का खाना मुश्किल से मिलता है और सड़क किनारे रात बितानी हो, वहां हर महीने सैनेटरी नैपकिन खरीदना हमारे बस का नहीं."

थोड़ी दूर दरी बिछा कर लेटी पिंकी से बात करने पर उन्होंने कहा, "मैं तो हमेशा कपड़ा ही इस्तेमाल करती हूं. दिक्कत तो बहुत होती है, लेकिन क्या करें... ऐसे ही चल रहा है. चमड़ी छिल जाती है और दाने हो जाते हैं. तकलीफें बहुत हैं और पैसों का अतापता नहीं."

ऐसी बेघर, गरीब और दिहाड़ी पर काम करने वाली औरतों के लिए माहवारी का समय कितना मुश्किल होता होगा? इस सवाल पर बात करते हुए जयपुर के महिला चिकित्सालय में तैनात गायनी कृष्णा कुंडरवाल बताती हैं, "मैं जानती हूं कि गरीब औरतों के पास माहवारी के दौरान राख, अखबार की कतरनें और रेत का इस्तेमाल करने के सिवा और कोई दूसरा रास्ता नहीं है. पर यह सेहत के लिए कितना खतरनाक है, बताने की जरूरत नहीं है."

वहीं दूसरी ओर नैशनल फैमिली हैल्थ सर्वे (2019-20) की एक रिपोर्ट के मुताबिक, गांवदेहात के इलाकों में 48.5 फीसदी औरतें और लड़कियां सैनेटरी नैपकिन का इस्तेमाल करती हैं, जबकि शहरों में 77.5 फीसदी औरतें और लड़कियां ऐसा करती हैं. कुलमिला कर देखा जाए, तो 57.6 फीसदी औरतें और लड़कियां ही इन का इस्तेमाल करती हैं.

औरतों से बात करने के बाद हमें 2 ऐसी समस्याओं का पता लगा, जिन से शायद हर कोई अनजान ही होगा. इस सर्वे को करते समय कई बातें सीखने को मिलीं. यहां पर सब से ज्यादा जरूरी है लोगों को जागरूक करना. इस की साफसफाई पर ध्यान देना और उपाय बताने के लिए लोगों को तालीम देना.

अगर लोगों को माहवारी के बारे में जागरूक करना शुरू नहीं किया गया, तो इस के अंजाम बहुत ही दयनीय हो सकते हैं. माहवारी के समय सही से साफसफाई का पालन न करना कई तरह की बीमारियों को न्योता देता है.

दरअसल, जिस ने गरीबी के साथ जिंदगी गुजारी है, उस को मालूम होता है कि मूलभूत सुविधाओं के बिना जिंदगी कितनी मुश्किल है. संविधान के मुताबिक सभी को ये सुविधाएं मिलनी चाहिए, लेकिन यहां ठीक से खाना तक तो मिलता नहीं है, सैनेटरी पैड कहां से मुहैया होंगे. ●

खेल का मैदान
कहीं जीता दिल कहीं किया शर्मसार

सुनील शर्मा

शनिवार, 12 जून, 2021 को फुटबाल के 'यूरो कप' में अपने पहले मुकाबले में कमजोर फिनलैंड ने डैनमार्क को 1-0 से हरा दिया. पर इस फुटबाल मैच की जो सब से अहम घटना थी, वह डैनमार्क के शानदार खिलाड़ी क्रिश्चियन ऐरिक्सन से जुड़ी थी. दरअसल, मैच के हाफ टाइम से ठीक पहले वे मैदान में अचानक गिर कर बेहोश हो गए थे.

क्रिश्चियन ऐरिक्सन डैनमार्क के आक्रामक मिडफील्डर के तौर पर मशहूर हैं और उन्हें मैदान पर ऐसे पड़ा देख कर उन की टीम के सदस्य रोने लगे थे. डैनमार्क के फैन भी गमगीन थे.

यह हादसा देख कर अचानक खयाल आया कि 29 साल का इतना ज्यादा फिट इनसान देखतेदेखते कैसे उन हालात में जा सकता है कि उस के बचने की उम्मीद अचानक धुंधली पड़ती जाए? पर वहां मौजूद डाक्टरों की टीम ने कमाल का काम किया.

इसी बीच डैनमार्क के खिलाड़ियों ने घेरा बना कर जमीन पर पड़े ऐरिक्सन का मानो सुरक्षा कवच बना लिया था, हालांकि उन के चेहरे क्रिश्चियन ऐरिक्सन की विपरीत दिशा में थे.

डाक्टरों ने तो मानो अपना पूरा जोर लगा दिया था. उन्होंने क्रिश्चियन ऐरिक्सन की जोरजोर से छाती दबाई... और भी कई जरूरी तरीके अपनाए, पर डैनमार्क टीम के खिलाड़ियों के आंसू बता रहे थे कि हालात बेहद चिंताजनक हैं. लेकिन सब से अच्छी बात तो यह थी कि दर्शकों और मैदान पर जमा दूसरे लोगों ने घटनास्थल के पास कोई मजमा नहीं लगाया.

वहां से थोड़ी दूर एक महिला भी मैदान पर थीं, जिन्हें डैनमार्क के कुछ खिलाड़ी दिलासा दे रहे थे. वे शायद क्रिश्चियन ऐरिक्सन की पत्नी थीं और रोए जा रही थीं. यह एक ऐसा सीन था, जिसे खेल के मैदान पर कोई नहीं देखना चाहेगा.

उधर डाक्टरों की टीम अपने काम में जुटी हुई थी. चिकित्सा का पूरा तामझाम डाक्टर ले आए थे, पर जब उन्हें लगा कि अब क्रिश्चियन ऐरिक्सन को अस्पताल ले जाना पड़ेगा, तो उन्होंने वही किया. तब तक क्रिश्चियन ऐरिक्सन बेहोश थे और मैडिकल इमर्जेंसी के चलते मैच को निलंबित कर दिया गया था.

काफी देर के बाद टूर्नामेंट के आयोजक यूईएफए ने जानकारी दी कि क्रिश्चियन ऐरिक्सन को होश आ गया है और उन की हालत फिलहाल 'स्थिर' है. यह खबर सुखद थी.

दोनों टीमों से बात कर के कुछ देर बाद मैच फिर से शुरू हुआ. पर तब तक शायद डैनमार्क के खिलाड़ियों की लय बिगड़ चुकी थी, जिस के चलते यह मैच फिनलैंड ने 1-0 से अपने नाम कर लिया.

मैच खत्म होने के बाद डैनमार्क की टीम के हैड कोच कैस्पर हेजुलमैन ने कहा, "यह टीम के लिए बेहद मुश्किल शाम थी, जब हम सभी को इस बात का अहसास हुआ कि जिंदगी में सब से अहम चीज रिश्ते हैं. हम ऐरिक्सन और उन के परिवार के साथ हैं."

यूईएफए के अध्यक्ष एलैक्जैंडर चैफरीन ने कहा, "इस तरह के बाकिए आप को एक बार फिर जिंदगी के बारे में सोचने का मौका देते हैं. इस तरह के बाकिए बताते हैं कि फुटबाल खेल के परिवार में कितनी एकता है. मैं ने सुना दोनों टीमों के फैंस ऐरिक्सन का नाम ले रहे थे. ऐरिक्सन बेहतरीन खिलाड़ी हैं और बेहतरीन फुटबाल खेलते हैं.

"पर, मैं साथ में उन डाक्टरों की टीम की तारीफ भी करूंगा, जिस ने बिना देरी किए ऐरिक्सन को बचाने के लिए हर मुमकिन तरीका अपनाया और एक बेहतरीन खिलाड़ी को नई जिंदगी दी."

पर एक और टीम खेल क्रिकेट में हुई एक घटना ने क्रिकेट प्रेमियों को शर्मिंदा कर दिया. हुआ यों कि क्रिकेट की ढाका प्रीमियर लीग में शुक्रवार, 11 जून, 2021 को खेले गए एक ट्वैंटी20 मैच के दौरान बंगलादेशी खिलाड़ी शाकिब अल हसन अंपायर से भिड़ पड़े थे और गुस्से में स्टंप्स पर भी लात मारते हुए दिखाई दिए थे.

इस घटना के गवाह एक वीडियो में दिखा कि शाकिब अल हसन ने दूसरी टीम के बल्लेबाज मुशफिकुर रहीम के खिलाफ अपनी गेंदबाजी पर एलबीडब्ल्यू की अपील की और जब अंपायर ने नौटआउट करार दिया, तो उन्होंने पहले स्टंप्स पर लात मारी और फिर अंपायर से भी भिड़ गए.

लेकिन बाद में शाकिब हल हसन को हालांकि, शाकिब अल हसन ने अपने इस बरताव के लिए माफी मांगते हुए सोशल मीडिया पर लिखा था, 'प्रिय फैंस और फौलोवर, मैं अपना आपा खोने और इस तरह से सभी से मैच को बरबाद करने के लिए माफी मांगता हूं, खासतौर पर उन लोगों से जो घर पर बैठ कर यह मुकाबला देख रहे थे.

'मेरे जैसे एक अनुभवी खिलाड़ी को इस तरह का बरताव नहीं करना चाहिए, लेकिन कभीकभी दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से ऐसा हो जाता है. मैं टीमों से, मैनेजमैंट से, टूर्नामैंट के औफिशिल्स से और टूर्नामैंट के आयोजकों से इस भूल के लिए माफी मांगता हूं. उम्मीद है कि भविष्य में मैं इस तरह का बरताव फिर कभी नहीं करूंगा. धन्यवाद और सभी को प्यार.'

माना कि खेल के मैदान पर हारजीत के तनाव में खिलाड़ी आपा खो देते हैं, पर शाकिब अल हसन का गुस्सा होना ही यह सब करना भारी पड़ गया. उन के खराब बरताव के लिए उन्हें ढाका प्रीमियर लीग में 4 मैचों के लिए बैन कर दिया गया और 4 लाख रुपए से ज्यादा का जुर्माना भी लगाया गया.

और वह भी इस हद तक कि पहले विकेट पर लात दे मारी और फिर अंपायर पर ही चढ़ गए, कहीं से जायज नहीं था. उन का बाद में माफी मांगना यह साबित करता है कि उन की हरकत स्कूली क्रिकेट के किसी खिलाड़ी को तरह बचकानी थी, जो विकेट न मिलने पर ऐसा बरताव करे.

फुटबाल और क्रिकेट जैसे टीम खेल में अपने साथियों के साथसाथ विरोधी टीम के खिलाड़ियों और मैदान पर मौजूद अंपायर या रैफरी के साथ अच्छा बरताव करना बहुत जरूरी होता है.

आपा खोया नहीं कि लेने के देने पड़ जाते हैं. अगर क्रिश्चियन ऐरिक्सन वाले मामले में डाक्टरों की टीम भी अपना आपा खो देती तो शायद वह एक उम्दा खिलाड़ी की जान नहीं बचा पाती, जो खेल जगत के लिए कभी न भर पाने वाला नुकसान होता. ●

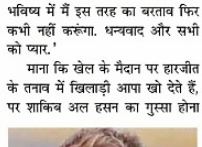
क्रिश्चियन ऐरिक्सन

शाकिब अल हसन

लोग हैं कि जीने नहीं देते

सुनील शर्मा

साल 1991 में आई फिल्म 'लम्हे' एक ऐसी प्रेम कहानी थी, जिसे भारतीय दर्शकों ने सिरे से नकार दिया था. वजह, हीरो अनिल कपूर श्रीदेवी से प्यार करता है, पर वह किसी दूसरे आदमी से शादी कर लेती है.

बाद में जब श्रीदेवी और उस के पति की मौत हो जाती है तो उन की बेटी, जो श्रीदेवी ही है, अपने से कहीं ज्यादा बड़े अनिल कपूर से प्यार करने लगती है. पहले तो अनिल कपूर को श्रीदेवी की यह हरकत बचकानी लगती है, पर आखिर में वह उस से शादी कर लेता है.

दर्शकों को यही बेमेल प्यार रास नहीं आया और उन्होंने यश चोपड़ा की इस बेहतरीन फिल्म को उतनी ज्यादा कमाई नहीं करने दी, जितनी उम्मीद की जा रही थी. हालांकि, इस फिल्म को नैशनल अवार्ड के साथसाथ 5 फिल्म फेयर अवार्ड भी मिले थे.

यह तो हुई फिल्मी बात और कई साल पुरानी भी, पर आज जब हम और ज्यादा एडवांस हो गए हैं, तब भी ऐसे किसी बेमेल प्यार को मन से स्वीकार नहीं कर पाते हैं.

अर्जुन कपूर और मलाइका अरोड़ा को ही ले लें. मलाइका अरोड़ा तलाकशुदा हैं और उम्र में अर्जुन कपूर से बड़ी हैं, इस के बावजूद वे दोनों साथ हैं. पर जनता है कि उन्हें जीने नहीं देती है. हाल ही में जब वे दोनों एक फोटो में साथसाथ दिखे, तो लोगों ने उन्हें सोशल मीडिया पर खूब भलाबुरा कहा.

दरअसल, किसी ने अर्जुन कपूर और मलाइका अरोड़ा के एक फोटो को अपने इंस्टाग्राम पर शेयर किया था, जिस में वे दोनों कार में बैठते दिख रहे थे. इस फोटो पर लोगों ने इतने घटिया कमैंट्स किए कि बहुत से मैसेज को तो पढ़ा भी नहीं जा सकता.

इस जोड़े को 'चप्पल से मारने' की बात लिखी गई, तो कुछ ने अर्जुन कपूर को 'घर तोड़', 'बुड्ढी के साथ अर्जुन बुड्ढा हो गया', 'मांबेटे' जैसे घटिया कमैंट्स किए.

भले ही मलाइका अरोड़ा विदास हो कर अपनी जिंदगी जीती हैं और लोगों की वाहियात बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं देती हैं, पर उन में भी एक औरत का दिल है और साथ ही वे मां भी हैं, इसलिए ऐसी बातों का उन के मन पर बुरा असर जरूर पड़ता है, तभी तो उन्होंने एक इंटरव्यू में बताया था कि आज भी भारतीय समाज में तलाकशुदा औरत का आगे बढ़ना बहुत मुश्किल है, जबकि मर्दों के लिए नए रिश्ते में जाना और नौमर्ल जिंदगी जीना बहुत आसान है.

मलाइका अरोड़ा की यह बात सौ फीसदी सच है कि भारतीय दकियानूसी समाज में किसी तलाकशुदा औरत का अपने मन से जिंदगी गुजरना बड़ा ही मुश्किल काम है. पर हमारे यहां तो उस औरत को भी ताने सुना दिए जाते हैं, जो न तो तलाकशुदा है और न ही बिना शादी किए किसी मर्द के साथ रहती है.

प्रियंका चोपड़ा और निक जोनस

खूबसूरत हीरोइन प्रियंका चोपड़ा की शादी को भी लोग आज तक नहीं पचा पाए हैं. उन्होंने हौलीवुड के पौप स्टार और फिल्म कलाकार निक जोनस से शादी की थी, जो उम्र में उन से काफी छोटे हैं. लोगों को यह बात भी हजम नहीं हुई और उन्होंने उन्हें 'ग्लोबल स्कैम आर्टिस्ट' कहा, तो कुछ ने इस जोड़ी की 'मांबेटे' से तुलना कर दी. कुछ ने तो यह तक कहा कि पीसी यानी प्रियंका चोपड़ा ने निक जोनस के 'पैसे देख कर' शादी की है.

ऐसी ही कई ऊलजुलूल बातों पर प्रियंका चोपड़ा का कहना है कि अपने से उम्र में छोटे लड़के से शादी करने पर उन्हें आज भी बातें सुनने को मिल जाती हैं. फिलहाल वे खुद को इस से प्रभावित नहीं होने देतीं और अपने व निक के रिश्ते को बेहतर बनाने पर फोकस करती हैं.

ऐसा क्यों होता है कि समाज किसी तलाकशुदा या उम्र में बड़ी औरत या लड़की को अपनी मरजी से जीवनसाथी चुनने की आजादी नहीं देता है, जबकि कानून उन के साथ होता है? यहां पर आजादी से मतलब यह है कि लोगों को दूसरों की जिंदगी में झांकने की इजाजत किस ने दी?

इस सवाल का जवाब यह है कि लोग खासकर मर्द समाज किसी ऐसी औरत या लड़की को हंसते हुए नहीं देख सकता, जो उन की नजर में 'पवित्र' नहीं है. विधवा, तलाकशुदा या उम्र में बड़ी लड़की को इतने ज्यादा गुणों वाला जीवनसाथी कैसे मिल सकता है, यह बात मर्दों को हजम ही नहीं होती है.

एक और मामला देखते हैं, जिस में लड़की न तलाकशुदा है, न विधवा है और न ही उस ने अपने से कम उम्र के मर्द से शादी की है, पर फिर भी लोगों ने सोशल मीडिया पर खूब खरीखोटी सुनाई.

टैलीविजन सीरियल के बाद फिल्मों में अपनी जगह बनाने वाली अंकिता लोखंडे को तो आप जानते ही होंगे, जो एक समय में फिल्म कलाकार सुशांत सिंह राजपूत की गर्लफ्रैंड रही थीं और उन की मौत के बाद वे बहुत दुखी भी हुई थीं.

तब लोगों ने उन की खूब तारीफ की थी, पर बाद में जब अंकिता ने अपने बौयफ्रैंड के साथ सोशल मीडिया पर कुछ तसवीरें शेयर कीं, तब लोगों ने उन्हें आड़े हाथ लेते हुए कहा, 'सुशांत को इतनी जल्दी भूल गईं', 'इसलिए सुशांत ने छोड़ दिया था', 'सब नौटंकी थी क्या?' और भी न जाने क्याक्या सुनाया था.

अगर आज अंकिता लोखंडे अपने प्रेमी के साथ खुश हैं, तो सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद अंकिता का उन के लिए शोक मनाना नौटंकी कैसे हो सकता है? वैसे भी तब उन दोनों के बीच ऐसा कोई रिश्ता नहीं था कि वे किसी तरह की नौटंकी करतीं.

उन्होंने सुशांत के साथ अच्छाबुरा वक्त गुजारा था, जिस की यादें वे जिंदगीभर नहीं भूलेंगी और आगे भी सुशांत को ले कर बोलने के लिए आजाद हैं और उन की यह आजादी सोशल मीडिया के चंद चिरकुट छीन नहीं सकते हैं.

ये वे ही लोग होते हैं, जिन की नजर में कोई मर्द बुढ़ापे में भी सेहरा बांध ले तो वह किसी अबला का सहारा कहलाता है. दिलीप कुमार, राजेश खन्ना, धर्मेंद्र, कबीर बेदी, मिलिंद सोमन, शाहिद कपूर, संजय दत्त में क्या समानता है? इन सब की पत्नी उम्र में इन से काफी छोटी हैं. पर किसी मर्दवादी ने चूं तक नहीं की. मिलिंद सोमन और अंकिता कंवर में तो 29 साल का अंतर है, फिर भी वे दोनों एक हुए.

दिक्कत यह है कि लोग अभिव्यक्ति की आजादी का मतलब यह समझ लेते हैं कि अब उन्हें किसी के बारे में कुछ भी लिखनेबोलने का हक हो गया है. वे सोशल मीडिया को अपने बाप की जागीर मान लेते हैं और जानबूझ कर ऐसा लिखते हैं, जो सामने वाले को चुभे. उन की भाषा भी बाहियात होती है.

जब कभी कोई आहत सैलेब्रिटी उन्हें जवाब देता है या अपना गुस्सा जाहिर करता है तो उन के मानो पैसे वसूल हो जाते हैं. उन्हें लगता है कि वे खुद सैलेब्रिटी बन गए हैं, बदले में चार गालियां पड़ गईं तो क्या फर्क पड़ता है.

पर यह सब होता क्यों है? क्यों लोग फेसबुक, इंस्टाग्राम और ट्विटर वगैरह पर अपनी भड़ास निकालते हैं?

दरअसल, अगर हम अपनी पौराणिक किताबों को खंगालेंगे तो पता चलेगा कि यह तो हमेशा से होता आया है. 'महाभारत' में द्रौपदी को चौसर के खेल में बेच दिया जाता है, तो 'रामायण' में एक अदना से आदमी के कहने पर राम अपनी पत्नी सीता को दोबारा से अकेली वन में भेज देते हैं.

बहुपत्नी का तब रिवाज था. हारा हुआ राजा अपनी बेटी का ब्याह जीते हुए राजा से कर देता था, फिर चाहे उस की उम्र लड़की से कितनी ही ज्यादा क्यों न हो. बाली ने तो अपने छोटे भाई सुग्रीव की पत्नी पर ही कब्जा कर लिया था.

इन बड़ीबड़ी किताबों में विधवा, बांझ औरतों को दुखभरी जिंदगी जीनी पड़ती थी. किसी ने व्यभिचार किया तो सजा मर्द के बजाय औरत को दी जाती थी. ऐसी किताबों का आम जनता पर इतना गहरा असर पड़ा कि भारत में कुछ समय पहले तक विधवा विवाह को अच्छा नहीं माना जाता था. कहींकहीं तो उन्हें पति की लाश के साथ जबरन सती कर दिया जाता था, मतलब चिता में जिंदा झोंक दिया जाता था. बांझ को सामाजिक कामों से दूर रखा जाता था और उन को 'डायन' प्रचारित कर मार दिया जाता था.

आज भी भारत के कुछ राज्यों में बाल विवाह आम है, जहां दो बच्चों को उस उम्र में एकदूसरे से बांध दिया जाता है, जब उन्हें भाईबहन के अलावा किसी और रिश्ते की पहचान तक नहीं होती है.

यही वजह है कि जब कोई औरत अपने मन के मुताबिक जिंदगी गुजारना चाहती है तो लोग उस की इज्जत की धज्जियां उड़ाने में लग जाते हैं. फिर वे यह नहीं देखते कि खुद समाज में उन की क्या औकात है. जिन्हें अपने घर और समाज में कोई नहीं पूछता, वे ही सोशल मीडिया पर तीसमार खां बनते हैं.

हमें तो फख होना चाहिए अर्जुन कपूर, निक जोनस के साथसाथ उन तमाम मर्दों पर, जो किसी औरत के अतीत को जान कर भी उन्हें अपनी गर्लफ्रैंड, जीवनसाथी बनाते हैं और मर्द व औरत के कद को बराबर कर देते हैं. ●

परदे की दुनिया

रिचा नहीं लेंगी रिस्क

कोरोना ने बड़ेबड़े लोगों के प्रोग्राम को चौपट कर दिया है. अब रिचा चड्ढा को ही ले लो. पिछले काफी समय से उन की और अली फजल की शादी होने की चर्चा आम है, पर वह दिन ही नहीं आ रहा है, जब रिचा दुलहन बन कर अपने पिया के घर जाएं.

इस सिलसिले में खुद रिचा चड्ढा ने बताया, 'यह सच है कि पिछले साल मैं ने कहा था कि वैक्सीन आ जाए, तब मैं शादी करूंगी, मगर अब समझने वाली बात यह है कि जिस तरह का माहौल है, उस में किसी तरह का फंक्शन नहीं कर पाएंगे. माना कि वैक्सीन आ गई है, मगर कोरोना से दूसरी लहर में जिस तरह से नुकसान हुआ है, वह भयानक था... हमारी शादी में हमारे घर वाले ही आएंगे, तो हम उन की जान को रिस्क में नहीं डाल सकते.'

रिचा चड्ढा ने बड़ा समझदारी वाला कदम उठाया है और कोरोना की तीसरी लहर अगर जानलेवा हुई तो शादी का मजा किरकिरा होने में देर नहीं लगेगी.

अक्षय दिखेंगे 'रक्षाबंधन' में

अक्षय कुमार फिल्में पूरी करने में ज्यादा देर नहीं लगाते हैं. उन की कई फिल्में जल्द ही आने वाली हैं और अब वे फिल्म 'रक्षाबंधन' में भी दिखाई देंगे. इस फिल्म को डायरैक्टर आनंद एल. राय बनाएंगे, जिस में कश्मीरी अदाकारा सादिया खतीब भी नजर आएंगी.

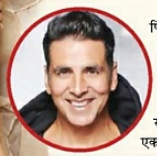

सादिया खतीब वही हीरोइन हैं, जो विधु विनोद चोपड़ा की फिल्म 'शिकारा' में भी थीं. अब सादिया ने सोशल मीडिया पर लिखा है, 'अगली फिल्म... यह सभी भाइयों और बहनों के लिए होगी. इस बंधन से खास कोई बंधन नहीं होता है. इस बंधन की तरह ही एक खास कहानी के लिए तैयार रहें...'

इस फिल्म में अक्षय कुमार की बहनों के किरदार में सहजमीन कौर, दीपिका खन्ना और स्मृति श्रीकांत नजर आएंगी. एक खास रोल में भूमि पेडनेकर भी होंगी.

फिर आएगा 'कृष'

रितिक रोशन की पिछली फिल्म 'वार' ने कामयाबी की नई इबारत लिखी थी, जिस में टाइगर श्रौफ ने विलेन बन कर लोगों को चौंका दिया था. अब लगता है कि रितिक रोशन फिल्म 'कृष 4' के साथ सिनेमाघरों में दोबारा दिखाई देंगे.

फिल्म 'कृष 4' के बारे में एक वीडियो सोशल मीडिया पर जारी करते हुए रितिक रोशन ने कहा, 'अतीत में जो होना था, हो चुका है. देखते हैं, फ्यूचर क्या ले कर आता है.'

इस कमैंट के बाद यह अंदाजा लगाया जा रहा है कि अगर फिल्म 'कृष 4' बनती है, तो वह दर्शकों को फ्यूचर यानी भविष्य की सैर करा सकती है, जो अपनेआप में अलग अनुभव होगा. ●

ZEE LABORATORIES

करोड़ो लोगो का आज़माया

झुर्रियां | काले घेरे | छाईया

MYFAIR

रूप संवारे, त्वचा निखारे

- क्रीम
- साबुन
- फेस वाश
- सन स्क्रीन

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

Online Shopping:
www.myfair.in

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए

MultipreX™

कैप्सूल, सिरप,
ओरल ड्राप्स, पाउडर

Multivitamin, Multiminerals
& Antioxidants

Advanced Formula For
Strong Immunity

रोजाना सेवन करे
9896134500
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध

प्रतिरक्षा में सुधार, विटामिन और मिनरल की कमी को पूरा कर रोगों से बचाए

Licenced to Post Without Pre Payment (REGISTERED) RNI 55680/93/DL/(C)-14/1079/2021-23/U(C) 163/2021-23 Saras Salil (Hindi) July-I
P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 01 to 07, Published on 15/6/2021 Pgs.32

PARLE

Happy Happy™

Choco-Chip Cookies

BISCUITS